18-1-98

सकाश देने की सेवा करने के लिए लगाव मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो

आज का दिन विशेष स्नेह का दिन है। अमृतवेले से लेकर चारों ओर के बच्चे अपने दिल के स्नेह को बापदादा के अर्थ अर्पित कर रहे थे। सर्व बच्चों के स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पड़ती जा रही थी। आज के दिन एक तरफ स्नेह के मोतियों की मालायें, दूसरे तरफ मीठे-मीठे उल्हनों की मालायें भी थी। लेकिन इस वर्ष उल्हनों में अन्तर देखा। पहले उल्हनें होते थे हमें भी साथ ले जाते, हमने साकार पालना नहीं ली.....। इस वर्ष मैजारिटी का उल्हना यह रहा कि अब बाप समान बन आपके पास पहुँच जाएं। समान बनने का उमंग-उत्साह मैजारिटी में अच्छा रहा। समान बनने की इच्छा बहुत तीव्र है, बन जायें और आ जायें, यह संकल्प रूहरिहान में बहुत बच्चों का रहा। बापदादा भी यही बच्चों को कहते हैं - समान भव, सम्पन्न भव, सम्पूर्ण भव। इसका साधन सदा के लिए बहुत सहज है, सबसे सहज साधन है – सदा स्नेह के सागर में समा जाओ। जैसे आज का दिन स्नेह में समाये हुए थे और कुछ याद था? सिवाए बापदादा के और कुछ याद रहा? उठते, बैठते स्नेह में समाये रहे। चलते-फिरते क्या याद रहा? ब्रह्मा बाप के चरित्र और चित्र, चित्र भी सामने रहा और चरित्र भी स्मृति में रहे। सभी ने स्नेह का अनुभव आज विशेष किया ना? मेहनत लगी? सहज हो गया ना! स्नेह ऐसी शक्ति है जो सब कुछ भुला देती है। न देह याद आती, न देह की दुनिया याद आती। स्नेह मेहनत से छुड़ा देता है। जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मेहनत नहीं होती है। स्नेह सदा सहज बापदादा का हाथ अपने ऊपर अनुभव कराता है। स्नेह छत्रछाया बन मायाजीत बना देता है। कितनी भी बड़ी समस्या रूपी पहाड़ हो, स्नेह पहाड़ को भी पानी जैसा हल्का बना देता है। तो स्नेह में रहना आता है ना? आज रहकर देखा ना! कुछ याद रहा? नहीं रहा ना! बाबा, बाबा और बाबा.... एक ही याद में लवलीन रहे। तो बापदादा कहते हैं और कोई पुरुषार्थ नहीं करो, स्नेह के सागर में समा जाओ। समाना आता है? कभी-कभी बच्चे स्नेह के सागर में समाते हैं लेकिन थोड़ा सा समय समाया, फिर बाहर निकल आते हैं। अभी-अभी कहेंगे बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और अभी-अभी बाहर निकलते और बातों में लग जाते

हैं। बस सिर्फ थोड़ी-सी जैसे कोई डुबकी लगाके निकल आता है ना, ऐसे स्नेह में समाया, डुबकी लगाई, निकल आये। समाये रहो, तो स्नेह की शक्ति सबसे सहज मुक्त कर देगी।

सभी बच्चों को ब्राह्मण जन्म के आदि का अनुभव, स्नेह ने ब्राह्मण बनाया। स्नेह ने परिवर्तन किया। अपने जन्म के आदि समय का अनुभव याद है ना? ज्ञान और योग तो मिला लेकिन स्नेह ने आकर्षित कर बाप का बनाया। अगर सदा स्नेह की शक्ति में रहो तो सदा के लिए मेहनत से मुक्त हो जायेंगे। वैसे भी मुक्ति वर्ष मना रहे हैं ना। तो मेहनत से भी मुक्त, उसका साधन है - स्नेह में समाये हुए रहो। स्नेह का अनुभव सभी को है ना? या नहीं है? अगर किसी से भी पूछेंगे कि बापदादा से सबसे ज्यादा स्नेह किसका है? तो सभी हाथ उठायेंगे मेरा है। (सबने हाथ हिलाया) साइलेन्स का हाथ उठाओ, आवाज वाला नहीं। तो बापदादा आज यही कहते हैं कि स्नेह की शक्ति सदा कार्य में लगाओ। सहज है ना! योग लगाते हो - देह भूल जाए, देह की दुनिया भूल जाए, मायाजीत बनें। जब स्नेह की छत्रछाया में रहेंगे, तो स्नेह की छत्रछाया के अन्दर माया नहीं आ सकती है। स्नेह के सागर के बाहर आते हो ना तो माया देख लेती है और अपना बना लेती है, निकलो ही नहीं। समाये रहो। स्नेही कोई भी कार्य करते हुए स्नेही को नहीं भूल सकता। स्नेह में खोया हुआ हर कार्य करता। तो जैसे आज के दिन खोये रहे, ऐसे सदा स्नेह में नहीं रह सकते हो क्या? स्नेह सहज ही समान बना देगा क्योंकि जिसके साथ स्नेह है उस जैसा बनना, यह मुश्किल नहीं होता है।

ब्रह्मा बाप से दिल का प्यार है, ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है। सदा एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं। जैसे पास्ट जीवन में एक-एक रत्न को देखते, हर एक रत्न के मूल्य को जानते विशेष कार्य में लगाते, ऐसे अभी भी एक-एक रत्न को विशेष रूप से विशेषता को कार्य में लगाने का सदा संकल्प देते रहते। और हर एक के विशेषता की वाह-वाह गाते रहते। वाह मेरा अमूल्य रत्न। कई बच्चे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाप वतन में क्या करते हैं? हम तो यहाँ सेवा करते रहते और ब्रह्मा बाप वहाँ वतन में क्या करते? लेकिन बाप कहते हैं जैसे साकार रूप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों

के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रूप में थोड़े बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं। जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन है। अब अव्यक्त रूप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बनाके साथ ले जाना, यही तो काम है ना और क्या है? तो इसी में ही बिजी रहते हैं।

तो आज के दिन बापदादा बच्चों को विशेष मेहनत से मुक्त भव का वरदान देते हैं। कोई भी कार्य करो तो डबल लाइट बनके कार्य करो, तो मेहनत मनोरंजन अनुभव करेंगे क्योंकि बापदादा को बच्चों की मेहनत करना, युद्ध करना, हार और जीत का खेल करना - यह अच्छा नहीं लगता। तो मुक्त वर्ष मना रहे हो ना! मना रहे हो या मेहनत में लगे हुए हो? आज के दिन विशेष यह वरदान याद रखना - मेहनत से मुक्त भव। यह संगमयुग मेहनत से मुक्त होने का युग है। मौज में रहने का है। अगर मेहनत है तो मौज नहीं हो सकती है। एक ही युग परम आत्मा और आत्माओं का मौज मनाने का युग है। आत्मा, परमात्मा के स्नेह का युग है। मिलन का युग है। तो दृढ़ संकल्प करो कि आज से मेहनत से मुक्त हो जायेंगे। होंगे ना? फिर ऐसे नहीं यहाँ तो हाथ उठाओ और वहाँ जाकर कहो क्या करें, कैसे करें? क्योंकि बापदादा के पास हर एक बच्चे के दृढ़ संकल्प करने का पूरा फाइल है। बापदादा कभी बच्चों का फाइल देखते हैं। बार-बार दृढ़ संकल्प किया है ना। जब से जन्म लिया और अब तक कितने बार संकल्प किया है, यह करेंगे, यह करेंगे... लेकिन उसको पूरा नहीं किया है। रूहरिहान बहुत अच्छी करते हैं, बापदादा को भी खुश कर देते हैं। जैसे जिज्ञासुओं को प्रभावित कर देते हो ना, तो बापदादा को भी प्रभावित तो कर देते हैं लेकिन दृढ़ संकल्प का प्रभाव थोड़ा समय रहता है, सदा नहीं रहता। तो बापदादा का फाइल तो बढ़ता जाता है। जब भी कोई फंक्शन होता है तो

बापदादा की फाइल में एक प्रतिज्ञा पत्र तो जमा हो ही जाता है, इसलिए बापदादा लिखाते नहीं हैं।

आज भी सभी संकल्प तो कर रहे हैं, अभी कब तक चलता है, फाइल में कागज कब तक रहता है, बाप भी देखते रहते हैं। बच्चों का बाप समान बनना और फाइल खत्म होके फाइनल हो जायेंगे। अभी तो ढेर के ढेर फाइल हैं। तो सिर्फ स्नेह में डूबे रहो, स्नेह के सागर से बाहर नहीं निकलो। ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है ना? तो स्नेही को फालो करना मुश्किल नहीं होता है। स्नेह के लिए कहते भी हो कि जहाँ स्नेह है, वहाँ जान भी कुर्बान हो जाती है। बापदादा तो जान को कुर्बान करने के लिए नहीं कहते, पुराना जहान कुर्बान कर दो। इसकी फाइनल डेट फिक्स करो। और फंक्शन की डेट तो फिक्स करते हो, 20 तारीख है, 24 तारीख है। इसकी डेट कब फिक्स करेंगे? (इसकी डेट बापदादा फिक्स करें) बापदादा कब शब्द कहते ही नहीं हैं, अब कहते हैं। बापदादा कब पर छोड़ता है क्या? अब कहता है। जो करना है वो अब करो। लेकिन बापदादा तो समर्थ है ना, तो समर्थ के हिसाब से तो अब कहेंगे। बच्चे कब, कब की आदत में हिरे हुए हैं। इसीलिए बापदादा बच्चों को कहते हैं कि यह डेट कब फिक्स करेंगे? आप भी कब, कब कहते हैं तो बाप भी कब कहते हैं।

अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि

मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज़ नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो। साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा

पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं।

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं – उड़ आयें, उड़ आयें... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं, कुछ बच्चे मोटे-मोटे लगाव से मुक्त हैं भी लेकिन सूक्ष्म लगाव बहुत सूक्ष्म हैं, जो स्वयं को भी चेक नहीं होते हैं। (मालूम नहीं पड़ते है)। चेक करो, अच्छी तरह से चेक करो। सम्पूर्णता के दर्पण से लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। प्यार है ना, तो प्यार में क्या किया जाता है? गिफ्ट देते हैं ना? तो यह गिफ्ट दो। छोड़ो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ। बापदादा खुश भी होते हैं कि बच्चों में उमंग-उत्साह उठता है, बहुत अच्छे-अच्छे स्व-उन्नति के संकल्प भी करते हैं। अभी उन संकल्पों को करके दिखाओ। अच्छा।

आज विशेष टीचर्स का संगठन इक्ट्ठा हुआ है। सेवा का रिटर्न यह उत्सव रखा जाता है। बापदादा खुश होते हैं कि बच्चों को सेवा का फल मिल रहा है वा मना रहे हैं, खा रहे हैं। सेवा में नम्बरवार सफल रहे हैं और रहते रहेंगे। बापदादा बच्चों के 40 साल की सेवा देख हर्षित होते हैं। हाथ उठाओ जो फंक्शन के लिए आये हैं। बड़ा ग्रुप है। 40 वर्ष भी सेवा में अमर भव के वरदानी रहे हैं इसकी मुबारक हो। आपके संगठन को देख सब बहुत खुश होंगे कि 40 वर्ष सेवा में अमर रहना - यह भी कमाल है। डायमण्ड जुबली हुई, सिल्वर जुबली हुई और यह कौन सी जुबली है? यह विशेष जुबली है। ज्यादा मेहनत इस ग्रुप ने ही की है। यह ग्रुप जैसे बॉर्डर में मिलेट्री जाती है ना और कमान्डर तो पीछे रहते हैं लेकिन बॉर्डर पर महारथी ही जाते हैं। तो सेवा के बॉर्डर में यह ग्रुप रहा है। बापदादा समान सेवाधारी ग्रुप को देख खुश होते हैं। बॉर्डर पर जाने वाले पक्के होते हैं। बहुत अनुभव होते हैं ना। सामना करने की शक्ति ज्यादा होती है। हर ग्रुप की विशेषता अपनी-अपनी है। तो डायमण्ड जुबली वाले स्थापना के निमित्त बनें, गोल्डन जुबली वाले सेवा में आदि रत्न निमित्त बनें। सिल्वर जुबली वाले राइट हैण्ड बन आगे बढ़े और बढ़ाया। और यह विशेष ग्रुप सेवा के सर्व प्रकारों के अनुभवी मूर्त हैं। ज्यादा अनुभव इस ग्रुप

को है। मेहनत भी की है लेकिन मोहब्बत में मेहनत की है। इसलिए बापदादा इस ग्रुप को विशेष सेवाधारी, सफलतामूर्त ग्रुप कहते हैं। जो नये-नये आते हैं उनकी पालना के निमित्त आधारमूर्त यह ग्रुप है। इस ग्रुप को एक बात कहें ? सुनने के लिए तैयार हो? आर्डर करेंगे। आर्डर करें? एवररेडी ग्रुप है ना?

बापदादा को विशेष सेवा में सफलता स्वरूप आत्माओं को देख यह संकल्प आता है कि सेन्टर तो अच्छे जमा दिये हैं। जमा दिये हैं ना या हिलने वाले हैं? अभी इस ग्रुप में से बेहद की सेवा के लिए कोई रत्न निकलने चाहिए। एवररेडी हैं या सेन्टर छोड़ना मुश्किल है? मुश्किल है या सहज है? अभी हाथ उठाओ। आप निकलेंगे तो सेन्टर हिलेंगे क्या? यह भी पक्का हो ना। आप कहो हम तो तैयार हैं सेन्टर हिले या नहीं, हमारा क्या जाता। ऐसा नहीं। बापदादा फिर भी 6 मास का टाइम देते हैं, अपने सेन्टर्स पर ऐसा राइट हैण्ड बनाओ जो आप चक्रवर्ती बन सको; क्योंकि बापदादा देखते हैं - चक्रवर्ती बनकर सेवा करने वालों से एक ही जगह पर बैठकर सेवा करने वालों का नम्बर थोड़ा पीछे हो जाता है। वह चक्रवती नम्बरवन राजा बन सकते हैं। और यह ग्रुप ऐसा है जो नम्बर आगे ले सकते हैं। तो नम्बर लेंगे? फिर दादी आर्डर करेगी, एवररेडी। (दादी से) आर्डर करेंगी ना? आपको हैण्डस चाहिए ना? कभी-कभी दादी रूहरिहान करती है - मददगार चाहिए। तो कौन यह फरमाइस पूरी करेंगे? आप लोग ही कर सकते हैं। बापदादा उम्मींदवार आत्मायें समझते हैं। इसलिए अपने-अपने स्थान ऐसे पक्के करो, मजबूत बनाओ जो आप जैसे ही चलें, अन्तर नहीं पड़े। ब्रह्मा बाप ने देखा क्या कि पीछे क्या होगा? नहीं देखा ना! अच्छा ही है और अच्छा ही होना है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, कोई लगाव नहीं। मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना कोई कर नहीं सकेगा – यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। तो सुना बापदादा की बात? ध्यान से सुनी। अच्छा - अभी 6 मास में सभी ऐसे सेन्टर पक्का करना, फिर आर्डर होगा। पसन्द है ना? विश्व महाराजन बनना है कि स्टेट का राजा बनना है? कौन सा राजा बनना है? एक ही सेन्टर सम्भालना तो स्टेट का राजा बनेंगे। चक्रवर्ती बनेंगे तो विश्व के राजा बनेंगे। जैसे आप अनुभवी बने हो वैसे औरों को अनुभवी बनाओ। मुश्किल काम तो नहीं है? मुश्किल हो तो ना कर दें। अगर मुश्किल लगता हो तो बापदादा कहेंगे जहाँ हैं वहाँ ही रहो।

यह भी छुट्टी है, जिसकी जो इच्छा हो वह करे, लेकिन बापदादा इस ग्रुप को आगे बढ़ने के उम्मींदवार समझते हैं। ठीक है? पसन्द है?

मनाने के पहले फिक्र तो नहीं हो गया? बेफिक्र बादशाह हैं। जब ब्रह्मा बाप ने कुछ नहीं सोचा, तो फालो फादर। बच्चों ने सोचा क्या होगा, कैसे होगा, सेन्टर चलेंगे नहीं चलेंगे, मुरली कहाँ से आयेगी.... कितने क्वेश्चन सोचे, ब्रह्मा बाप ने सोचा? सेकण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। लेकिन और अच्छे ते अच्छा होना ही है, यह निश्चय रहा। और हो रहा है ना? बाकी बापदादा को हर ग्रुप की विशेषता प्यारी लगती है। अच्छा।

चारों ओर देश विदेश के स्नेह में समाये हुए स्नेही बच्चों को, सदा बाप के स्नेह के सागर में समाये हुए रहने वाले अति समीप आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप की विशेषताओं को स्वयं में धारण करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा मेहनत मुक्त हो, मौज में रहने वाली परमात्म प्यार में उड़ने वाली आत्माओं को, बाप समान बनने के संकल्प को साकार में लाने वाले ऐसे दिलाराम बाप के दिल में समाये हुए बच्चों को, विशेष आज के दिन ब्रह्मा बाप की पदम-पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो। बापदादा तो सदा बच्चों के दिल में रहता है, वतन में रहते भी बच्चों के दिल में रहते हैं, तो ऐसे दिल में समाने वाले बच्चों को बापदादा का स्नेह के मोतियों की थालियां भर-भर कर यादप्यार और नमस्ते।

(गुजरात की सेवा का टर्न है) अच्छा है। गुजरात वाले अनुभवी मूर्त हैं। समीप होने के कारण हर कार्य में एवररेडी हो जाते हैं। हर एक ज़ोन को यह सेवा का चांस भी अच्छा मिला है। सेवा करना अर्थात् सर्व की दुआयें लेना। तो कितनी दुआयें ली हैं? बहुत ली हैं ना? तो गुजरात दुआओं की झोली भर रहे हैं। अच्छा। सभी गुजरात के सेवाधारी हाथ उठाओ। सिर्फ सेवा नहीं कर रहे हो, दुआयें जमा कर रहे हो। अच्छा।

जो भाई-बहिनें कैबिन में बैठे हुए सेवा कर रहे हैं
उन सबके प्रति बापदादा बोले:-

यह भी मेहनत बहुत करते हैं। यह डिपार्टमेंट (साउण्ड डिपार्टमेंट) भी मेहनत अच्छी करता है। जो भी सभी कैबिन में बैठे हैं सभी मेहनत अच्छी करते हो, सभी को सुख देते हो। तो सुख देने की दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ

में यह दुआयें एड हो जाती हैं। निर्विघ्न सेवा, यह बहुत पदमगुणा फल देती है। जितनी निर्विघ्न सेवा होती है उतना ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती जाती हैं। सबको सुख देना, किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से – कोई भी सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं। मेहनत से इतनी नहीं बढ़ती जितनी यह ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो। सुख दो और सुख लो। ऐसे है ना। बहुत अच्छा।

मधुबन निवासियों को दुआयें बहुत मिलती हैं। चाहे सफाई करने वाला भी हो, झाड़ू लगाने वाला हो लेकिन सफाई भी अच्छी देखकर सबकी दुआयें मिलती हैं। सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें लो, दुआयें दो। इसमें कोई मेहनत नहीं है। बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे। किसको मर्यादापूर्वक दु:ख नहीं देना है। ऐसे भी नहीं है कि मर्यादा तोड़ करके इसको सुख दो, नहीं। वह सुख के खाते में जमा नहीं होता है, वह ऑटोमेटिक मशीनरी दु:ख के खाते में जमा हो जाती है। इसलिए दिल से सुख दो, मर्यादापूर्वक दिल से। दिखावा-मात्र नहीं, दिल से। सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, संबंध-सम्पर्क द्वारा सुख दे सकते हैं। अच्छा।

(यह इस सीजन का सबसे बड़ा ग्रुप है।)

सभी आराम से रहे हैं। टीचर्स को तो आराम मिलता ही है। टीचर्स तो स्पेशल हैं ना। (डबल फारेनर्स भी 150 के लगभग आये हैं) बाप विश्व कल्याणकारी है तो हर ग्रुप में देश-विदेश होना ही चाहिए। विदेश वालों को यह सीजन का पसन्द है? इतनी बड़ी सभा पसन्द है? सभी विदेशियों ने बहुत अच्छे अनुभव के पत्र लिखे हैं। बापदादा के पास पहुंचे हैं। कईयों ने अपना उमंग-उत्साह बहुत अच्छा लिखा है और कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ भी लिखा है लेकिन मैजारिटी रिजल्ट अच्छी है। अभी पहले जैसे जल्दी-जल्दी हिलने वाले नहीं हैं, अचल हो गये हैं। इसलिए डबल विदेशियों को आगे बढ़ने की मुबारक हो। (160 स्थानों पर डायरेक्ट सुन रहे हैं) अच्छा है ब्रह्मा बाप ने पहले से ही कहा है कि एक समय आयेगा जो सारे वर्ल्ड में बाप का सन्देश जायेगा। अभी सुनते हैं फिर देखेंगे भी। आप सबका साक्षात्कार करेंगे। जगह-जगह पर आपको जाना नहीं पड़ेगा। एक जगह से ही बापदादा सहित आप सभी बच्चों का साक्षात्कार हो जायेगा। अच्छा।

31-1-98

पास विद् आनर बनने के लिए हर खज़ाने का एकाउण्ट चेक करके जमा करो

आज बापदादा हर एक छोटे-बड़े चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों का भाग्य देख हर्षित हो रहे हैं। ऐसा भाग्य सारे कल्प में सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के किसी का भी नहीं हो सकता। देवतायें भी ब्राह्मण जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं। हर एक अपने जीवन के आदि से देखो कि हमारा भाग्य जन्मते ही कितना श्रेष्ठ है। जीवन में जन्मते ही माँ बाप की पालना का भाग्य मिलता है। उसके बाद पढ़ाई का भाग्य मिलता है। उसके आगे गुरु द्वारा मत वा वरदान मिलता है। आप बच्चों को पालना, पढ़ाई और श्रीमत, वरदान देने वाला कौन? परम आत्मा द्वारा यह तीनों ही प्राप्त हैं। पालना देखो - परमात्म पालना कितने थोड़े कोटों में से कोई को मिलती है। परमात्म शिक्षक की पढ़ाई आपके सिवाए किसको भी नहीं मिलती है। सतगुरू द्वारा श्रीमत, वरदान आपको ही प्राप्त है। तो अपने भाग्य को अच्छी तरह से जानते हो? भाग्य को स्मृति में रखते हुए झूलते रहते हो, गीत गाते रहते हो - वाह मेरा भाग्य!

अमृतवेले से लेकर जब उठते हो तो परमात्म प्यार में लवलीन होके उठते हो। परमात्म प्यार उठाता है। दिनचर्या की आदि परमात्म प्यार होता है। प्यार नहीं होता तो उठ नहीं सकते। प्यार ही आपके समय की घण्टी है। प्यार की घण्टी आपको उठाती है। सारे दिन में परमात्म साथ हर कार्य कराता है। कितना बड़ा भाग्य है जो स्वयं बाप अपना परमधाम छोड़कर आपको शिक्षा देने के लिए आते हैं। ऐसे कभी सुना कि भगवान रोज़ अपने धाम को छोड़ पढ़ाने के लिए आते हैं! आत्मायें चाहे कितना भी दूर-दूर से आयें, परमधाम से दूर और कोई देश नहीं है। है कोई देश? अमेरिका, अफ्रीका दूर है? परमधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम है। ऊंचे ते ऊंचे धाम से ऊंचे ते ऊंचे भगवन, ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने आते हैं। ऐसा भाग्य अपना अनुभव करते हो? सतगुरू के रूप में हर कार्य के लिए श्रीमत भी देते और साथ भी देते हैं। सिर्फ मत नहीं देते हैं, साथ

भी देते हैं। आप क्या गीत गाते हो? मेरे साथ-साथ हो कि दूर हो? साथ है ना? अगर सुनते हो तो परमात्म टीचर से, अगर खाते भी हो तो बापदादा के साथ खाते हो। अकेले खाते हो तो आपकी गलती है। बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। आप बच्चों का भी वायदा है - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे..... सोना भी अकेले नहीं है। अकेले सोते हैं तो बुरे स्वप्न वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं। लेकिन बाप का इतना प्यार है जो सदा कहते हैं मेरे साथ सोओ, अकेले नहीं सोओ। तो उठते हो तो भी साथ, सोते हो तो भी साथ, खाते हो तो भी साथ, चलते हो तो भी साथ। अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो तो भी बिजनेस के आप ट्रस्टी हो लेकिन मालिक बाप है। दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बॉस बापदादा है, यह निमित्त मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं। कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रैन्ड बनकर बहलाते हैं। फ्रैन्ड भी बन जाता है। कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं। अगर कभी-कभी नटखट होके रूठ भी जाते हो, रूसते भी हो बहुत मीठा-मीठा। लेकिन बाप रूठे हुए को भी मनाने आते हैं। बच्चे कोई बात नहीं, आगे बढ़ो। जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं। तो हर दिनचर्या किसके साथ है? बापदादा के साथ। बापदादा को कभी-कभी बच्चों की बातों पर हंसी भी आती है। जब कहते हैं बाबा आप भूल जाते हो, एक तरफ तो कहते हैं कम्बाइन्ड है, कम्बाइन्ड कभी भूलता है क्या? जब साथ-साथ है तो साथ वाला भूल सकता है क्या? तो बाबा कहते हैं शाबास - बच्चों में इतनी ताकत है जो कम्बाइन्ड को भी अलग कर देते हैं! है कम्बाइन्ड और थोड़ा सा माया कम्बाइन्ड को भी अलग कर देती है।

बापदादा बच्चों का खेल देखते यही कहते हैं बच्चे, अपने भाग्य को सदा स्मृति में रखो। होता क्या है? सोचते हो हाँ मेरा भाग्य बहुत ऊंचा है लेकिन सोचना-स्वरूप बनते हो, स्मृति-स्वरूप नहीं बनते हो। सोचते बहुत अच्छा हो मैं तो यह हूँ, मैं तो यह हूँ, मैं तो यह हूँ.... सुनाते भी बहुत अच्छा हो। लेकिन जो सोचते हो, जो कहते हो उसका स्वरूप बन जाओ। स्वरूप बनने में कमी पड़ जाती है। हर बात का स्वरूप बन जाओ। जो सोचो वह स्वरूप भी अनुभव करो।

सबसे बड़े ते बड़ा है अनुभवी मूर्त बनना। अनादि काल में जब परमधाम में हैं तो सोचना स्वरूप नहीं हैं, स्मृति स्वरूप हैं। मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ - यह भी सोचने का नहीं है, स्वरूप ही है। आदिकाल में भी इस समय के पुरुषार्थ का प्रालब्ध स्वरूप है। सोचना नहीं पड़ता - मैं देवता हूँ, मैं देवता हूँ... स्वरूप है। तो जब अनादिकाल, आदिकाल में स्वरूप है तो अब भी अन्त में स्वरूप बनो। स्वरूप बनने से अपने गुण, शक्तियां स्वत: ही इमर्ज होते हैं। जैसे कोई भी आक्यूपेशन वाले जब अपने सीट पर सेट होते हैं तो वह आक्यूपेशन के गुण, कर्तव्य ऑटोमेटिक इमर्ज होते हैं। ऐसे आप सदा स्वरूप के सीट पर सेट रहो तो हर गुण, हर शक्ति, हर प्रकार का नशा स्वत: ही इमर्ज होगा। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। इसको कहा जाता है ब्राह्मणपन की नेचुरल नेचर, जिसमें और सब अनेक जन्मों की नेचर्स समाप्त हो जाती हैं। ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है ही गुण स्वरूप, सर्व शक्ति स्वरूप और जो भी पुरानी नेचर्स हैं वह ब्राह्मण जीवन की नेचर्स नहीं हैं। कहते ऐसे हो कि मेरी नेचर ऐसी है लेकिन कौन बोलता है मेरी नेचर? ब्राह्मण वा क्षत्रिय? वा पास्ट जन्म के स्मृति स्वरूप आत्मा बोलती है? ब्राह्मणों की नेचर - जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह ब्राह्मणों की नेचर। तो सोचो जिस समय कहते हो मेरी नेचर, मेरा स्वभाव ऐसा है, क्या ब्राह्मण जीवन में ऐसा शब्द - मेरी नेचर, मेरा स्वभाव... हो सकता है? अगर अब तक मिटा रहे हो और पास्ट की नेचर इमर्ज हो जाती है तो समझना चाहिए इस समय मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, क्षत्रिय हूँ, युद्ध कर रहा हूँ मिटाने की। तो क्या कभी ब्राह्मण, कभी क्षत्रिय बन जाते हो? कहलाते क्या हो? क्षत्रिय कुमार या ब्रह्माकुमार? कौन हो? क्षत्रिय कुमार हो क्या? ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियां। दूसरा नाम तो है ही नहीं। कोई को ऐसे बुलाते हो क्या कि हे क्षत्रिय कुमार आओ? ऐसा बोलते हो या अपने को कहते हो कि मैं ब्रह्माकुमार नहीं हूँ, मैं क्षत्रिय कुमार हूँ? तो ब्राह्मण अर्थात् जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह ब्राह्मणों की नेचर। यह शब्द अभी कभी नहीं बोलना, गलती से भी नहीं बोलना, न सोचना, क्या करूं मेरी नेचर है! यह बहानेबाजी है। यह कहना भी अपने को छुड़ाने का बहाना है। नया जन्म हुआ, नये जन्म में पुरानी नेचर, पुराना स्वभाव कहाँ से इमर्ज होता है? तो पूरे मरे नहीं हैं, थोड़ा जिंदा हैं, थोड़ा मरे हैं क्या? ब्राह्मण जीवन अर्थात्

जो ब्रह्मा बाप का हर कदम है वह ब्राह्मणों का कदम हो।

तो बापदादा भाग्य को भी देख रहे हैं और इतना श्रेष्ठ भाग्य, उस भाग्य के आगे यह बोल अच्छा नहीं होता। इस बारी मुक्ति वर्ष मना रहे हो ना – क्या क्लास कराते हो? मुक्ति वर्ष है। तो मुक्ति वर्ष है या 99 में आना है? 98 का वर्ष मुक्ति वर्ष है? जो समझते हैं यही वर्ष मुक्ति वर्ष है, वह हाथ हिलाओ। देखो हाथ हिलाना बहुत सहज है। होता क्या है? वायुमण्डल में बैठे हो ना, खुशी में झूम रहे हो, तो हाथ हिला देते हो, लेकिन दिल से हाथ हिलाओ, प्रतिज्ञा करो - कुछ भी चला जाए लेकिन प्रतिज्ञा मुक्ति वर्ष की न जाए। ऐसी पक्की प्रतिज्ञा है? देखो सम्भालके हाथ उठाओ। इस टी.वी. में आवे या न आवे, बापदादा के पास तो आपका चित्र निकल रहा है। तो ऐसे-ऐसे कमजोर बोल से भी मुक्ति। बोल ऐसे मधुर हो, बाप समान हो, सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना के बोल हों, इसको कहा जाता है युक्तियुक्त बोल। साधारण बोल भी चलते-फिरते होना नहीं चाहिए। कोई भी अचानक आ जाए तो ऐसा ही अनुभव करे कि यह बोल हैं या मोती हैं। शुभ भावना के बोल हीरे मोती समान हैं क्योंकि बापदादा ने कई बार यह इशारा दे दिया है कि समय प्रमाण अभी थोड़ा सा समय है सर्व खजाने जमा करने का। अगर इस समय में - समय का खजाना, संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, योग की शक्तियों का खजाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खजाना जमा नहीं किया तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा। सारे दिन में अपने इन एक-एक खजाने का एकाउण्ट चेक करो। जैसे स्थूल धन का एकाउण्ट चेक करते हो ना, इतना जमा है.. ऐसे हर खजाने का एकाउण्ट जमा करो। चेक करो। सर्व खजाने चाहिए। अगर पास विद आनर बनने चाहते हो तो हर खजाने का जमा खाता इतना ही भरपूर चाहिए जो 21 जन्म जमा हुए खाते से प्रालब्ध भोग सको। अभी समय के टू लेट की घण्टी नहीं बजी है, लेकिन बजने वाली है। दिन और डेट नहीं बतायेंगे। अचानक ही आउट होगा - टू लेट। फिर क्या करेंगे? उस समय जमा करेंगे? कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा। इसलिए बापदादा कई बार इशारा दे रहा है - जमा करो-जमा करो-जमा करो। क्योंकि आपका अभी भी टाइटिल है - सर्वशक्तिमान, शक्तिवान नहीं है, सर्वशक्तिमान। भविष्य में भी है सर्वगुण सम्पन्न, सिर्फ गुण सम्पन्न नहीं है। यह सब

खजाने जमा करना अर्थात् गुण और शक्तियां जमा हो रही हैं। एक एक खजाने का गुण और शक्ति से सम्बन्ध है। जैसे साधारण बोल नहीं तो मधुर भाषी, यह गुण है। ऐसे हर एक खजाने का कनेक्शन है।

बापदादा का बच्चों से प्यार है इसलिए फिर भी बार-बार इशारा दे रहे हैं क्योंकि आज की सभा में सब वैरायटी हैं। छोटे बच्चे भी हैं, टीचर्स भी हैं क्योंकि टीचर्स ही तो समर्पण हुई हैं। कुमारियां भी हैं, प्रवृत्ति वाले भी हैं। सब वैरायटी हैं। अच्छा है। सभी को चांस दिया है, यह बहुत अच्छा है। बच्चों की तो काफी समय से अर्जी थी। थी ना बच्चे? हमको मिलने का चांस कब मिलेगा? तो अच्छा हुआ - सर्व वैरायटी का गुलदस्ता बाप के सामने है। तो बच्चे हाथ उठाओ।

बच्चों से तो बड़ों का प्यार होता ही है। तो बाप से भी बच्चों का प्यार है और सभी बच्चे आज के ब्राह्मण हैं कल के क्या बनेंगे? बोलो बच्चे, कल क्या बनेंगे? (देवता बनेंगे) अच्छा, कौन सा देवता बनेंगे, पता है? बच्चों में से कोई देवी नहीं बनेगा, सब देवता बनेंगे? अच्छा है, बच्चों से रौनक होती है। तो आपकी रौनक को देख यह सभी खुश हो रहे हैं, वाह बच्चे वाह! लेकिन एक बात याद रखना - बच्चे, ब्राह्मण आत्मायें बच्चे, तो जो बड़ों का भाग्य है ना वह बच्चों का भी भाग्य है इसलिए बाप के साथ को कभी नहीं भूलना। चाहे कितना भी माया की अट्रैक्शन हो लेकिन बाप को नहीं भूलना। अच्छा सभी बच्चे रोज़ क्लास में जाते हैं या सण्डे-सण्डे जाते हैं? (रोज़ क्लास में जाने वालों ने हाथ उठाया) यह रोज़ जाने वाले हैं। बहुत हैं। अच्छा - टी.वी. देखते हो? सभी हँसते हैं। देखो, अगर अच्छी बातें देखते हो तो ठीक है लेकिन बुरी बातें भी देखते हो तो ठीक नहीं है। आज बुरी बातें न देखने का संकल्प कर लो कि हम कभी अगर टी.वी. देख भी रहे हैं और कोई बुरी बात आ जाती है तो बन्द कर देंगे। कर सकते हो? जो बुरी बातें टी.वी. में नहीं देखते हैं वह हाथ उठाओ। बहुत कम हैं। बच्चों का टीचर कौन है? तो सभी टीचर्स बच्चों का चार्ट देखना। सभी बच्चे मुक्ति वर्ष मनायेंगे? सच्ची दिल से हाथ उठाओ। अच्छा। देखो दादियों ने आपको चांस दिया है तो दादियों को शुक्रिया किया? किया या नहीं? चलो किया तो बहुत अच्छा लेकिन कल दादियों को प्यार से शुक्रिया करना और दादियों ने चांस दिया है ना तो यह प्रतिज्ञा करना कि हम भी मुक्ति वर्ष मनायेंगे।

लड़ना नहीं, जोश नहीं करना, क्रोध नहीं करना। बापदादा जानते हैं - कई छोटे-छोटे बच्चे बड़ों से भी प्रतिज्ञा में आगे जाते हैं। तो सभी आगे जाकर दिखाना। अच्छा है बच्चों की महफिल भी अच्छी है। अच्छा।

दूसरा ग्रुप है कुमारियों का - कुमारियां बहुत हैं। (करीब 2000 कुमारियां आई हैं) अच्छा है कुमारियों ने हिम्मत रखी है। कुमारियों के लिए तो बापदादा सदा ही लक्की कुमारी जीवन कहते हैं। देखो कुमार कहते हैं कि कुमारी अगर टीचर बनती हैं, सेन्टर पर जाती हैं तो कुमारी जाते ही दीदी-दीदी कहलाती हैं और कुमार कितने भी पुराने हैं तो दादा-दादा कोई नहीं कहता। कुमारियों के लिए तो ट्रेनिंग होती है निकालें, और कुमार सेन्टर सम्भालने के लिए आफर करते हैं तो दादियाँ सोचती हैं। तो कुमारियों का भाग्य बहुत सहज बना हुआ है। कुमारी ने ट्रेनिंग की, योग्य बनी तो दहेज में सेन्टर मिल जाता है। तो कुमारी जीवन कितनी श्रेष्ठ है, कितने गोल्डन चांस हैं, वह सोचो। अगर अभी से सेवाधारी नहीं बनेंगे तो भविष्य में भी क्या बनेंगे? सेवाधारी किसे मिलेंगे? जो सेवा करेंगे उन्हें मिलेंगे। इसलिए कुमारियों को अपना फैसला जल्दी से जल्दी करना चाहिए। लेकिन बापदादा कुमारियों के लिए एक बात सदा कहते हैं - सच्ची सेवाधारी कुमारी वह है जो शक्ति रूप कुमारी है। अगर निमित्त सेवाधारी शक्तिशाली नहीं है तो औरों को शक्तिशाली नहीं बना सकती। अगर कुमारी शक्तिशाली नहीं है, कोमल है, एक होती है कोमल और दूसरी होती है किसी के प्रभाव में आने वाली। ज्ञान का प्रभाव डालने वाली नहीं लेकिन कोई के प्रभाव में प्रभावित होने वाली। कुमारियों में दादियों को सदा इसी एक बात का डर लगता है। निमित्त बनी बाप के ऊपर प्रभावित करने के लिए लेकिन स्वयं प्रभावित हो जाए तो क्या रिजल्ट निकलेगी? तो बापदादा कहते हैं कुमारियां हाँ तो करती हैं, हाँ जायेंगे, निकलेंगे लेकिन अभी समय के हिसाब से ऐसी कुमारियां चाहिए जो जिस सेन्टर पर जाएं उस सेवाकेन्द्र को निर्विघ्न बनाकर रखें। निर्विघ्न का सर्टीफिकेट स्वयं को भी देवें और साथियों से भी लेवें। तो ऐसी कुमारियां हो या थोड़ी सी वस्तु पर, कोई व्यक्ति पर प्रभावित होने वाली हो? क्या हो? क्या सोचती हो? बापदादा को ऐसी कुमारियां चाहिए जो निर्विघ्न कुमारी, विघ्न-विनाशक कुमारी, कमजोर को शक्तिशाली बनाने वाली कुमारी हो, ऐसे नहीं बापदादा वा दादियां हैण्डस करके भेजें और हैण्डस के बजाए

हेडक बन जाएं। तो ऐसी कुमारियां नहीं चाहिए। तो क्या समझती हो? ऐसी कुमारियां तैयार हैं, हिम्मत है कि हम विघ्न-विनाशक बनकर रहेंगे? जो ऐसा बनेंगी वह हाथ उठाओ। दिल से उठा रही हो; संगठन में शर्म के मारे तो नहीं उठा रही हो? जो सेन्टर्स पर जाने के लिए तैयार हैं और ऐसा विघ्न-विनाशक बनेंगी, वही उठो बाकी बैठ जाओ। जो 18 वर्ष की आयु से ऊपर हैं और विघ्न-विनाशक होके सेन्टर पर जाने के लिए तैयार हैं, वह खड़े हो जाओ। यह सब विघ्न-विनाशक निमित्त सेवाधारी हैं? (हाँ जी) फोटो निकालो। अभी दादियों को यह कैसेट देना, फिर आप नोट करना - कौन-कौन हैं? मुबारक हो, मुबारक हो। कुमारियों को बापदादा भी मुबारक देते हैं लेकिन राइट हैण्ड बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं बनना। अच्छा।

तीसरा ग्रुप है - गीता पाठशाला वालों का– वह हाथ उठाओ। खड़े होकर हाथ हिलाओ। (करीब 4000 भाई-बहिन हैं) बहुत हैं। अच्छा - गीता पाठ-शाला के निमित्त बच्चों को भी बापदादा निमित्त सेवाधारी कहते हैं। अपनी प्रवृत्ति भी सम्भाल रहे हैं और अलौकिक सेवा के निमित्त भी बने हैं तो डबल काम कर रहे हैं। लेकिन गीता पाठशाला के निमित्त आत्माओं की विशेषता है सदा अपने को हर कार्य में ट्रस्टी समझकर चलना। क्योंकि बापदादा ने देखा कि गीता पाठशाला खोलने वाले भिन्न-भिन्न संकल्प से गीता पाठशाला खोलते हैं, कोई तो सच्चे दिल से सेवा प्रति गीता पाठशाला खोलते हैं वा चलाते हैं लेकिन कोई-कोई जब वृद्धि होती है तो कहाँ-कहाँ भावनाओं में भी मिक्स हो जाता है। तो बापदादा देखते हैं कि कोई-कोई गीता पाठशाला अपने परिवार की पालना अर्थ भी खोलते हैं, परिवार की पालना भी हो और निमित्त सेवा भी हो। तो गीता पाठशाला का अर्थ है ट्रस्टी बनके सेवा करना क्योंकि जो भी आत्मायें आती हैं वह बाप के स्नेह में आती हैं, इसलिए ट्रस्टी बनकर कारोबार चलाना बहुत आवश्यक है। एकदम नि:स्वार्थ सेवा की भावना वालों को कहेंगे सच्ची गीता पाठशाला। बाकी बापदादा मैजॉरिटी शुभ भावना से सेवा निमित्त चलाने वाली आत्माओं पर बहुत खुश हैं कि अपना समय सफल कर रहे हैं। डबल कार्य उसी शुद्ध भावना से सम्भाल रहे हैं। और कोई भावना मिक्स नहीं है, न नाम की, न लौकिक परिवार के पालना की। तो ऐसी शुद्ध भावना, सेवा की भावना वाली ट्रस्टी आत्माओं को बापदादा बहुत-बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। अच्छे हैं और

अच्छे ही रहेंगे। लेकिन चेक करना कोई भी और भावना मिक्स नहीं हो। सेवा की भावना के सिवाए और कोई भावना आने नहीं देना। बाकी सेवा करते हो अर्थात् अनेक आत्माओं का कल्याण करते हो। और देखा गया है, गीता पाठशाला वालों की विशेषता है कि प्रवृत्ति वालों को देख प्रवृत्ति वाले हिम्मत रखते हैं। सेन्टर पर फिर भी सोचते हैं कि पता नहीं हमको भी छोड़ना पड़ेगा लेकिन प्रवृत्ति में रहते सेवा के निमित्त बनने वाले बच्चों को देख और भी प्रवृत्ति वालों को हिम्मत, उमंग-उत्साह आता है। इसलिए बापदादा गीता पाठशाला वालों को भी बहुत-बहुत सेवा की मुबारक, यादप्यार दे रहे हैं। एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा।

चौथा ग्रुप - समर्पण वाली टीचर्स का है। अच्छा किया, हिम्मत रख अपने सेवा के निमित्त बनने को प्रत्यक्ष स्टेज पर लाया। और बाप के बनने की, हाथ में हाथ देने की सेरीमनी 5-6 साल पहले हो गई थी लेकिन अभी और हाथ में हाथ पक्का किया, जो छूट नहीं सके। इसलिए बापदादा समर्पण वाली टीचर्स को बधाई देते हैं कि सदा हाथ में हाथ, साथ में साथ पक्का करके विजय माला अपने गले में डालेंगी। अब जिस स्थान पर रहती हो उस स्थान को और स्वयं को निर्विघ्न बनाना। कोई विघ्न की रिपोर्ट नहीं आवे। स्व के पुरुषार्थ में भी विघ्न रूप नहीं बनना। कई बार बाहर से भले विघ्न नहीं भी हो लेकिन मन में तो आता है ना। तो न मन का विघ्न हो, न साथियों का विघ्न हो, न स्टूडेन्टस द्वारा कोई विघ्न हो। स्व निर्विघ्न, सेन्टर निर्विघ्न, साथी निर्विघ्न – यह तीन सर्टीफिकेट इस मुक्ति वर्ष में लेना है। मंजूर है? और विघ्न डालें तो क्या करेंगी? आप तो निर्विघ्न होंगी और कोई विघ्न डालने वाला हो, तो क्या करेंगी? विघ्न विनाशक बनेंगी? तो समर्पण समारोह माना सम्पूर्णता का समारोह। सिर्फ समर्पणता का समारोह याद नहीं करना, वह भी याद करना लेकिन समय प्रमाण अभी सम्पूर्णता का दिवस मनाना ही है, इतना दृढ़ निश्चय का कंगन बांधकर जाना। बापदादा सभी टीचर्स को कह रहे हैं, जो भी सभी टीचर्स हैं चाहे देश की, चाहे विदेश की वह हाथ उठाओ। अच्छा। आज विदेश भी बहुत है, वेलकम हो आने की विदेश के सेन्टर्स को।

अच्छा - बापदादा की टीचर्स के प्रति एक शुभ भावना है, सुनायें? सिर्फ सुनेंगी या करेंगी भी? सिर्फ सोचेंगी या स्वरूप बनेंगी? सुनेंगी, करेंगी.. अच्छा

- बहुत छोटी सी शुभ भावना है। बड़ी बात भी नहीं है, बहुत छोटी है। दादी ने सन्देश भेजा कि अभी सभी सेन्टर्स निर्विघ्न हो जाएं उसकी रेसपान्सिबुल टीचर्स हैं। अभी तक टीचर्स की कम्पलेन्स आती हैं। दादियों के पास वह फाइल है ना। आफिस वाली ईशू कहती है सेन्टर्स से इतने फालतू लेटर्स आते हैं जो किचड़े का डिब्बा भर जाता है। ऐसे है ना? यह पढ़ने में भी टाइम लगता, फिर फाड़ने में भी टाइम लगता, फिर बाक्स में डालने में भी टाइम लगता, तो यह मेहनत फालतू हो गई ना। इसलिए बापदादा की शुभ भावना है कि सभी टीचर्स बाप के राइट हैण्डस हैं, लेफ्ट हैण्ड नहीं हैं, राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्डस के स्थान से, सेन्टर्स से ऐसे समाचार आवें जो वेस्ट बाक्स ही भर जावे - तो ऐसा अच्छा है? बोलो हाँ या ना? जो समझते हैं इस वर्ष हम हर एक तीन सर्टीफिकेट लेंगे - स्व विघ्न-विनाशक, सेन्टर विघ्न-विनाशक और साथी विघ्न-विनाशक। यह तीन सर्टीफिकेट लेने के लिए जो तैयार हैं वह टीचर्स हाथ उठाओ। जो सेन्टर पर पाण्डव रहते हैं, वह भी हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) थैंक्यू।

अभी वेस्ट पेपर बाक्स खाली रहेंगे। पढ़ना नहीं पड़ेगा। यह (ईशू) कहती है लेटर्स खोल-खोलकर हाथ थक जाता है। तो इसीलिए चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे विदेश में सुन रहे हैं, चाहे देश में सुन रहे हैं, चाहे मुरली सुनेंगे। लेकिन बापदादा की सारे विश्व की निमित्त टीचर्स के प्रति यह शुभ भावना है कि यह वर्ष कोई कम्पलेन्ट नहीं आनी चाहिए। कम्पलेन्ट के फाइल खत्म हो जाएं। बापदादा के पास भी बहुत फाइल हैं। तो इस वर्ष कम्पलेन्ट के फाइल खत्म। सब फाइन बन जाएं। फाइन से भी रिफाइन। पसन्द है ना? कोई कैसा भी हो उनके साथ चलने की विधि सीखो। कोई क्या भी करता हो, बार-बार विघ्न रूप बन सामने आता हो लेकिन यह विघ्नों में समय लगाना, आखिर यह भी कब तक? इसका भी समाप्ति समारोह तो होना है ना? तो दूसरे को नहीं देखना। यह ऐसे करता है, मुझे क्या करना है? अगर वह पहाड़ है तो मुझे किनारा करना है, पहाड़ नहीं हटना है। यह बदले तो हम बदलें - यह है पहाड़ हटे तो मैं आगे बढ़ूं। न पहाड़ हटेगा न आप मंजिल पर पहुंच सकेंगे। इसलिए अगर उस आत्मा के प्रति शुभ भावना है, तो इशारा दिया और मन-बुद्धि से खाली। खुद अपने को उस विघ्न स्वरूप बनने वाले के सोच-विचार में नहीं डालो। जब नम्बरवार

हैं तो नम्बरवार में स्टेज भी नम्बरवार होनी ही है लेकिन हमको नम्बरवन बनना है। ऐसे विघ्न वा व्यर्थ संकल्प चलाने वाली आत्माओं के प्रति स्वयं परिवर्तन होकर उनके प्रति शुभ भावना रखते चलो। टाइम थोड़ा लगता है, मेहनत थोड़ी लगती है लेकिन आखिर जो स्व-परिवर्तन करता है, विजय की माला उसी के गले में पड़ती है। शुभ भावना से अगर उसको परिवर्तन कर सकते हो तो करो, नहीं तो इशारा दो, अपनी रेसपान्सिबिल्टी खत्म कर दो और स्व परिवर्तन कर आगे उड़ते चलो। यह विघ्न रूप भी सोने का लगाव का धागा है। यह भी उड़ने नहीं देगा। यह बहुत महीन और बहुत सत्यता के पर्दे का धागा है। यही सोचते हैं यह तो सच्ची बात है ना। यह तो होता है ना। यह तो होना नहीं चाहिए ना। लेकिन कब तक देखते, कब तक रुकते रहेंगे? अब तो स्वयं को महीन धागों से भी मुक्त करो। मुक्ति वर्ष मनाओ। इसलिए बच्चों की जो आशायें हैं, उमंग है, उत्साह है, इसके सभी फंक्शन मनाकर बापदादा पूरे कर रहे हैं। लेकिन इस वर्ष का अन्तिम फंक्शन मुक्ति वर्ष का फंक्शन हो। फंक्शन में दादियों को सौगात भी देते हो। तो बापदादा को इस मुक्त वर्ष के फंक्शन में स्वयं के सम्पूर्णता की गिफ्ट देना। अच्छा।

महाराष्ट्र के सेवाधारियों से - यह रसम अच्छी बनाई है। अच्छा है, सेवा से सभी को ब्राह्मण परिवार के समीप आने का चांस मिलता है। निर्विघ्न सेवा हुई तो हाथ उठाओ। महाराष्ट्र के सेवाधारियों ने बेहद की सेवा की तो बेहद की दुआयें ली। आपके खाते में बेहद की दुआयें जमा हो गई। सबने सेवा का लाभ उठाया ना। सभी को अच्छा लगा ना। बहुत अच्छा। महाराष्ट्र के मुख्य सेवाधारी उठो। बापदादा सभी महाराष्ट्र के निमित्त सेवाधारियों को निर्विघ्न सेवाधारी की मुबारक देते हैं। अच्छा। सिक्युरिटी वालों को रोज़ दादियों से गुडमार्निंग या गुडनाइट करनी चाहिए। उन्हों की सेवा ज्यादा है। अच्छा। सिक्युरिटी वालों ने निर्विघ्न अपना टर्न पूरा किया है, यह बहुत हिम्मत का काम है।

(डबल विदेशी कहते हैं एक मेला हम भी सम्भाल सकते हैं) कम से कम सभी विदेश का खाना तो खायेंगे। अच्छा है जो सेवा की आफर करते हैं उसको पहले ही इनएडवांस आफरीन है।

डबल विदेशी विशेष आत्मायें पहुंच गई हैं और पहुंचते जायेंगे। बापदादा विदेश की चारों ओर की सेवा देख, उमंग-उत्साह देख हर्षित होते हैं क्योंकि

जब विदेश सेवा आरम्भ हुई तो जो भी मुश्किल बातें लगती थी वह अभी इतनी सहज हो गई हैं जो सभी सेवा में उड़ते रहते हैं। पहले सोचते थे विदेश में बड़ा प्रोग्राम करें तो सुनने वालों से हाल भरना बहुत मुश्किल है। वी.आई.पी. की सेवा बहुत मुश्किल है। लेकिन अभी क्या कहते हैं? अभी तो यू.एन. तक भी पहुंच गये हैं। तो बहुत सहज हो गया है ना। बापदादा सदा कहते हैं कितने भी बड़े हों, उन्हों के पास पावर है, आपके पास परमात्म विल पावर है। परमात्मा ने पावर्स की विल की है, तो विल पावर है। तो परमात्म विल पावर के आगे पावर्स परिवर्तित होना कोई बड़ी बात नहीं है सिर्फ स्वयं में एक संकल्प हो - होना ही है। यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा, पता नहीं क्या होगा... यह परमात्म टचिंग उन्हों की बुद्धि में जाने से रुकावट बन जाती है। चाहे देश में, चाहे विदेश में – क्यों, कैसा, ऐसा तो नहीं, इस संकल्प से कभी भी कोई कार्य अर्थ सामने नहीं जाओ। क्यों, क्या, ऐसा, वैसा - यह पहले आपस में सोच के फाइनल करो, वह बात अलग है लेकिन जब सामने जाते हो तो सदा दृढ़ संकल्प से जाओ - होना ही है। आखिर तो सभी को झुकना ही है। तो विदेश भी सेवा में उड़ रहा है, भारत की सेवा और विदेश की सेवा दोनों उड़ती कला में हैं। अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा एड करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। ठीक है ना? विदेश में अनुभव है ना? अच्छा है। सेवाओं का समाचार बापदादा के पास पहुंचता है। विघ्न भी आते हैं, लेकिन आगे का पर्दा विघ्न का होता है, पर्दे के अन्दर कल्याण समाया हुआ दृश्य छिपा हुआ होता है। मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई दे।

बाकी सभी विदेश के सेन्टर्स के बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे कार्ड भी भेजते हैं, पत्र भी भेजते हैं, कोई आता है तो बहुत-बहुत यादप्यार भी भेजते हैं। बापदादा भी कार्ड को रिगार्ड देते हैं। दिल से भेजते हैं, दिखावे से नहीं भेजें। दिखावे से भेजना वह एकानामी होनी चाहिए और दिल से भेजते हैं तो उसका कोई मूल्य नहीं है। तो हर एक के साइन किये हुए बहुत कार्ड बापदादा के पास हर उत्सव के पहुंचते हैं। भारतवासियों के भी पहुंचते हैं। बापदादा सभी कार्डस और पत्रों का एक ही जवाब देते हैं - मुबारक हो, बधाईयां हो, सदा सफल रहो और औरों को भी सफलता स्वरूप बनाते उड़ो। चलो नहीं, उड़ो। अच्छा - जो

दूर बैठे सुन रहे हैं उन्हों को भी बापदादा एक-एक देश को नाम सहित, हर एक सेवाकेन्द्र की विशेषता सहित सम्मुख वालों से भी पहले यादप्यार दे रहे हैं। साधन अच्छा निकाला है और भी निकलते रहेंगे। आगे चलकर देखेंगे भी। यह तो सेन्टर्स सुन रहे हैं, वह भी दिन आयेगा जो चारों ओर बाप का सन्देश सभी तरफ पहुंचेगा। साइन्स भी सब आपके लिए ही इन्वेन्शन कर रही है। इसीलिए बापदादा साइन्स के साधन निकालने वाले बच्चों को भी स्नेह से मुबारक देते हैं। दिमाग तो चलाते हैं। साइन्स वाले भी आयेंगे, आपकी अंचली लेंगे। फिर आपकी सेवा में भविष्य में आयेंगे। अच्छा।

बापदादा सभी सेवाकेन्द्रों में सेवा के लिए डायरेक्शन दे रहे हैं कि सितम्बर और अक्टूबर यह दो मास बड़े-बड़े प्रोग्राम करो। जितना भी आवाज फैला सकते हो, सभी कोनों में आवाज फैलाओ। कोई भी कोना रह नहीं जाये। बड़े-बड़े प्रोग्रामस में भी लक्ष्य रखो, ऐसी कोई विधि बनाओ जो सिर्फ सुनके नहीं जायें लेकिन बनने की शुभ इच्छा लेकर जायें। कुछ अनुभव करके जायें। वर्तमान समय वायुमण्डल भी चारों ओर सहयोगी है इसलिए सफलता सहज प्राप्त होने का समय है। खूब आवाज फैलाओ और साथ-साथ जो छोटे-छोटे स्थान हैं, जिसमें बड़े फंक्शन करने की हिम्मत नहीं है, वहाँ छोटे-छोटे ग्रुप्स का चाहे 10-12 हो लेकिन योग शिविर के प्रोग्राम रखो। अगर स्थान नहीं है तो कोई साथ में स्थान ले सकते हो तो लो, अगर वह भी नहीं है तो एक दिन का भी शिविर रखो। अगर छुट्टी का एक दिन भी रखते हो और उन्हों को अनुभव अच्छा होता है तो वह आपेही दूसरे सण्डे को भी आफर करेंगे। देखा जाता है योग शिविर स्टूडेन्ट बनाता है। कान्फ्रेन्स और स्नेह मिलन, छोटे-छोटे स्नेह मिलन भी समीप लाते हैं लेकिन बड़े प्रोग्राम प्रभावित करते हैं। नाम बाला होता है। एडवरटाइज अच्छी हो जाती है। तो दोनों ही जरूरी हैं लेकिन छोटे स्थान और छोटे सेन्टर्स या तो छोटे-छोटे स्नेह मिलन करो वा योग शिविर का छोटा सा प्रोग्राम रखो।

उसके साथ बापदादा हर ब्राह्मण की स्व-उन्नति के प्रति जहाँ-जहाँ जब सहज मास निकल सकता है, मौसम के अनुसार, प्रबन्ध के अनुसार एक मास स्व-उन्नति, सर्व खजानों को जमा करने के अभ्यास की भट्ठी हो। एक मास स्व-उन्नति के लिए भी निकालना जरूरी है। उसमें कुछ नवीनता निकालो। जैसे अभी

भट्ठियां होती रही हैं, वह भी अच्छी हैं लेकिन कुछ उसमें नवीनता एड करो। कुछ समय अन्तर्मुखता का मौन, मन का मौन भी हो। मुख का मौन तो दुनिया भी रखती है लेकिन यहाँ व्यर्थ संकल्प से मन का मौन होना चाहिए। जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करते हो तो व्यर्थ की ट्रैफिक को कन्ट्रोल करते हो वैसे बीच-बीच में एक दिन मन के व्यर्थ का ट्रैफिक कन्ट्रोल करो। ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो। अगर किसको छुट्टी नहीं भी मिलती हो, एक दिन सप्ताह में तो छुट्टी मिलती है, उसी प्रमाण अपने-अपने स्थान के प्रोग्राम फिक्स करो। लेकिन एक मास विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम अवश्य रखो। एकनामी और एकानामी। बाकी बापदादा अपने नियम प्रमाण नवम्बर से आरम्भ करेंगे। देखा गया कि रथ के दृढ़ संकल्प, हिम्मत और सम्भाल से यह वर्ष निर्विघ्न समाप्त हुआ है और हो जायेगा। तो अभी भी बच्ची का उमंग है, जब रथ तैयार है तो रथवान को आने में क्या है। हाँ बीच-बीच में रेस्ट का देखना। रथ को रेस्ट भी देना, ऐसा नहीं कि काम में ज्यादा लगा दो। अच्छा है रेस्ट के टाइम रेस्ट, सेवा के समय सेवा।

अमृतवेले जो मुख्य प्लैनिंग बुद्धि हैं उन्हों को बापदादा कार्य के निमित्त बनाता है, उन्हों को नई विधियां सेवा की टच होंगी, सिर्फ अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो। बुद्धिवानों की बुद्धि आपकी बुद्धि को टच करेंगे। यह प्लैनिंग बुद्धि वालों को वरदान मिलना ही है। निमित्त बनो। ठीक है ना पाण्डव। देखो सब प्लैनिंग बुद्धि वाले बैठे हैं, टीचर्स भी, विदेशी भी, भारत वाले भी तो क्या हो जायेगा? बहुत-बहुत अच्छा होगा। बाकी गर्मी और बरसात में छोटे-छोटे स्नेह मिलन कर सकते हो। शान्तिवन में भी, बापदादा ने पहले भी कहा था कि कईयों के मित्र सम्बन्धी, समीप वाले योग शिविर करने चाहते हैं तो उन्हों को थोड़ा सा हालों में कम संख्या करके और जो हर हाल में कमरे छोटे-छोटे बनाये हैं, जहाँ अभी टीचर्स रहती हैं वहाँ अगर कोई ऐसे वी.आई.पी. हैं तो उन कमरों में भी अलग में रख सकते हैं और बहुत बड़ा हाल है तो डबल कनात की पार्टीशन भी कर सकते हैं क्योंकि अभी सीजन तक तो बना नहीं सकते हैं लेकिन पीछे कुछ प्रबन्ध कर भी सकते हैं। और जो यहाँ अलग में एक बहनों का, एक भाईयों का भवन बनाया है, वहाँ भी अगर ब्राह्मण आत्मायें

अपने को सेट कर सकें, तो विशेष वी.आई.पी. को इस वर्ष में सेट कर सकते हो। ऐसा कोई वी.आई.पी. स्पेशल है तो। बाकी ब्राह्मण तो अपने को एडजेस्ट भी कर सकते हैं और योग शिविर के ग्रुप तो साथी टीचर्स ही ले आती हैं। बाकी दूसरी सीजन में तो वी.आई.पी. के तैयार हो ही जायेंगे। जो ज़ोन अपने ज़ोन का रिफ्रेशर कोर्स शान्तिवन में करना चाहते हैं, उसको शान्तिवन का चांस मिल सकता है। यहाँ-वहाँ स्थान ढूंढने के बजाए चाहे संख्या कम भी हो फिर भी जो सुख-साधन यहाँ है वह बाहर नहीं मिल सकता। तो ज़ोन वालों को आफर है। अपना ग्रुप ले आवे और रिफ्रेश कर जाये क्योंकि यहाँ फिर भी दादियां तो मिलेंगी। वहाँ तो दादियाँ जावें नहीं जावें, यहाँ यह चांस मिल सकता है। और जो ग्रुप आफर करे, जैसे यूथ हैं या प्रवृत्ति वाले हैं, अगर 4-6 ज़ोन मिलके ग्रुप बना सकें तो बना सकते हैं क्योंकि ऊपर तो वर्ग की सेवा होगी लेकिन नीचे छोटे-छोटे ग्रुप के भी ऐसे प्रोग्राम कर सकते हो। शान्तिवन को बिजी रखो। जो चांस लेना चाहे वह ले सकते हैं। मित्र-सम्बन्धियों की सेवा दिल से कर सकते हैं। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म पालना, पढ़ाई और श्रीमत के भाग्य के अधिकारी विशेष आत्माओं को, सदा सोचना और स्वरूप बनना दोनों समान करने वाले बाप समान आत्माओं को, सदा परमात्म विल पावर द्वारा स्वयं में और सेवा में सहज सफलता प्राप्त करने वाले निमित्त सेवाधारी बच्चों को, सदा बाप को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करने वाले, सदा साथ निभाने वाले साथी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा - सभी ठीक रहे हुए हैं, कोई तकलीफ हुई है? तकलीफ नहीं हुई ना? खुश हैं? बच्चे खुश हैं? बहुत खुश हैं, नाच रहे हैं बच्चे। कुमारियां खुश हैं? कुमारियां भी मौज में हैं। टीचर्स सबसे खुश हैं और पाण्डव खुशी में उड़ रहे हैं, बहुत अच्छा।

दादियों से:- बच्चे कहते हैं जी बाबा, तो बाप भी कहते हैं जी बच्चे। बाप और बच्चों का यही तो स्नेह का धागा है।

जगदीश भाई से - तबियत अच्छी है। अभी बहुत काम करना है। अभी पाण्डवों को मिलकर कोई नये प्लैन बनाने हैं। नवीनता के निमित्त बनना है। आदि से कोई न कोई कार्य के लिए निमित्त बनते आये हैं, सभी की विशेषता

है इसलिए अभी भी और टचिंग होती रहेगी। अच्छा है दिल्ली में भी धूम मचानी है। दिल्ली का सेवाधारी पाण्डव पहला निमित्त बने हुए हो। दिल्ली से नाम बाला होगा ना। सभी के सकाश से दिल्ली से नाम बाला तो करना ही है। कोई ऐसे प्लैन बनाओ, बाम्बे, दिल्ली नई इन्वेन्शन्स निकालो। मधुबन में तो सेवायें ड्रामानुसार बढ़ती ही जाती हैं और बढ़ती जानी हैं। यह विंग्स का सेवा का प्लैन भी अच्छा चल रहा है और चलता रहेगा। जो निमित्त बनता है उसको सेवा की सफलता का शेयर मिल जाता है। इसलिए निमित्त बनते जाओ और शेयर्स जमा करते जाओ। अच्छा है जो भी चारों ओर निमित्त बनते हैं उन्हों को एक्स्ट्रा लिफ्ट मिल जाती है। स्व का पुरुषार्थ तो है लेकिन यह गिफ्ट में लिफ्ट मिलती है। विदेश वालों को भी सेवा की गिफ्ट मिलती रहती है। भारत वाले विदेश को भी सकाश दे रहे हैं। तो अच्छा है, अच्छे-अच्छे पाण्डव भी हैं, अच्छी-अच्छी शक्तियां भी हैं। सेना बहुत अच्छी सुन्दर है। बापदादा तो हर एक की विशेषता की दिल में महिमा करते रहते हैं। ऐसे है ना?

24-2-98

''बाप से, सेवा से और परिवार से मुहब्बत रखो तो मेहनत से छूट जायेंगे''

आज चारों ओर के बच्चे अपने बाप की जयन्ती मनाने के लिए आये हैं। चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे आकारी रूप में बाप के सामने हैं। बाप सभी बच्चों को देख रहे हैं - एक तरफ मिलन मनाने की खुशी है दूसरे तरफ सेवा का उमंग-उत्साह है कि जल्दी से जल्दी बापदादा को प्रत्यक्ष करें। बापदादा चारों ओर के बच्चों को देखते हुए अरब-खरब गुणा मुबारक दे रहे हैं। जैसे बच्चे बाप की जयन्ती मनाने के लिए कोने-कोने से, दूर-दूर से आये हैं, बापदादा भी बच्चों का जन्म दिन मनाने आये हैं। सबसे दूर देश वाले कौन? बाप या आप? आप कहेंगे - हम बहुत दूर से आये हैं लेकिन बाप कहते हैं मैं आपसे भी दूरदेश से आया हूँ। लेकिन आपको समय लगता है, बाप को समय नहीं लगता है। आप सबको प्लैन या ट्रेन लेनी पड़ती है, बाप को सिर्फ रथ लेना पड़ता है। तो ऐसे नहीं कि सिर्फ आप बाप का मनाने आये हैं लेकिन बाप भी आदि साथी ब्राह्मण आत्मायें, जन्म के साथी बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं क्योंकि बाप अकेला अवतरित नहीं होते लेकिन ब्रह्मा ब्राह्मण बच्चों के साथ दिव्य जन्म लेते अर्थात् अवतरित होते हैं। सिवाए ब्राह्मणों के यज्ञ की रचना अकेला बाप नहीं कर सकता। तो यज्ञ रचा, ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचे तब आप सब पैदा हुए हैं। तो चाहे दो वर्ष वाले हो, दो मास वाले हो लेकिन आप सभी को भी दिव्य ब्राह्मण जन्म की मुबारक है। कितना यह दिव्य जन्म श्रेष्ठ है। बाप भी हर एक दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं। और सदा यही गीत गाते रहते -''वाह हीरे तुल्य जीवन वाले ब्राह्मण बच्चे वाह''। वाह-वाह हो ना? बाप ने वाह-वाह बच्चे बना दिया। यह अलौकिक जन्म बाप का भी न्यारा है तो आप बच्चों का भी न्यारा और प्यारा है। यह एक ही बाप है जिसका ऐसा जन्म वा जयन्ती है जो और किसी का भी ऐसे जन्म दिन न हुआ है, न होना है। निराकार और फिर दिव्य जन्म; और सभी आत्माओं का जन्म अपने-अपने साकार शरीर में होता है लेकिन निराकार बाप का जन्म

परकाया प्रवेश से होता है। सारे कल्प में ऐसा इस विधि से किसका जन्म हुआ है? एक ही बाप का ऐसा न्यारा जन्म दिन होता है जिसको शिव जयन्ती के रूप में भगत भी मनाते आते हैं। इसलिए इस दिव्य जन्म के महत्व को आप जानते हो, भगत भी जानते नहीं हैं लेकिन जो सुना है उसी प्रमाण ऊंचे ते ऊंचा समझते हुए मनाते आते हैं। आप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं हो लेकिन मनाने के साथ स्वयं को बाप समान बनाते भी हो। अलौकिक दिव्य जन्म के महत्व को जानते हो। और किसी भी बाप के साथ बच्चे का, साथ-साथ जन्म नहीं होता लेकिन शिव जयन्ती अर्थात् बाप के दिव्य जन्म के साथ बच्चों का भी जन्म है, इसलिए डायमण्ड जुबली मनाई ना। तो बाप के साथ बच्चों का भी दिव्य जन्म है। सिर्फ इसी जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहते हो लेकिन हीरे तुल्य जयन्ती मनाते स्वयं भी हीरे तुल्य जीवन में आ जाते हो। इस रहस्य को सभी बच्चे अच्छी तरह से जानते भी हो और औरों को भी सुनाते रहते हो। बापदादा समाचार सुनते रहते हैं, देखते भी हैं कि बच्चे बाप के दिव्य जन्म का महत्व कितना उमंग-उत्साह से मनाते रहते हैं। बापदादा चारों ओर के सेवाधारी बच्चों को हिम्मत के रिटर्न में मदद देते रहते हैं। बच्चों की हिम्मत और बाप की मदद है।

आजकल बापदादा के पास सभी बच्चों का एक ही स्नेह का संकल्प बार-बार आता है कि अब बाप समान जल्दी से जल्दी बनना ही है। बाप भी कहते हैं हे मीठे बच्चे बनना ही है। हर एक को यह दृढ़ निश्चय है और भी अन्डरलाइन कर दो कि हम नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा। हम ही थे, हम ही हैं और हम ही हर कल्प में बनते रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना?

डबल विदेशी भी शिव जयन्ती मनाने आये हैं? अच्छा है, हाथ उठाओ डबल विदेशी। बापदादा देख रहे हैं कि डबल विदेशियों को सबसे ज्यादा यही उमंग-उत्साह है कि कोई भी विश्व का कोना रह नहीं जाये। भारत को तो काफी समय सेवा के लिए मिला है और भारत ने भी गांव-गांव में सन्देश दिया है। लेकिन डबल विदेशियों को भारत से सेवा का समय कम मिला है। फिर भी उमंग-उत्साह के कारण बापदादा के सामने सेवा का सबूत अच्छा लाया है और लाते रहेंगे। भारत में जो वर्तमान समय वर्गीकरण की सेवायें आरम्भ हुई हैं, उसके कारण भी सभी वर्गो को सन्देश मिलना सहज हो गया है क्योंकि हर एक

वर्ग अपने वर्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं तो यह वर्गीकरण की इन्वेन्शन अच्छी है। इससे भारत की सेवा में भी विशेष आत्माओं का आना अच्छी रौनक लग जाती है। अच्छा लगता है ना! वर्गीकरण की सेवा अच्छी लगती है? विदेश वाले भी अपने अच्छे-अच्छे ग्रुप ले आते हैं, रिट्रीट कराते हैं, तरीका अच्छा रखा है। जैसे भारत में वर्गीकरण से सेवा में चांस मिला है, वैसे इन्हों की भी यह विधि बहुत अच्छी है। बापदादा को दोनों तरफ की सेवा पसन्द है, अच्छा है। जगदीश बच्चे ने इन्वेन्शन अच्छी निकाली है और विदेश में यह रिट्रीट, डॉयलाग किसने शुरु किया? (सभी ने मिलजुलकर किया) भारत में भी मिलजुलकर तो किया है फिर भी निमित्त बने हैं। अच्छा है हर एक को अपने हमजिन्स के संगठन में अच्छा लगता है। तो दोनों तरफ की सेवा में अनेक आत्माओं को समीप लाने का चांस मिलता है। रिजल्ट अच्छी लगती है ना? रिट्रीट की रिजल्ट अच्छी रही? और वर्गीकरण की भी रिजल्ट अच्छी है, देश-विदेश कोई न कोई नई इन्वेन्शन करते रहते हैं और करते रहेंगे। चाहे भारत में, चाहे विदेश में सेवा का उमंग अच्छा है। बापदादा देखते हैं जो सच्ची दिल से नि:स्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते जाते हैं, उन्हों के खाते में पुण्य का खाता बहुत अच्छा जमा होता जाता है। कई बच्चों का एक है अपने पुरुषार्थ के प्रालब्ध का खाता, दूसरा है सन्तुष्ट रह सन्तुष्ट करने से दुआओं का खाता और तीसरा है यथार्थ योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवा के रिटर्न में पुण्य का खाता जमा होता है। यह तीनों खाते बापदादा हर एक का देखते रहते हैं। अगर कोई का तीनों खाते में जमा होता है तो उसकी निशानी है - वह सदा सहज पुरुषार्थी अपने को भी अनुभव करते हैं और दूसरों को भी उस आत्मा से सहज पुरुषार्थ की स्वत: ही प्रेरणा मिलती है। वह सहज पुरुषार्थ का सिम्बल है। मेहनत नहीं करनी पड़ती, बाप से, सेवा से और सर्व परिवार से मुहब्बत है तो यह तीनों प्रकार की मुहब्बत मेहनत से छुड़ा देती है।

बापदादा सभी बच्चों से यही श्रेष्ठ आशा रखते हैं कि सभी बच्चे सहज पुरुषार्थी सदा रहो। 63 जन्म भक्ति में, उलझनों में भटकने की मेहनत की है, अब यह एक ही जन्म है मेहनत से छूटने का। अगर बहुतकाल से मेहनत करते रहेंगे तो यह संगमयुग का वरदान मुहब्बत से सहज पुरुषार्थी का कब लेंगे? युग समाप्त, वरदान भी समाप्त। तो सदा इस वरदान को जल्दी से जल्दी ले लो।

कोई भी बड़े ते बड़ा कार्य हो, कोई भी बड़े ते बड़ी समस्या हो लेकिन हर कार्य, हर समस्या ऐसे पार हो जैसे आप लोग कहते हो माखन से बाल निकल गया। कई बच्चों का थोड़ा-थोड़ा बापदादा खेल देखते हैं, हर्षित भी होते हैं और बच्चों को देखकर रहम भी आता है। जब कोई समस्या या कोई बड़ा कार्य भी सामने आता है तो कभी-कभी बच्चों के चेहरे पर थोड़ा सा समस्या वा कार्य की लहर दिखाई देती है। थोड़ा सा चेहरा बदल जाता है। फिर अगर कोई कहता है क्या हुआ? तो कहते हैं काम ही बहुत है ना! विघ्न-विनाशक के आगे विघ्न न आवे तो विघ्न-विनाशक टाइटल कैसे गाया जायेगा? थोड़ा सा चेहरे पर थकावट या थोड़ा सा मूड बदलने के चिन्ह नहीं आने चाहिए। क्यों? आपके जड़ चित्र जो आधाकल्प पूजे जायेंगे उसमें कभी थोड़ा सा भी थकावट या मूड बदलने के चिन्ह दिखाई देते हैं क्या? जब आपके जड़ चित्र सदा मुस्कराते रहते हैं तो वह किसके चित्र हैं? आपके ही हैं ना? तो चैतन्य का ही यादगार चित्र है इसलिए थोड़ा सा भी थकावट वा जिसको कहते हो चिड़चिड़ापन, वह नहीं आना चाहिए। सदा मुस्कराता चेहरा बापदादा को और सभी को भी पसन्द आता है। अगर कोई चिड़चिड़ेपन में है तो उसके आगे जायेंगे? सोचेंगे अभी कहें या नहीं कहें। तो आपके जड़ चित्रों के पास तो भगत बहुत उमंग से आते हैं और चैतन्य में कोई भारी हो जाए तो अच्छा लगता है? अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं। यह नहीं कहो बात ही ऐसी थी ना। कैसी भी बात हो लेकिन रूप मुस्कराता हुआ, शीतल, गम्भीर और रमणीकता दोनों के बैलेन्स का हो। कोई भी अचानक आ जाए और आप समस्या के कारण वा कार्य के कारण सहज पुरुषार्थी रूप में नहीं हो तो वह क्या देखेगा? आपका चित्र तो वही ले जायेगा। कोई भी समय, कोई भी किसी को भी चाहे एक मास का हो, दो मास का हो, अचानक भी आपके फेस का चित्र निकाले तो ऐसा ही चित्र हो जो सुनाया। दाता बनो। लेवता नहीं, दाता। कोई कुछ भी दे, अच्छा दे वा बुरा भी दे लेकिन आप बड़े ते बड़े बाप के बच्चे बड़ी दिल वाले हो अगर बुरा भी दे दिया तो बड़ी दिल से बुरे को अपने में स्वीकार न कर दाता बन आप उसको सहयोग दो, स्नेह दो, शक्ति दो। कोई न कोई गुण अपने स्थिति द्वारा गिफ्ट में दे दो। इतनी बड़ी दिल वाले बड़े ते बड़े बाप के

बच्चे हो। रहम करो। दिल में उस आत्मा के प्रति और एकस्ट्रा स्नेह इमर्ज करो। जिस स्नेह की शक्ति से वह स्वयं परिवर्तित हो जाए। ऐसे बड़ी दिल वाले हो या छोटी दिल है? समाने की शक्ति है? समा लो। सागर में कितना किचड़ा डालते हैं, डालने वाले को, वह किचड़े के बदले किचड़ा नहीं देता। आप तो ज्ञान के सागर, शक्तियों के सागर के बच्चे हो, मास्टर हो।

तो सुना बापदादा क्या देखने चाहते हैं? मैजारिटी बच्चों ने लक्ष्य रखा है कि इस वर्ष में परिवर्तन करना ही है। करेंगे, सोचेंगे नहीं, करना ही है। करना ही है या वहाँ जाकर सोचेंगे? जो समझते हैं करना ही है वह एक हाथ की ताली बजाओ। (सभी ने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। सिर्फ यह हाथ नहीं उठाना, मन से दृढ़ संकल्प का हाथ उठाना। यह हाथ तो सहज है। मन से दृढ़ संकल्प का हाथ सदा सफलता स्वरूप बनाता है। जो सोचा वह होना ही है। सोचेंगे तो पॉजिटिव ना! निगेटिव तो सोचना नहीं है। निगेटिव सोचने का सदा के लिए रास्ता बन्द। बन्द करना आता है या खुल जाता है? जैसे अभी तूफान लगा ना तो दरवाजे आपेही खुल गये, ऐसे तो नहीं होता? आप समझते हो बन्द करके आ गये, लेकिन तूफान खोल दे, ऐसा ढीला नहीं करना। अच्छा।

डबल विदेशियों का उत्सव अच्छा हुआ ना! (10 वर्षो से अधिक समय से ज्ञान में चलने वाले करीब 400 डबल विदेशी भाई-बहिनों का सम्मान-समारोह मनाया गया) अच्छा लगा? जिसने मनाया और अच्छा लगा वह हाथ उठाओ। पाण्डव भी हैं। इसका महत्व क्या है? मनाने का महत्व क्या है? मनाना अर्थात् बनना। सदा ऐसे ताजधारी, स्व पुरुषार्थ और सेवा की जिम्मेवारी क्या कहें, मौज ही कहें, सेवा के मौज मनाने का ताज सदा ही पड़ा रहे। और गोल्डन चुन्नी भी सभी ने पहनी ना! तो गोल्डन चुन्नी किसलिए पहनाई? सदा गोल्डन एजेड स्थिति, सिल्वर नहीं, गोल्डन। और फिर दो-दो हार भी पहने थे। तो दो हार कौन से पहनेंगे? एक तो सदा बाप के गले का हार। सदा, कभी गले से निकालना नहीं, गले में ही पिरोये रहें और दूसरा सदा सेवा द्वारा औरों को भी बाप के गले का हार बनाना, यह डबल हार है। तो बहुत अच्छा मनाने वाले को भी लगा और देखने वाले को भी लगा। तो इस उत्सव मनाने का, सदा के उत्सव का रहस्य बताया। और साथ-साथ यह भी मनाना अर्थात् और उमंग-उत्साह बढ़ाना। सभी के अनुभव बापदादा ने तो देख लिए। अच्छे अनुभव रहे। खुशी

और नशा सभी के चेहरों में दिखाई दे रहा था। बस ऐसा ही अपना शक्ति-शाली, मुस्कराता हुआ रमणीक और गम्भीर स्वरूप सदा इमर्ज रखते चलो क्योंकि आजकल के समय के हालतों के प्रमाण ज्यादा सुनने वाले, समझने वाले कम हैं, देखकर अनुभव करने वाले ज्यादा हैं। आपकी सूरत में बाप का परिचय, सुनाने के बजाए दिखाई दे। तो अच्छा किया। बापदादा भी देख-देख हर्षित हो रहे हैं। इस वर्ष को वा इस सीजन को विशेष उत्सव की सीजन मनाई है। हर समय एक जैसा नहीं होता है।

(ड्रिल) सभी में रूलिंग पावर है? कर्मेन्द्रियों के ऊपर जब चाहो तब रूल कर सकते हो? स्व-राज्य अधिकारी बने हो? जो स्व-राज्य अधिकारी हैं वही विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। जब चाहो, कैसा भी वातावरण हो लेकिन अगर मन-बुद्धि को ऑर्डर दो स्टाप, तो हो सकता है या टाइम लगेगा? यह अभ्यास हर एक को सारे दिन में बीच-बीच में करना आवश्यक है। और कोशिश करो जिस समय मन-बुद्धि बहुत व्यस्त है, ऐसे समय पर भी अगर एक सेकण्ड के लिए स्टाप करने चाहो तो हो सकता है? तो सोचो स्टाप और स्टाप होने में 3 मिनट, 5 मिनट लग जाएं, यह अभ्यास अन्त में बहुत काम में आयेगा। इसी आधार पर पास विद आनर बन सकेंगे। अच्छा।

सदा दिल के उमंग-उत्साह का उत्सव मनाने वाले स्नेही आत्मायें, सदा हीरे तुल्य जीवन का अनुभव करने वाले, अनुभव के अथॉरिटी वाले विशेष आत्मायें, सदा अपने सूरत से बाप का परिचय देने वाले बाप को प्रत्यक्ष करने वाले सेवाधारी आत्मायें, सदा गम्भीर और रमणीक दोनों का साथ में बैलेन्स रखने वाले सबके ब्लैसिंग के अधिकारी आत्मायें, ऐसे चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को शिव रात्रि की मुबारक, मुबारक हो। साथ-साथ बापदादा का दिलाराम का दिल व जान सिक व प्रेम से यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से

सदा एक जैसा खेल अच्छा भी नहीं लगता है। चेंज होना चाहिए। तो ड्रामा के खेल में भिन्न-भिन्न खेल दिखाई देते रहते हैं। अच्छा है। सभी संकल्प पूरे होते जाते हैं ना। जितना न्यारे और प्यारे बन संकल्प करते हैं तो वह सभी संकल्प पूरे हो जाते हैं। ब्राह्मणों का हर एक संकल्प सफलता के बीज से सम्पन्न

होता है। जब बीज ही सफलता का है तो फल सफलता का ही निकलता है।

कनार्टक की टीचर्स से:- बहुत अच्छा सेवा का पार्ट मिला। सेवा करना अर्थात् अपने एकाउन्ट में दुआयें इक्ट्ठी करना। तो दुआयें बहुत इक्ट्ठी की ना। अच्छा किया। जो पार्ट अच्छा बजाते हैं उनकी ड्रामा में नूंध हो जाती है। दीदी दादियों के पास भी नाम नोट हो जाता है और बार-बार निमन्त्रण मिलता है। तो आपने सेवा की अर्थात् बार-बार अपना नाम नोट करा दिया। कितनी आत्माओं से सम्बन्ध-सम्पर्क हुआ, अपनी फैमिली को देखा, मनाया। और आगे भी सेवा में सदा एवररेडी रहने का पार्ट मिला। पार्ट अच्छालगा? बहुत अच्छा। कनार्टक में संख्या तो बहुत है और एक हजार को चांस मिला, यह भी भाग्य है। सेवा मिलना भाग्य की निशानी है। तो आप सभी ने अपने भाग्य की लकीर, बार-बार आने की खींच ली। जब आर्डर मिलेगा आ सकते हो। अच्छा है।

(बापदादा ने डायमण्ड हाल की विशाल स्टेज पर खड़े होकर अपने हस्तों से झण्डा फहराया तथा सभी बच्चों को शिव जयन्ती की बधाई दी)

सभी को स्नेह से बाप का झण्डा लहराने की बहुत-बहुत मुबारक हो, बापदादा देख रहे हैं कि सभी के दिल में बाप का झण्डा लहरा रहा है। हर एक के दिल में बाप है और बाप की दिल में हर एक बच्चा है। आप से पूछे कोई आप कहाँ रहते हो? तो क्या कहेंगे? भगवान की दिल में रहने वाले। सभी बाप की दिल में रहने वाले हो, उन्हों के दिल में क्या है? बाप के नाम का झण्डा। यह तो यादगार झण्डा है लेकिन बाप के नाम का झण्डा जल्दी से जल्दी विश्व में लहरायेगा। वह भी दिन दूर नहीं है। अवश्य चाहे अंजान बच्चे हैं, चाहे जानने वाले बच्चे हैं, सभी को बाप का परिचय मिलना ही है। और सबके मुख से आ गया, बाप आ गया, यह आवाज निकलना ही है। उसके लिए सभी तैयारी कर रहे हैं। और निश्चित है, होना ही है। होना ही है। होना ही है। ओम् शान्ति।

13-3-98

होली शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित होना अर्थात् बाप समान बनना

आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चों को चारों तरफ देख रहे हैं। चाहे साकार में सम्मुख हैं, चाहे दूर बैठे दिल से समीप हैं - चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित होते रहते हैं। हर एक बच्चा ऐसा होलीएस्ट बनता है जो सारे कल्प में और कोई भी ऐसा महान पवित्र आत्मा न बना है, न बन सकते हैं। समय प्रति समय धर्म आत्मायें, महान आत्मायें, पवित्र रहे हैं लेकिन उन्हों की पवित्रता और आपकी पवित्रता में अन्तर है। इस समय आप पवित्र बनते हो, इसी पवित्रता की प्राप्ति वा प्रालब्ध भविष्य अनेक जन्म तक तन-मन-धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और साथ में आत्मा भी पवित्र है। शरीर भी पवित्र हो और आत्मा भी पवित्र हो – ऐसी पवित्रता आप आत्मायें प्राप्त करती हो। मन-वचन-कर्म तीनों ही पवित्र बनने से ऐसी प्रालब्ध प्राप्त होती है। तो ऐसे होलीएस्ट आत्मायें हो। अपने को ऐसे श्रेष्ठ होलीएस्ट आत्मायें समझते हो? अभी बने हैं वा बन रहे हैं? बनना सहज है या थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? लेकिन कल्प पहले भी बने हैं और अब भी बनना ही है। पक्का या थोड़ा-थोड़ा चलता है? नहीं। स्वप्न मात्र भी अपवित्रता समाप्त होनी ही है, इतना निश्चय है ना कि आज बन रहे हैं और कल बन ही जायेंगे। तो होलीएस्ट भी हैं और हाइएस्ट भी हैं।

ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे ऊंचे ते ऊंचे हैं। हाइएस्ट बनते हो तब पूजे जाते हो। चाहे आजकल की हाइएस्ट आत्मायें, सकामी राजे थे, अब तो नहीं हैं। चाहे प्रेजीडेंट हो, चाहे प्राइममिनिस्टर हो लेकिन वह पूज्य नहीं बनते हैं। आप पूज्य बनने वाली आत्माओं के आगे पुजारी बन नमन और पूजन करते हैं। अभी भी स्व-राज्य अधिकारी बनते हो और भविष्य में भी राजाओं के राजे बनते हो। तो ऐसा हाइएस्ट पद प्राप्त करते हो। साथ में रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो। आपका टाइटल ही है पदमा-पदम-पति। और ऐसा खजाना है जो अरबपति, खरबपति, अरब-खरब से भी ऐसा खजाना प्राप्त नहीं कर सकते। आप श्रेष्ठ आत्माओं का

बाप द्वारा ऐसा भाग्य बना रहे हैं जो अनुभव करते हो और वर्णन भी करते हो कि हमारे कदम में पदम हैं। कदम में पदम हैं या सौ हैं, हजार हैं? ऐसा कोई बड़े से बड़ा मिल्यूनर भी इतनी कमाई नहीं कर सकता। कदम में कितना टाइम लगेगा? कदम उठाओ.कितना समय लगता है? सेकण्ड। चलो दो सेकण्ड कह दो। अगर दो सेकण्ड भी कहो तो दो सेकण्ड में पदम, तो सारे दिन में कितने पदम हुए? हिसाब करो। ऐसा कोई मिल्यूनर है जो एक दिन में इतनी कमाई करे? ऐसा कोई होगा? तो रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो ना! और आपका ऐसा खजाना है जो आग भी नहीं जला सकती, पानी डुबो नहीं सकता, चोर लूट नहीं सकता, राजा भी खा नहीं सकते। ऐसा खजाना इस पुरुषोत्तम संगमयुग में ही प्राप्त करते हो। तो अपना ऐसा स्वमान स्मृति में रहता है? हाँ या ना? पीछे वाले हाथ हिला रहे हैं। पीछे वाले आराम से बैठे हो ना? रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो तो आराम ही आराम है। बड़े से बड़ी युनिवर्सिटी में भी ऐसे कोचों पर पढ़ाई पढ़ने के लिए नहीं बैठते हैं, लेकिन आप बेगर टू प्रिन्स हो। बेगर भी हो और प्रिन्स भी हो। सर्व त्याग माना बेगर। सर्व प्राप्तियां अर्थात् प्रिन्स। बिना त्याग के इतना बड़ा भाग्य नहीं मिलता है। त्याग का ही भाग्य मिला है। तन-मन-धन, सम्बन्ध सभी त्याग किया अर्थात् परिवर्तन किया। तन मेरा के बजाए तेरा किया। मन, धन, सम्बन्ध एक शब्द परिवर्तन होने से मेरे के बजाए तेरा किया, है एक शब्द का परिवर्तन लेकिन इसी त्याग से भाग्य के अधिकारी बन गये। तो भाग्य के आगे यह त्याग क्या है? छोटी बात है या थोड़ी बड़ी भी है? कभी-कभी बड़ी हो जाती है। तेरा कहना माना बड़ी बात को छोटा करना और मेरा कहना माना छोटी बात को बड़ी करना। क्या भी हो जाए, 100 हिमालय से भी बड़ी समस्या आ जाए लेकिन तेरा कहना और पहाड़ को रूई बनाना, राई भी नहीं, रुई। जो रूई सेकण्ड में उड़ जाए। सिर्फ तेरा कहना नहीं मानना, सिर्फ मानना भी नहीं चलना। एक शब्द का परिवर्तन सहज ही है ना! और फ़ायदा ही है, नुकसान तो है नहीं। तेरा कहने से सारा बोझ बाप को दे दिया। तेरा तुम ही जानों। आप सिर्फ निमित्त-मात्र हो। इसमें फ़ायदा है ना? न्यारे औरपरमात्मा के प्यारे बन गये। जो परमात्मा के प्यारे बनते हैं वह विश्व के प्यारे बनते हैं। सिर्फ भविष्य

प्राप्ति नहीं है, वर्तमान भी है। एक सेकण्ड में अनुभव किया भी है और करके देखो। कोई भी बात आ जाए तेरा कह दो, मान जाओ और तेरा समझकर करो तो देखो बोझ हल्का होता है या नहीं होता है। अनुभव है ना? सभी अनुभवी बैठे हो ना! सिर्फ क्या होता है, मेरा मेरा कहने की बहुत आदत है ना, 63 जन्मों की आदत है तो तेरा तेरा कहकर फिर मेरा कह देते हो और मेरा माना गये, फिर वह बात तो एक घण्टे में, दो घण्टे में, एक दिन में खत्म हो जाती है लेकिन जो तेरे से मेरा किया उसका फल लम्बा चलता है। बात आधे घण्टे की होगी लेकिन चाहे पश्चाताप के रूप में, चाहे परिवर्तन करने के लक्ष्य से, वह बात बार-बार स्मृति में आती रहती है। इसलिए बाप सभी बच्चों को कहते हैं अगर ''मेरा शब्द'' से प्यार है, आदत है, संस्कार है, कहना ही है तो मेरा बाबा कहो। आदत से मजबूर होते हैं ना। तो जब भी मेरा-मेरा आवे तो मेरा बाबा कहकर खत्म कर दो। अनेक मेरे को एक मेरा बाबा में समा दो।

रशिया वाले एक डॉल लाते हैं ना, तो डॉल में डॉल..... एक डॉल हो जाती है। ऐसे आप भी एक मेरा बाबा में अनेक मेरा समा दो, खत्म। यह कर सकते हो? करते हो लेकिन कभी-कभी मेरे के विस्तार में चले जाते हो। अभी कभी-कभी है, सदा मेरा, तेरा हो जाए उसमें नम्बरवार हैं। नम्बरवन भी हैं, ए वन भी हैं लेकिन फिर भी पीछे के नम्बर भी हैं। तो होली मनाने आये हो ना? तो यही मन्त्र याद करो मैं बाप की हो ली, बन गये। परमात्म परिवार की हो ली अर्थात् हो गई। तो ऐसी होली मनाई? अभी क्या करना है? अभी जलाना है या जला दिया? इसमें हाँ नहीं कहते, सोच रहे हैं?

देखो, भक्ति मार्ग में जो भी उत्सव मनाते हैं, यादगार हैं लेकिन कुछ-कुछ अर्थ से बने हुए हैं। पहले जलाना है फिर मनाना है। पहले मनाना फिर जलाना नहीं। पहले भस्म करो, अशुद्धि को, कमजोरी को, बुराई को जलाओ फिर मनाओ। तो आपने तो बहुत पहले जला दिया ना या अभी भी थोड़ा सा दुपट्टे का कोना रह गया है? पाण्डवों के बुशर्ट या जो चोला पहनते हैं उसका कुछ कोना रह गया हो? साड़ी का कोना तो नहीं रह गया? वास्तव में देखो आत्मिक मनाना और उस मनाने से शक्ति, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना, वह तभी

कर सकते हैं जब पहले जलाया है। मनोरंजन के रूप से मनाना वह अलग चीज़ है। वह तो संगमयुग है मौजों का युग, इसलिए मनोरंजन की रीति से भी मनाते हो और मनाओ, खूब मनाओ। लेकिन परमात्म रंग में रंग जाना अर्थात् बाप समान बन जाना। यह है रंग में रंग जाना। जैसे बाप अशरीरी है, अव्यक्त है वैसे अशरीरी पन का अनुभव करना वा अव्यक्त फरिश्ते पन का अनुभव करना - यह है रंग में रंग जाना। कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बनके काम करो। अशरीरीपन की स्थिति का जब चाहो तब अनुभव करो। ऐसे मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हो। आर्डर करो - अशरीरी बन जाओ। आर्डर किया और हुआ। फरिश्ते बन जायें। जैसे मन को जहाँ जिस स्थिति में स्थित करने चाहो वहाँ सेकण्ड में स्थित हो जाओ। ऐसे नहीं ज्यादा टाइम नहीं लगा, 5 सेकण्ड लग गये, 2 सेकण्ड लग गये। आर्डर में तो नहीं हुआ, कन्ट्रोल में तो नहीं रहा। कैसी भी परिस्थिति हो, हलचल हो लेकिन हलचल में अचल हो जाओ। ऐसे कन्ट्रोलिंग पावर है? या सोचते - सोचते अशरीरी हो जाऊं, अशरीरी हो जाऊं, उसमें ही टाइम चला जायेगा? कई बच्चे बहुत भिन्न-भिन्न पोज़ बदलते रहते, बाप देखते रहते। सोचते हैं अशरीरी बनें फिर सोचते हैं अशरीरी माना आत्मा रूप में स्थित होना, हाँ मैं हूँ तो आत्मा, शरीर तो हूँ ही नहीं, आत्मा ही हूँ। मैं आई ही आत्मा थी, बनना भी आत्मा है ... अभी इस सोच में अशरीरी हुए या अशरीरी बनने की युद्ध की? आपने मन को आर्डर किया सेकण्ड में अशरीरी हो जाओ, यह तो नहीं कहा सोचो - अशरीरी क्या है? कब बनेंगे, कैसे बनेंगे? आर्डर तो नहीं माना ना! कन्ट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना! अभी समय प्रमाण इसी प्रैक्टिस की आवश्यकता है। अगर कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो कई परिस्थितियां हलचल में ले आ सकती हैं। इसलिए एक होली शब्द ही याद करो तो भी ठीक है। होली - बीती सो बीती और हो ली बाप की बन गई। और क्या बन गई? होली अर्थात् पवित्र आत्मा बन गई। एक शब्द होली याद करो तो एक होली शब्द के तीन अर्थ यूज़ करो, वर्णन नहीं करो, हाँ होली माना बीती सो बीती। हाँ बीती सो बीती है - ऐसे नहीं सोचते रहो, वर्णन करते रहो, नहीं। अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। सोचा और हुआ। ऐसे नहीं सोचा तो सोच

में ही पड़े रहो। नहीं। जो सोचा वह हो गया, बन गये, स्थित हो गये।

(कल १० वर्षो से पुराने डबल विदेशी भाई-बहिनों की सेरीमनी मनाई गई)

जिन्होंने सेरीमनी मनाई, तो ऐसी सेरीमनी मनाई ना? होली मनाई ना? बापदादा भी हर न्यारे और प्यारे दृश्य देख हर्षित होते हैं। सारा परिवार भी खुश होते हैं। अपना फोटो अच्छी तरह से देखा? अच्छा लगा ना? सिर्फ फेस देखा वा मन की स्थिति भी देखी? इस आइने में तो शक्ल देखी, बहुत अच्छा। अच्छा किया। लेकिन नॉलेज के आइने में अपनी स्थिति भी देखी? अच्छा है बापदादा भी 10-15 वर्ष नहीं देखते, लेकिन इतना समय चलते रहे हैं, अविनाशी रहे हैं, अमर रहे हैं, इसको देख करके खुश होते हैं। कमाल तो की है। कल्चर बदला, देश बदला, रसम-रिवाज बदले, संस्कार डबल फारेनर्स के बदले, भारतवासी हो गये। अभी क्या कहेंगे? मधुबन निवासी हो या अमेरिका, लण्डन ... कहाँ के हो? मधुबन के हो? (मधुबन निवासी) अमेरिका, रशिया याद नहीं है? मधुबन आपकी परमानेंट एड्रेस है। और अमेरिका, रशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, जपान... कितने नाम हैं, यह आपके सर्विस स्थान हैं। रहने का परमानेंट एड्रेस मधुबन है, बाकी सेवा के लिए भिन्न नाम, भिन्न रूप, भिन्न भाषा, भिन्न कल्चर में गये हो। नहीं तो देखो अगर आप वहाँ जन्म नहीं लेते तो भारत की बहनों को कितनी भाषायें सीखनी पड़ती। कितनी भाषायें सीखती? तो आप सभी सेवा के लिए गये हो। और बापदादा ने देखा है कि डबल फारेनर्स को सेवास्थान खोलने का शौक भी अच्छा है। फ्लैट मिला, सेन्टर खोला। अच्छा है। तब तो देखो इतने देशों में सेवाकेन्द्र खुले हैं।

तो बापदादा डबल विदेशियों के इस उमंग-उत्साह के लिए बहुत-बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। थोड़े समय में सेवा अच्छी फैलाई है। तो फास्ट हुए ना! विदेश को टोटल कितने वर्ष हुए? लण्डन में स्थापना हुए कितने वर्ष हुए? (27 वर्ष)। भारत में 62 वर्ष और फारेन के 27 वर्ष। तो बापदादा सेवा के वृद्धि को देख खुश हैं। अभी सिर्फ एक सेवा रही हुई है। ऐसे बापदादा छोड़ते नहीं हैं, हो गई। नहीं। और रही हुई हैं।

बापदादा सभी डबल विदेशियों को यही भविष्य के लिए इशारा देते हैं कि

अभी अखबारों की सेवा ज्यादा करो। फारेन की अखबारें, भारत की सेवा करेंगी। अभी थोड़ी-थोड़ी कारणे अकारणें शुरू तो हुई हैं लेकिन जैसे शुरू आदि में स्थापना हुई तो फारेन की अखबारों में समाचार पढ़ा। अभी फिर फारेन की अखबारों में ऐसी बातें आवें जो भारतवासियों की आंख खुले। भारत की अखबारों में तो पड़ना शुरू हो गया है लेकिन फारेन की अखबारें भी भारत को जगायेंगी और दूसरा ऐसा वर्ल्ड के रेडियों में आये, जैसे आप लोगों ने ब्रह्माकुमारीज़ का कम्प्युटर में डाला है ना। तो कोई भी जो चाहे वह देख सकता है। डाला तो बहुत अच्छा है लेकिन उसकी सूचना किसको पता नहीं है, भारत में फ़ायदा ले सकते हैं लेकिन एडवरटाइज नहीं हुई है। इन्वेन्शन अच्छी की है, अच्छा है डबल फारेन में प्रकृति के साधनों का लाभ अच्छा लेते हैं। भारत में यह बी.बी.सी. का सब सुनते हैं, उसमें आवे, फिर देखो कितना आवाज आता है। करो कमाल। पहचान निकालो, लोकल टी.वी. और रेडियों में तो आपका आता ही है, लेकिन ऐसा आवाज फैले जो न सुनने वाले भी सुन लें। अभी हर वर्ष कुछ नया तो करते हो ना, प्लैन तो बनाते हो ना? मीटिंग भी बहुत करते हो। करो, खूब करो। हिम्मत बच्चों की मदद बाप की तो है ही। सिर्फ कोई निमित्त बनें। हर कार्य के लिए कोई न कोई निमित्त बन जाता है और हो भी जाता है क्योंकि ड्रामा में होना नूंधा हुआ है। सिर्फ समय पर कोई निमित्त बन जाता है। तो इस कार्य के लिए भी कोई निमित्त बनना ही है।

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

अभी समय के प्रमाण आप हर निमित्त बनी हुई, सदा याद और सेवा में रहने वाली आत्माओं को स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन पावरफुल और तीव्रगति का बढ़ाना है। चारों ओर मन का दु:ख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। बापदादा को विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम आता है। तो जितना तीव्रगति से दु:ख ही लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ। बाप को तो पुकारते ही हैं लेकिन आप पूज्य देव आत्माओं को भी किसी न

किसी रूप से पुकारते रहते हैं। तो हे देव आत्मायें, पूज्य आत्मायें अपने भक्त आत्माओं को सकाश दो। साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेन्शन निकालें जो दु:ख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दु:ख भी देता है लेकिन दु:ख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो उसका सोचते जरूर हैं। लेकिन स्वयं की आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं। लेकिन आप सबके पास सुख का, शान्ति का, नि:स्वार्थ सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है। जमा है या जितना इक्ट्ठा करते हो उतना खर्च हो जाता है? यह भी चेक करो जमा तो होता है लेकिन जमा के साथ-साथ खर्च भी तो नहीं हो जाता? ज्ञान के खजाने तो खर्च करने से बढ़ते हैं, कम नहीं होते। अगर बार-बार अपने ही स्वभाव-संस्कार वा माया की तरफ से आई हुई समस्याओं में अपनी शक्तियां यूज़ करते हो तो जमा का खाता कम होता है। तो चेक करो - जमा किया लेकिन खर्च भी किया बाकी एकाउन्ट कितना रहा? कमाया और खाया, ऐसा तो नहीं है? दो दिन कमाया और एक दिन इतना ही गँवाया जो जमा किया हुआ भी खर्च करना पड़ा। ऐसा एकाउन्ट तो नहीं है? ऐसे ही कमाया और खाया वा अपने प्रति ही लगाकर खत्म किया तो 21 जन्म के लिए जमा क्या किया? जमा की तो खुशी होती है लेकिन खर्च का हिसाब नहीं निकाला तो समय पर धोखा मिल जायेगा। जमा का खाता भी देखो लेकिन साथ-साथ अपने प्रति खर्च कितना किया। दूसरे को कोई गुण दिया, शक्ति दी, ज्ञान का खजाना दिया वह खर्च नहीं है, वह जमा के खाते में जमा होता है लेकिन अपने प्रति समय प्रति समय खर्च किया तो खाता खाली हो जाता है। इसीलिए अच्छे विशाल बुद्धि से चेकिंग करो। जमा का खाता बहुत लम्बा चौड़ा चाहिए। है सहज अगर हर कदम में पदम जमा करते जाओ तो जमा का एकाउण्ट बहुत बड़ा हो जायेगा। तो चेक करो कि हर कर्म व कदम ब्रह्मा बाप समान रहा? अनुभवी हो, जब कोई अच्छा कर्म करते हो तो कर्म का फल उसी समय प्रत्यक्ष रूप में खुशी, शक्ति और सफलता के कारण डबल लाइट रहते हो क्योंकि याद रहता है बाप के साथ से कर्म किया। और अगर अभी कोई विकर्म होता है तो उसका पश्चाताप बहुत लम्बा है। वैसेअभी विकर्म तो कोई होना नहीं चाहिए, वह तो टाइम अभी बीत

गया, लेकिनअभी कोई व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी न हो। क्योंकि व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी बहुत धोखा देता है। जैसा संग वैसा रंग लग जाता है। कई बच्चे बड़े चतुर हैं कहते हैं हम तो संग नहीं करते, लेकिन वह मेरे को नहीं छोड़ते, मैं नहीं करती, वह नहीं छोड़ते। तो क्या किनारा करना नहीं आता? अगर कोई बुरी चीज़ दे तो आप लेते क्यों हो! लेने वाला नहीं लेगा तो देने वाला क्या करेगा? इसीलिए व्यर्थ सम्बन्ध और सम्पर्क भी एकाउण्ट खाली कर देता है। और उसी समय अन्दर दिल में आता भी है, दिल खाता है - यह करना नहीं चाहिए। करना नहीं चाहिए फिर भी कर लेते हैं। सुनना नहीं चाहिए लेकिन सुना दिया तो क्या करूं! लेकिन अगर पुरुषार्थी हो तो व्यर्थ कर्म भी न हो। अलबेले हो तो बात ही छोड़ो, फिर तो आराम से सो जाओ, त्रेता में आ जाना। लेकिन अगर पुरुषार्थ है तो उसी समय दिल में आता है, दिल खाता है कि यह नहीं करना चाहिए फिर भी करते हैं तो बापदादा तो कहेंगे कि ऐसे बच्चों की भी कमाल है। न चाहते भी करते रहते हैं, दिल खाता रहता है और सुनते भी रहते, करते भी रहते, तो बहुत पावरफुल आत्मायें हैं! इसलिए व्यर्थ के ऊपर भी चेकिंग अटेन्शन से करो। अलबेले रीति से चेकिंग नहीं, हाँ कोई बात नहीं, यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है, अभी सम्पूर्ण कहाँ हुए हैं, हो जायेंगे ..... यह अलबेलापन नहीं। करना है और तीव्रगति से करना है, इसको कहते हैं होली मनाना।

बापदादा को बच्चों के भिन्न-भिन्न खेल देख हँसी भी आती है, रहम भी आता है और बापदादा उस समय टच करता है, यह भी अनुभव करते हैं। नहीं करना चाहिए, श्रीमत नहीं है, यह बाबा समान बनना नहीं है, टच भी होता है लेकिन अलबेलापन सुला देता है। इसलिए अभी स्व के प्रति ज्यादा खजाने खर्च नहीं करो। जमा भले करो लेकिन खर्च नहीं करो। सेवा भले करो, व्यर्थ खर्च नहीं करो। बहुत जमा करना है ना! डबल फारेनर्स वैसे जमा करने के आदती नहीं हैं, संस्कार नहीं हैं। मिला और खर्च किया, खाओ पिओ मौज करो लेकिन इस कमाई में ऐसे नहीं करना, इसमें जमा सबसे ज्यादा करो।

अव्यक्त रूप से ब्रह्मा बाप भी विशेष डबल विदेशियों को दिल से बहुत प्यार करते हैं। देख-देख खुश होते हैं। तो ब्रह्मा बाप के विशेष स्नेह का रिटर्न करते रहो। रिटर्न करने का साधन है अपने को टर्न करना। डबल विदेशियों को चांस मिला है ना! खास टर्न मिला है। भारतवासियों को ऐसा टर्न नहीं मिला, डबल विदेशियों को टर्न मिला है तो विशेष हो ना! तो रिटर्न भी विशेष करना पड़े। भारतवासी खुश होते हैं। ईर्ष्या नहीं करते हैं, आप लोगों को देखकर खुश होते हैं। देखो मधुबन वालों ने कितना त्याग किया है, मधुबन में बाप मिल रहे हैं और मधुबन वासी नीचे (मेडीटेशन हाल में) बैठे हैं। तो आपको चांस दिया है ना। प्यार है ना! मधुबन वालों का भी बापदादा के पास जमा है। अभी देखो ऊपर-नीचे का हो गया तो जो ऊपर रहते हैं वह भी मिस करते हैं और ऊपर होता है तो नीचे वाले मिस करते हैं और आप दोनों जगह अटेन्ड करते हो। (डबल विदेशी हैं इसलिए डबल मिलता है) यह विदेशी हैं ही नहीं, हैं ही मधुबन निवासी। वह तो सेवास्थान है। जैसे भारत वाले सेवास्थान पर गये हैं लेकिन कहते क्या हैं? हम मधुबन निवासी हैं। तो विदेश सेवा स्थान है बाकी हैं मधुबन निवासी। पसन्द है ना? ठीक है, ऐसे ही रहना। वहाँ विदेश में जाकर विदेशी नहीं हो जाना। भारतवासी रहना, मधुबन वासी। अभी काफी बदल गये हैं। पहले बहुत क्वेश्चन करते थे - विदेश का कल्चर अलग है, भारत का कल्चर और है। अभी यह क्वेश्चन नहीं करते। काफी परिवर्तन भी आया है। पहले जल्दी कन्फ्यूज़ हो जाते थे, अभी अचल हुए हैं। बापदादा भी बच्चों की प्रोग्रेस देख खुश होते हैं। पहले न्यारे-न्यारे लगते थे, अभी बहुत प्यारे बन गये हैं। सभी देश वाले भी सुन रहे हैं, वह भी हँस रहे हैं कि हमारे में परिवर्तन आया है। जो भी सुन रहे हैं, बापदादा सभी देश वालों को हर एक बच्चे को नाम सहित विशेष होली की मुबारक, साथ में मिलन की मुबारक दे रहे हैं। अभी नाम बोलेंगे तो रात बीत जायेगी इसलिए नाम नहीं बोलते हैं। अच्छा है, जर्मनी वालों को मुबारक है जो इन्वेन्शन अच्छी निकाली है। जर्मन ने बापदादा की एक आशा तो पूरी की है। अभी सब आशायें पूरी नहीं की है लेकिन एक आशा पूरी की है। जर्मनी वाले हाथ उठाओ। मुबारक हो। अभी जर्मनी पुरुषार्थ में भी नम्बरवन

इनाम लो। जर्मन वाले इनाम लेंगे? बोलो हाँ या ना? कमाल करके दिखाओ। जर्मनी में बापदादा की बहुत उम्मीदें हैं। हलचल में अचल होके दिखाओ। हलचल भी जर्मनी में ज्यादा है और अचल भी जर्मनी वाले बनो। होना ही है। अच्छा।

चारों ओर की होलीएस्ट आत्मायें, सदा हाइएस्ट स्थिति में स्थित रहने वाली हाइएस्ट आत्मायें, सदा सर्व खजानों से सम्पन्न रिचेस्ट आत्मायें, सदा हर कदम में पदम जमा करने वाली, बाप समान बनने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा रहमदिल, क्षमा के सागर बच्चे मास्टर क्षमा करने वाली आत्मायें, विश्व के दु:खी आत्माओं को सकाश द्वारा सुख-शान्ति की अंचली देने वाली आत्मायें, हर समय अपने जमा के खाते में भरपूर रहने वाले अति तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से:- (दादी जी की माइनर सर्जरी (एक छोटा आपरेशन) ग्लोबल हॉस्पिटल में १५ तारीख को होना है)

अशरीरी बनने का अभ्यास तो पक्का है ही, इसलिए शरीर का हिसाब सहज चुक्तू हो जाता है। शक्तियां बहुत जमा हैं। बापदादा मस्तक में चमकते हुए शब्दों में देख रहे हैं - बेफिक्र बादशाह। फिक्र बाप को है, आप बेफिक्र बादशाह हैं। आदि से साथी रहे हैं तो साथी का जो भी कुछ होता है वह बाप ले लेता है। सभी की दुआयें आपके साथ हैं। दुआओं का खाता कितना है? बहुत जमा है ना? जितनों को दुआयें सारे दिन में देते हैं तो बहुत गुणा होकर मिलती हैं। इसलिए देने वाले को देना नहीं है, जमा होना है। आपका स्टॉक तो सब जमा है ही। एक्जैम्पुल हो इसलिए एक्जाम में भी एक्स्ट्रा मार्क्स मिलने के अधिकारी हो। यह है बाप और परिवार का स्नेह। आपके हर कदम में दुआयें बिखरी हुई हैं।

सभी एक्जैम्पुल देखकर खुश होते हो ना? खुश होते हो या सोचते हो दादियां ही मिलती हैं, हम तो मिलते नहीं। दादियों को देखकर खुश होते हो? खुश होते हैं, लेकिन खुद भी मिलने चाहते हैं। दो लड्डू खाने चाहते हैं एक लड्डू नहीं। बहुत अच्छा। डबल फारेनर्स ने अपना चांस अच्छा ले लिया है, होशियार

हैं। आपकी दादी (जानकी दादी) बहुत होशियार है।

फिर भी बहुत लक्की हो, पीछे आने वालों को तो इतना भी नहीं मिलेगा। अभी देखेंगे डबल फारेनर्स क्या कमाल करते हैं। इस वर्ष में ही करना है ना? कि 99 में करना है। (6 मास में) इसलिए नवम्बर में पहला चांस फारेनर्स को है। अच्छा - सभी ठीक हैं। अच्छी सेवा कर रहे हैं। ओमशान्ति।

30-3-98

''सर्व प्राप्तियों की स्मृति इमर्ज कर अचल स्थिति का अनुभव करो और जीवन मुक्त बनो''

आज भाग्य विधाता बाप अपने विश्व में सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर बच्चे के भाग्य की महिमा स्वयं भगवान गा रहे हैं। बाप की महिमा तो आत्मायें गाती हैं लेकिन आप बच्चों की महिमा स्वयं बाप करते हैं। ऐसे कभी स्वप्न में भी सोचा कि हमारा इतना श्रेष्ठ भाग्य बना हुआ है लेकिन बना हुआ था, बन गया। दुनिया के लोग कहते हैं भगवान ने हमको रचा लेकिन न भगवान का पता है, न रचना का पता है। आप हर एक भाग्यवान बच्चा अनुभव और फ़खुर से कहते हो कि हम शिव वंशी ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियां हैं। हमको मालूम है कि हमें बापदादा ने कैसे रचा! चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बुजुर्ग पाण्डव है, शक्तियां हैं किसी से भी पूछेंगे आपका बाप कौन है, तो क्या कहेंगे ? फ़लक से कहेंगे ना कि हमको शिव बाप ने ब्रह्मा बाप द्वारा रचा इसलिए हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान से डायरेक्ट मिलते हैं, न सिर्फ परम आत्मा वा भगवान हमारा बाप है लेकिन वह बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरू भी है। सबको यह नशा है ? (ताली बजाई) एक हाथ की ताली बजाना - अभी यह भी एक्सरसाइज़ बुजुर्गो को सिखानी पड़ेगी। बच्चों को खुश देख बापदादा भी खुशी में झूलते हैं और सदा कहते - वाह मेरे हर एक श्रेष्ठ भाग्यवान विशेष आत्मायें.....। बाप के रूप में परमात्म पालना का अनुभव कर रहे हो। यह परमात्म पालना सारे कल्प में सिर्फ इस ब्राह्मण जन्म में आप बच्चों को प्राप्त होती है, जिस परमात्म पालना में आत्मा को सर्व प्राप्ति स्वरूप का अनुभव होता है। परमात्म प्यार सर्व संबंधों का अनुभव कराता है। परमात्म प्यार अपने देह भान को भी भुला देता, साथ-साथ अनेक स्वार्थ के प्यार को भी भुला देता है। ऐसे परमात्म प्यार, परमात्म पालना के अन्दर पलने वाली भाग्यवान आत्मायें हो। कितना आप आत्माओं का भाग्य है जो स्वयं बाप अपने वतन को छोड़ आप गॉडली स्टूडेन्टस को पढ़ाने आते

हैं। ऐसा कोई टीचर देखा जो रोज़ सवेरे-सवेरे दूरदेश से पढ़ाने के लिए आवे ? ऐसा टीचर कभी देखा ? लेकिन आप बच्चों के लिए रोज़ बाप शिक्षक बन आपके पास पढ़ाने आते हैं और कितना सहज पढ़ाते हैं। दो शब्दों की पढ़ाई है - आप और बाप, इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो सारी नॉलेज समाई हुई है। और पढ़ाई में तो कितना दिमाग पर बोझ पड़ता है और बाप की पढ़ाई से दिमाग हल्का बन जाता है। हल्के की निशानी है ऊंचा उड़ना। हल्की चीज़ स्वत: ही ऊंची होती है। तो इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है। तो दिमाग हल्का हुआ ना! तीनों लोकों की नॉलेज मिल जाती है। तो ऐसी पढ़ाई सारे कल्प में कोई ने पढ़ी है। कोई पढ़ाने वाला ऐसा मिला। तो भाग्य है ना! फिर सतगुरू द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है जो सदा के लिए क्या करूं, कैसे चलूं, ऐसे करूं या नहीं करूं, क्या होगा..... यह सब क्वेश्चन्स समाप्त हो जाते हैं। क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है - फालो फादर। साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फालो करो। दोनों बाप और दादा को फालो करना अर्थात् क्वेश्चन मार्क समाप्त होना वा श्रीमत पर चलना। यह मुश्किल है ? पूछने की आवश्यकता पड़ती है क्या ? कापी करना है, अपना दिमाग नहीं चलाना है। बाप समान बनना अर्थात् फालो फादर करना। मुश्किल है या सहज है ? सहज है ना ? ३० साल वाले हाथ उठाओ, अच्छा ३० साल में मुश्किल लगा या सहज है ? अभी देखो ३० साल वालों को भी सहज लगा तो आप जो पीछे-पीछे आये उन्हों के लिए मुश्किल है या सहज है ? सहज है ना ? (गर्मी के कारण सभी के हाथों में रंग-बिरंगी पंखे हैं जो हिला रहे हैं) अच्छा है, पंखों की रिमझिम भी अच्छी लग रही है। सीन अच्छी है। नवीनता होनी चाहिए ना। तो इस ग्रुप की यह भी नवीनता है, यह भी टी.वी. में आ गया। अच्छा है सभी भाग-भाग कर पहुंच गये हैं, बापदादा भी स्नेह की मुबारक देते हैं। देखो, और जो भी हद के गुरू होते हैं कितने वरदान देते हैं, एक या दस, ज्यादा नहीं देते हैं। लेकिन आपको सतगुरु द्वारा रोज़ वरदान मिलता है। ऐसा गुरू कब देखा ? नहीं देखा ना! आप लोगों ने ही देखा

लेकिन कल्प-कल्प देखा। तो सदा अपने भाग्य की प्राप्तियों को सामने रखो। सिर्फ बुद्धि में मर्ज नहीं रखो, इमर्ज करो। मर्ज रखने के संस्कार को बदलकर इमर्ज करो। अपनी प्राप्तियों की लिस्ट सदा बुद्धि में इमर्ज रखो। जब प्राप्तियों की लिस्ट इमर्ज होगी तो किसी भी प्रकार का विघ्न वार नहीं करेगा। वह मर्ज हो जायेगा और प्राप्तियां इमर्ज रूप में रहेंगी।

बापदादा जब सुनते हैं कि आज किसी भी कारण से कोई-कोई बच्चे मेहनत करते हैं, युद्ध करते हैं, योग लगाने चाहते लेकिन लगता नहीं है, सोल कान्सेस के बदले बॉडी कान्सेस में आ जाते हैं तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता है। कारण क्या ? अपने भाग्य की प्राप्तियां इमर्ज नहीं रहती, मर्ज रहती हैं। फिर जब कोई याद दिलाता है तो सोचने लगते हैं होना तो ऐसा चाहिए.....! इसलिए बहुत सहज पुरुषार्थ है - प्राप्तियों को इमर्ज रखो। जब से ब्राह्मण बनें तब से अपने भाग्य को स्मृति में रखो। हलचल में नहीं आओ, अचल बनो क्योंकि यहाँ आबू में यादगार क्या है ? अचलघर है या हलचल घर है ? अचलघर है ना ? यह किसका यादगार है ? आपका यादगार है ना ? तो जब भी कोई सूक्ष्म पुरुषार्थ का मार्ग मुश्किल लगे, बुद्धि ज्यादा हलचल में हो, तो अपने यादगार को स्मृति में लाओ। कई बार बच्चे ज्ञान की प्वाइंट बोलते भी हैं कि मैं आत्मा हूँ, ड्रामा है, यह तो विघ्न है, यह तो साइडसीन है, बोलते भी रहते लेकिन हिलते भी रहते। हिलते-हिलते बोलते रहते। जब ऐसी बुद्धि बन जाए जो अचल नहीं हो सके तो मधुबन का अचलघर याद रखो। यह तो स्थूल चीज़ है ना! सूक्ष्म तो नहीं है। आंखों से देखने की चीज़ है, मेरा यादगार अचलघर है, हलचल घर नहीं है क्योंकि बापदादा इस वर्ष को सर्व बच्चों के प्रति मुक्ति वर्ष मनाना चाहते हैं। ऐसा नहीं हो हाथ उठवायें तो कोई का उठे, कोई का नहीं उठे, नहीं। सभी खुशी-खुशी से हाथ की ताली बजावे, (सभी बजाने लगे) चलो अभी बजा दी तो ठीक है, लेकिन ऐसे ही बापदादा इस वर्ष के समाप्ति में इतनी ज़ोर से ताली बजाते देखे। अभी तो बजाई अच्छा है लेकिन तब भी बजाना। बजायेंगे ? देखो हाथ की ताली बजाके तो खुश कर दिया लेकिन बापदादा नये वर्ष में जो अपना १८ जनवरी विशेष ब्रह्मा बाप के शरीर से मुक्त होने का दिन है, तो १८ जनवरी

में बापदादा फिर हाथ उठवायेगा कि मुक्ति वर्ष मनाया या सिर्फ सोचा ? मनाना है, मनाना है - सोचते तो नहीं रह गये, स्वरूप में लाया वा सोचते-सोचते लास्ट में भी सोचते रहेंगे ! यह रिजल्ट बापदादा देखने चाहते हैं। दिखायेंगे ? अच्छा। याद रहेगा ना ! प्राप्तियों को सामने रखो। बाप की याद के साथ, बाप ने जो दिया वह भी इमर्ज करो - क्या बनाया और क्या मिला !

बापदादा इस वर्ष के बाद हर बच्चे को जीवन-मुक्त स्थिति में देखेंगे। भविष्य में जीवनमुक्त होंगे लेकिन संस्कार जीवनमुक्त के अभी से ही इमर्ज करने हैं। और निरन्तर कर्मयोगी, निरन्तर सहज योगी, निरन्तर मुक्त आत्मा के संस्कार अभी से अनुभव में लाओ, क्यों ? बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि समय का परिवर्तन आप विश्व परिवर्तक आत्माओं के लिए इन्तजार कर रहा है। प्रकृति आप प्रकृतिपति आत्माओं का विजय का हार लेके आवाह्न कर रही है। समय विजय का घण्टा बजाने के लिए आप भविष्य राज्य अधिकारी आत्माओं को देख रहे हैं कि कब घण्टा बजायें, भक्त आत्मायें वह दिन सदा याद कर रही हैं कि कब हमारे पूज्य देव आत्मायें हमारे ऊपर प्रसन्न हो हमें मुक्ति का वरदान देंगी ! दु:खी आत्मायें पुकार रही हैं कि कब दु:ख हर्ता सुख कर्ता आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी ! इसलिए यह सब आपके लिए इन्तजार वा आवाह्न कर रहे हैं। इसलिए हे रहमदिल, विश्व कल्याणकारी आत्मायें अभी इन्हों के इन्तजार को समाप्त करो। आपके लिए सब रुके हैं। आप सब मुक्त हो जाओ तो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भगत मुक्त हो जाएं। तो मुक्त बनो, मुक्ति का दान देने वाले मास्टर दाता बनो। अभी विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी के ताजधारी आत्मायें बनो। जिम्मेवार हो ना ! बाप के साथ मददगार हो। क्या आपको रहम नहीं आता, दिल में दु:ख के विलाप महसूस नहीं होते। हे विश्व परिवर्तक आत्मायें अभी अपने जिम्मेवारी की ताजपोशी मनाओ। अभी फंक्शन तो बहुत किये, लेकिन फंक्शन की रिजल्ट क्या ? बस सिर्फ गोल्डन चुन्नी और ताज पहन लिया, मनाया .... इसमें बापदादा भी खुश है लेकिन चुन्नी पहनना, माला पहनना, चिंदी लगाना, पाण्डवों ने पगड़ी भी ताज मुआफ़िक पहनी, तो यह मनाना अर्थात् जिम्मेवारी सम्भालना। बच्चे खुश हुए, बाप उससे भी ज्यादा खुश हुए लेकिन भविष्य क्या ! दुपट्टा अलमारी

में, चिंदी अलमारी में सम्भल गई, बस यही मनाना है। नहीं। यह दुपट्टा गोल्डन स्थिति की याद निशानी है। अलमारी में सिर्फ नहीं रख देना लेकिन मन में स्मृति में रखना। मनाना अर्थात् बाप के कार्य में जिम्मेवार बनना। पसन्द है ना! या चुन्नी पहन ली बहुत अच्छा हुआ? अच्छा हुआ भी। बापदादा भी समझते हैं बहुत अच्छा हुआ। लेकिन अविनाशी सहयोगी बनना।

इस वर्ष के लिए जो बापदादा ने इशारा दिया इसके लास्ट में १८ जनवरी में, मुक्ति वर्ष का उत्सव मनायेंगे। ताली बजाने वाले समझते हैं हम बनेंगे? फिर यह नहीं कहना कि बाबा बनने तो चाहते थे लेकिन क्या करें, यह हो गया, वह हो गया। ऐसी बातों से भी मुक्ति। बनना ही है। क्या करें, नहीं। इस भाषा से भी मुक्ति। होना ही है, बनना ही है, कुछ भी हो जाए। बापदादा ने पहले भी कहा १०० हिमालय जितने बड़े ते बड़े विघ्न भी आ जाएं तो भी हटेंगे नहीं, हार नहीं खायेंगे, ताजपोशी मुक्ति वर्ष अवश्य मनायेंगे। बापदादा रोज़ चार्ट देखेगा। ऐसे नहीं यहाँ से जाओ तो ट्रेन में ही कहो पता नहीं क्या हो गया, घर में गये तो बगुले और हंस की लड़ाई लग गई, ऐसे नहीं कहना यह हो गया, यह हो गया ....। यह नहीं सुनेंगे। आपके पत्र वेस्ट पेपर बॉक्स में डालेंगे, सुनेंगे नहीं। दृढ़ संकल्प करो - होना ही है। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता नहीं हो, असम्भव है। तो सभी दृढ़ संकल्प वाले हैं ना। टीचर्स हाथ उठाओ, टीचर्स बहुत हैं। सारे सेन्टर्स खाली करके आये हैं क्या?

देखो एक खुशखबरी सुनाते हैं - बापदादा ने देखा, अभी देखा है, सुना है कि सर्व मधुबन वालों ने अपने परिवर्तन का लक्ष्य बहुत अच्छा रखा है, लक्षण तो देखेंगे लेकिन लक्ष्य बहुत अच्छा रखा है, अपने में अन्तर जो आया है वह भी लिखा है लेकिन बापदादा को खुशी है अन्तर आना शुरू हुआ, आगे होता रहेगा। लेकिन सभी ने अपने दृढ़ संकल्प का उमंग-उत्साह अच्छा दिखाया है। अभी कागज में है लेकिन कागज में भी पहला कदम तो है। तो बापदादा को खुशी हुई क्यों? सारे वर्ल्ड के लिए हे अर्जुन मधुबन निवासी हैं। निमित्त मधुबन निवासी हैं, सेकण्ड नम्बर देश-विदेश की निमित्त सेवाधारी टीचर्स हैं और सर्व सहयोगी साथी सारा परिवार ब्राह्मण आत्माये हैं। तो मधुबन का नक्शा बापदादा

देखेंगे कि बिल्कुल बदला हुआ दिखाई दे। मधुबन वाले तो कम आये होंगे। कईयों ने तो लिखा ही नहीं है। आगे बैठने वालों ने कम लिखा है, बहुत बिजी रहे हैं। लेकिन जब काम मिलता है तो लिखने में भी मार्क्स जमा होती हैं। अगर नहीं लिखा तो मार्क्स एकस्ट्रा कम हो गई, नुकसान कर दिया। जो भी डायरेक्शन मिलते हैं, डायरेक्ट बाप द्वारा मिलते हैं, चाहे निमित्त आत्मायें दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेलापन करना। आगे के लिए बापदादा बता देता है कि मार्क्स जमा नहीं हुई। इसलिए इसको महत्व देना अर्थात् महान बनना। हल्की बात नहीं करो। बच्चे बड़े चतुर हैं, कहेंगे बापदादा तो जानते ही हैं ना। जानते तो हैं लेकिन कहा क्यों? जानते हुए कहा ना! तो ऐसे छुड़ाना नहीं चाहिए, बहुत ऐसे कार्य हैं, छोटे-छोटे जिसको हाँ जी करने में एक्स्ट्रा मार्क्स जमा होती हैं। कई ऐसे स्टूडेन्टस हैं जो किसी भी पास्ट के संस्कार के वश बहुत अच्छे उमंग-उत्साह में बढ़ते हैं लेकिन कोई न कोई सुनहरी धागा, बहुत महीन धागा उनको आगे बढ़ने नहीं देता। वह समझते भी हैं कि यह महीन धागा रहा हुआ है, लेकिन.... लेकिन ही कहेंगे। लेकिन ऐसे भी पुरुषार्थी हैं जो छोटी-छोटी कामन बातों में हाँ जी करने से मार्क्स ले लेते हैं। और हो सकता है कि वह थोड़ी-थोड़ी मार्क्स इक्ट्ठी होते हुए वह आगे भी निकल सकते हैं, ऐसे भी बापदादा के पास एक्जैम्पुल के रूप में हैं इसलिए सहज तरीका है छोटी-छोटी हाँ जी करने में मार्क्स जमा करते जाओ। कट नहीं करो, जमा करो। बाकी बापदादा ने देखा मैजारिटी ने अपना उमंग-उत्साह अच्छा दिखाया है इसलिए दृढ़ संकल्प के लिए विशेष उन मधुबन निवासी बच्चों को बापदादा हाँ जी करने की मुबारक देते हैं। यादप्यार भी दे रहे हैं। लाख-लाख गुणा यादप्यार दे रहे हैं। क्यों? मधुबन है बापदादा के स्वरूप को प्रत्यक्ष करने का शीशमहल। तो एक बात की तो खुशी है, अभी कागज में आया हुआ, कर्म में लाना ही है। ठीक है ना! अच्छा। मुबारक हो।

३० वर्ष वाले तो बहुत मौज में हैं ना! (१००० आये हैं) देखो बापदादा कहेंगे उठ जाओ, तो मातायें इसके बजाए आगे आ जायेंगी, इसलिए उठाते नहीं हैं। सेरीमनी वाले हाथ खड़ा करो। बापदादा को इस ग्रुप के लिए बहुत-बहुत-

बहुत दिल से सम्मान है क्यों ? यही पाण्डव हैं, यही मातायें हैं जिन्होंने सेवा की स्थापना में, सेन्टर्स स्थापन करने में जब बेगरी लाइफ थी, बेगरी लाइफ में सेन्टर खुले हैं, ऐसे आईवेल के समय इस सेना ने अपने तन-मन-धन से निमित्त बन के सेवास्थान स्थापन किये हैं। आईवेल के समय जो सहयोगी बनता है उनका आठ आना, आठ करोड़ बन जाते हैं। बापदादा को याद है - खुद बांधेली होते हुए भी एक कटोरी में आटा, एक कटोरी में चीनी, एक कटोरी में घी, ऐसे कटोरी-कटोरी करके लाती थी। तो सोचो कितने सच्ची दिल वाले रहे। अपने घर खर्चे से बापदादा के सेन्टर चलाये हैं, अपने पर्सनल जमा खाते से, अपने खर्चे से बचत करके सेन्टर स्थापन किये हैं, तो कितना भाग्य है इन्हों का! ऐसे समय पर सहयोगी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं। इन्हों के अनुभव बहुत अच्छे हैं, सारा भागवत इन्हों का है। इसलिए बापदादा खुश हैं और सभी बहुत उमंग-उत्साह से प्रयत्न कर पहुंच गये हैं, उसके लिए भी बापदादा खुश हैं। लकड़ियां लेके चली तो आई हैं। आपको दो टांगे हैं, इन्हों को तीन टांगे हैं। जब चलती हैं तो सीन तो अच्छी लगती है ना। इन्हों को चलाके देखो। कल इन्हों की थोड़ी यात्रा निकालना, क्लास से भण्डारे तक बस। देखना कैसे चलती हैं, बहुत अच्छी सीन लगेगी। कोई भी गिरना नहीं। अगर गिरने वाले हो तो बैठ जाना, गिरना नहीं। देखो बापदादा तो चाहते हैं इन्हों को डांस करायें लेकिन आप सब डिस्टर्व हो जायेंगे, इसलिए बैठे ही बैठे खुशी में नाचो, हाथ पांव से नहीं। अच्छा है। आप लोगों को भी अच्छा लगा ना। बुजुर्गों की दुआयें बहुत अच्छी होती हैं। पाण्डव भी अच्छे हैं, पाण्डवों ने भी सहयोग कम नहीं दिया है। भाग-दौड़ करने वाले तो पाण्डव ही रहे हैं। इसीलिए पाण्डवों को भी दिल से बापदादा और सर्व परिवार की तरफ से बहुत-बहुत दुआयें हैं। अच्छा।

(बाल ब्रह्मचारी युगल भी बैठे हैं) जो बाल ब्रह्मचारी हैं वह अपनी जगह पर ही उठकर खड़े हो जाओ, अच्छा यह इकट्ठे बैठे हैं। हाथ हिलाओ। देखो अब तक जो विजय का व्रत लिया है उसमें रहने का इनाम तो मिलना ही है, मिला भी है। आगे के लिए सदा स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता का खण्डन नहीं हो। अखण्ड पवित्रता- यह है बाल ब्रह्मचारियों का लक्ष्य और लक्षण। अभी

तक की मुबारक है लेकिन आगे भी बापदादा यही कहेंगे कि सदा अमर भव के वरदानी रहना ही है। अमर हैं ना! खण्डित तो नहीं ना! देखो खण्डित मूर्ति का कभी पूजन नहीं होता है, तो कोई भी व्रत अगर खण्डित होता है तो वह अमर वरदानी आत्मा नहीं बन सकता है और ऐसा पूज्य जो द्वापर से कलियुग अन्त तक पूज्य बने, ऐसे इष्ट नहीं बन सकते, इसलिए सदा अमरभव। अच्छी हिम्मत रखी है, हिम्मत की मदद सदा मिलती रहेगी, अधिकारी हो लेकिन अखण्ड बाल ब्रह्मचारी। ५ वर्ष, १० वर्ष - यह नहीं, अखण्ड। जहाँ तक ब्राह्मण जीवन है, यह अमर भव के वरदानी रहें। ठीक है ना! मंजूर है? हिम्मत है? एक हाथ की ताली बजाओ।

(१० साल वाले २०० डबल विदेशी भाई बहिनों की भी सेरीमनी है) यह तो बहुत लकी हैं। डबल फारेनर्स ने भी नम्बर जीत लिया है। बापदादा को खुशी है कि डबल फारेनर्स पीछे नहीं रहे हैं, नम्बर सबमें अच्छा ले रहे हैं। यह दिखाता है कि जैसे अभी थोड़े समय में मेकप कर रहे हैं, ऐसे ही लास्ट में भी तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नम्बर अच्छे ते अच्छे ले लेंगे। ऐसे निश्चय है ना! निश्चय है? १०८ की माला में आना है ना? अच्छा - १०८ की माला डबल फारेनर्स की होगी और इन्डिया वालों की? आपकी तो होगी ना। बापदादा ने छुट्टी दी है जितने भी १०८ में आने चाहें, चाहे भारत वाले, चाहे विदेश वाले दोनों को छुट्टी है, बापदादा माला बढ़ा लेंगे, लेकिन आपको अवश्य डालेंगे, रहने नहीं देंगे। समझा। ट्रांसलेशन हो रही है। अच्छा है। ट्रांसलेशन करने वाले को भी मुबारक।

बापदादा तो इन्हों को **(सामने बैठे हुए मधुबन वालों को)** भी मुबारक देते हैं, जो आगे आगे काम के लिए बैठे हैं, कैबिन में भी बैठे हैं, तपस्या अच्छी करते हैं। एक बात में तो मार्क्स ले लेंगे, दिल से सेवा में तो मार्क्स ले लेंगे। यह भी अच्छा है, इस खाते में आपको एक्स्ट्रा मार्क्स मिलेंगी। दिल से करना। तंग होके नहीं करना, अरे क्या करें - यह तो तंग करके रखा है, ऐसे नहीं। कितना भी तंग करें लेकिन आप हर्षित रहना। प्यार से कहो आओ बहिनें, आओ भाई, क्या चाहिए.... ठीक है ना! या नहीं-नहीं, अभी नहीं। भले चीज़ नहीं दो, चीज़ देने की नहीं है, नहीं दे सकते हैं कोई हर्जा नहीं, लेकिन मीठे बोल तो दे सकते हो

ना। मीठे बोल भी आधी चीज़ मिलने का अनुभव करा देते हैं। अभी नहीं, अभी नहीं जाओ, जाओ .... ऐसे नहीं। हाँ जी। करेंगे, देखेंगे, देंगे। दिल तो ले लो, चीज़ तो भले नहीं दो और सन्तुष्ट करने का लक्ष्य होगा तो चीज़ भी आ जाती है। बापदादा ने देखा है अगर कोई भी स्टॉक वाले की दिल है कि मुझे यह करना ही है, पता नहीं कहाँ से चीजें ले आते हैं, कहाँ से स्टॉक भर जाता है। सिर्फ दिल हो। मधुबन वाले हैं बहुत होशियार। चीज़ लाने में भी होशियार हैं। होशियार तो हैं, तभी तो ड्युटी मिली है ना। अगर ड्रामा ने निमित्त बनाया है तो कोई न कोई विशेषता तो है जिस विशेषता ने मधुबन में निमित्त बनाया है। सिर्फ उस विशेषता को समय प्रति समय थोड़ा सा शान्त भाव, प्रेम भाव से निमित्त बनो। बाकी अथक तो हैं। मधुबन जैसे अथक और कहाँ भी नहीं हैं। अथक भव का वरदान तो मधुबन को है। अभी इस वर्ष मधुबन क्या करेगा?

अभी मुक्त वर्ष में नम्बरवन मधुबन निवासी। ठीक है? हो सकता है या मुश्किल है? (हाँ जी) फिर तो बापदादा मधुबन वालों को भी गोल्डन बैज देगा। मधुबन वालों को बैज देना है और सभी को दिया है मधुबन वालों को मुक्त वर्ष की प्राइज़ देंगे। अच्छा बैज देंगे आपको। अच्छा।

(राजस्थान ने सेवा सम्भाली है)– राजस्थान ने इतनी भीड़ को सम्भाल लिया ना। देखो बापदादा को कहना नहीं चाहिए, लेकिन इशारा दे रहे हैं सभी इतने आये, बहुत-बहुत मुबारक हो, भले आये। सिर्फ एक बात बापदादा कहे, सुनने के लिए तैयार हो? खास टीचर्स सुनने के लिए तैयार हैं? अच्छा। भले आये, पदमगुणा वेलकम, परन्तु... इतला देना यह टीचर्स का फ़र्ज है। अचानक आ गये, बापदादा को तो खुशी है, बापदादा तो वतन में रहते हैं, लेकिन आप लोग तो साकार में रहते हो ना, तो देखो आप लोगों को ही धूप में टेन्ट में सोना पड़ा, चाहे बच्चों को खुशी है, कोई बुरा नहीं मानते हैं लेकिन टीचर्स का फ़र्ज है संख्या पहले से सुनाना। इतनी तकलीफ जो थोड़ी बहुत हुई है, वह नहीं होती। जो हुआ वह बहुत अच्छा हुआ, यह शान्तिवन का हाल तो भर गया ना। यह तो अच्छा हुआ। सिर्फ इतला करने से आप लोगों का बहुत-बहुत अच्छा प्रबन्ध होता। आगे के लिए आप आयेंगे, आपका स्वागत है, बापदादा ने यह भी सीन

देखी कि कितने लोग धूप में स्थान मिलने के पहले बैठे हैं, बापदादा को अच्छा नहीं लगता। पहले से पता होने से आपकी रिजर्वेशन बुक हो जाती, फिर आपको ऐसे बैठना नहीं पड़ता। इसलिए जो थोड़ी बहुत तकलीफ हुई, उसका कारण इतला नहीं हुआ। इसलिए आगे आराम से आना, आओ भले आओ, लेकिन आराम से आना। सुना टीचर्स ने। आगे से ऐसे नहीं करना। पंखे तो ठीक मिले हैं ना। पीछे वाले पंखे हिलाओ। (१५ हजार पंखे सबके हाथों में हैं) बाहर बैठने वालों को पहले से ही बापदादा नम्बरवन यादप्यार दे रहे हैं और मधुबन वाले जो त्याग कर खास सिक्युरिटी पर सेवा प्रति बैठे हैं, उन्हों को विशेष लाख गुणा मुबारक हो। सम्भाल रहे हैं ना! और आज जो देश विदेश में दूर बैठे समीप का अनुभव कर रहे हैं, उन सभी देश वालों को बापदादा खास-खास-खास यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा साधन है। अच्छा।

राजस्थान, कानपुर किदवई नगर वाले, इन्दौर वाले जिन्होंने भी मदद की है उठो। अच्छा है देखो डबल पुण्य मिल गया। वर्तमान सेवा की दुआयें मिली और भविष्य सेवा की प्रालब्ध जमा हुई। तो राजस्थान या जो भी मददगार बने, उन सभी को बापदादा दिल से सदा सेवा में तख्त पर रह दुआयें लेते रहो, दुआयें देते रहो ऐसे अमर रहो, अच्छा पार्ट बजाया, उसके लिए सभी खुशी से आपको धन्यवाद दे रहे हैं।

डबल विदेशियों की सीजन अच्छी रही ? सभी डबल विदेशी इस सीजन में विशेष जमा का खाता बढ़ा के जा रहे हैं! ऐसे है ? जमा किया है ? बहुत अच्छा। अच्छा।

अभी अगर आप सभी को अचानक डायरेक्शन मिले कि अभी-अभी अशरीरी बन जाओ तो बन सकते हो कि हलचल होगी ? क्यों ? लास्ट समय का यही अभ्यास पास विद आनर बनायेगा। तो अभी बापदादा भी कहते हैं एक सेकण्ड में सब बातों को किनारे कर अशरीरी भव। (ड्रिल) अच्छा।

चारों ओर के अति श्रेष्ठ भाग्यवान, परमात्म पालना के अधिकारी आत्मायें, परमात्म पढ़ाई के अधिकारी, परमात्मा सतगुरू के वरदानों के अधिकारी, सदा दृढ़ता द्वारा सफलता के अधिकारी, सदा अखण्ड योगी, अचल योगी, सदा विश्व

परिवर्तन की जिम्मेवारी के ताजधारी, सदा सर्व प्राप्तियों को इमर्ज रूप में अनुभव करने वाले ऐसे विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(आज बापदादा को दादी जी ने पूरे डायमण्ड हाल में चक्र लगवाया, बापदादा ने सभी भाई बहिनों को दृष्टि दी - सभा में करीब २०-२१ हजार भाई बहिनें हाल के अन्दर-बाहर उपस्थित थे)

दादियों से:- सीजन की समाप्ति निर्विघ्न हुई? बापदादा यही वर्तमान समय देखने चाहते हैं कि जो विशेष निमित्त आत्मायें हैं, जैसे मुख का आवाज साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुंचता है, ऐसे मन का आवाज संकल्प यह भी ऐसे ही पहुंचे, जैसे यह साइन्स द्वारा मुख का आवाज पहुंचता है। जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, इशारे मिलते थे, और उसी इशारे से कईयों को जागृति भी आई, ऐसे अभी जो आदि में हुआ वह अन्त में, पहले तो स्थापना थी तो एक ब्रह्मा बाप द्वारा साक्षात्कार हुआ, लेकिन अभी प्रैक्टिकल में शक्तियों का पार्ट है, ब्रह्मा बाप शिव बाप गुप्त है, बैकबोन है लेकिन स्टेज पर शक्तियों का पार्ट है, तो शक्तियां अनन्य भी बहुत हैं। वह एक ब्रह्मा बाप ने किया, अभी ऐसी मनोबल की शक्ति प्रत्यक्ष हो जैसे मुख का आवाज क्लीयर पहुंचता है ना। ऐसे मन का आवाज धीरे-धीरे पहुंचता जाए, बाप आ गया। सिर्फ यह आवाज भी पहुंच गया तो ढूढ़ने तो लगेंगे। फिर आपेही पहुंचेंगे। लेकिन यह मनोबल की सेवा अभी होनी चाहिए। यह सारे विश्व तक आवाज कुछ साइन्स और कुछ साइलेन्स की शक्ति द्वारा ही पहुंचेगा, जिसको मन का आवाज पहुंचेगा वह समझो ज्यादा समीप आयेंगे और जिसको मुख का आवाज पहुंचेगा, उनमें से नम्बरवार होंगे। इसलिए अभी यह साइलेन्स की विशेषता क्या है और साइलेन्स के बल से क्या-क्या कर सकते हैं, हो सकता है इस विषय पर ज्यादा अटेन्शन क्योंकि समय कम है और सेवा विश्व की हर आत्मा को सन्देश पहुंचाना है। इसलिए बापदादा ने कहा कि कुछ सुनायेंगे क्योंकि निमित्त तो आप हो वायुमण्डल में लहर फैलाने के निमित्त तो आप ही हैं। हैं ना? तो ऐसी लहर फैलाओ। सभी सहयोगी बन जाओ। अभी मन का आवाज मुख के आवाज से भी ज्यादा काम कर सकता है। तो ऐसे ग्रुप बनाओ जो इस कार्य के रुचि वाले हों

और इसकी रिहर्सल करते रहें। जैसे पहले शुरू में याद का अभ्यास किया, सेवा के नये-नये प्लैन्स बनाये तो उससे इतनी वृद्धि हुई है ना। अभी जैसे पहली रचना हुई, मुख द्वारा डायरेक्ट, फिर हुई मन्सा संकल्प द्वारा ब्रह्मा द्वारा, अभी है शक्तियों द्वारा, जो कहते हैं कि शक्तियों ने वाण चलाये। तो यह वाण जो संकल्प द्वारा स्पष्ट आवाज पहुंच जाए, कोई बुला रहा है, कोई कुछ कह रहा है। जैसे कोई-कोई को स्वप्न पीछे पड़ जाता है, जब तक वह काम पूरा नहीं करता तो बार-बार स्वप्न उसको जागृत करता रहता। कई रिधि सिधि वाले भी कुछ विधि से करते हैं। लेकिन योग की विधि द्वारा यह आवाज फैले। ऐसे सेवा के प्लैन बनाओ। जैसे अभी यह उत्सवों का वर्ष मनाया ना। अभी वह तो हो गया, अभी फिर ऐसी कोई लहर फैलाओ जो विहंग मार्ग की सेवा हो। मुख की विहंग मार्ग की सेवायें तो बहुत की। उसकी रिजल्ट तो है ही। अभी फिर कोई नवीनता। समझा। देखेंगे कौन-कौन इसमें नम्बर लेता है।

अच्छा। सभी ठीक हैं? सभी मिलकर सेवा कर रहे हैं। तो सेवा का पहाड़ भी पार हो जाता है। अच्छा। ओम् शान्ति।

शिवबाबा याद है? ओम् शान्ति २१-११-९८ ''अव्यक्त-बापदादा'' मधुबन

सेवा के साथ देह में रहते विदेही अवस्था का अनुभव बढ़ाओ

आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि बाप जानते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा चाहे लास्ट पुरुषार्थी भी है फिर भी विश्व में सबसे बड़े ते बड़े भाग्यवान है क्योंकि भाग्य विधाता बाप को जान, पहचान भाग्य विधाता के डायरेक्ट बच्चे बन गये। ऐसा भाग्य सारे कल्प में किसी आत्मा का न है, न हो सकता है। साथ-साथ सारे विश्व में सबसे सम्पत्तिवान वा धनवान और कोई हो नहीं सकता। चाहे कितना भी पदमपति हो लेकिन आप बच्चों के खजानों से कोई की भी तुलना नहीं है क्योंकि बच्चों के हर कदम में पदमों की कमाई है। सारे दिन में हर रोज़ चाहे एक दो कदम भी बाप की याद में रहे वा कदम उठाया, तो हर कदम में पदम... तो सारे दिन में कितने पदम जमा हुए? ऐसा कोई होगा जो एक दिन में पदमों की कमाई करे! इसलिए बापदादा कहते हैं अगर भाग्यवान देखना हो वा रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड आत्मा देखनी हो तो बाप के बच्चों को देखो।

आप बच्चों के पास सिर्फ एक स्थूल धन का खजाना नहीं, वो तो सिर्फ धन के साहूकार हैं और आप बच्चे कितने खजानों से भरपूर हैं! खजानों की लिस्ट जानते हो ना? यह स्थूल धन तो कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपके पास जो ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, सर्व गुणों का खजाना, खुशी का खजाना और सर्व को सुख-शान्ति का रास्ता बताने से जो दुआओं का खजाना मिलता है, यह अविनाशी खजाने सिवाए परमात्म बच्चों के अविनाशी किसके पास नहीं हैं। तो बापदादा को ऐसे खजानों के मालिक बच्चों पर कितना रूहानी नाज़ है। बापदादा सदा बच्चों को ऐसे सम्पन्न देख यही गीत गाते वाह बच्चे वाह! आपको भी अपने पर इतना रूहानी नाज़ अर्थात् नशा है ना! हाथ की ताली बजा सकते हो। (सभी ने तालियाँ बजाई) दोनों हाथ को क्यों तकलीफ देते हो,

एक हाथ की बजाओ। एक हाथ की ताली बजाना आता है ना! ब्राह्मणों का सब कुछ निराला है। ब्राह्मण शान्त पसन्द हैं इसलिए ताली भी शान्ति की ठीक है। तो नशा तो सभी को सदा है भी और आगे भी रहेगा। निश्चित है।

बापदादा समय के परिवर्तन की तीव्र रफ्तार को देख बच्चों के पुरुषार्थ की रफ्तार को भी देखते रहते हैं। **बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं।** आप सबका यह चैलेन्ज है कि बाप से मुक्ति जीवन-मुक्ति का वर्सा आकर लो। लेकिन आपको तो मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा मिल गया है ना? या नहीं मिला है? (मिला है) सतयुग में या मुक्तिधाम में मुक्ति व जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है। जीवन में रहते, समय नाज़ुक होते, परिस्थितियाँ, समस्यायें, वायुमण्डल डबल दूषित होते हुए भी इन सब प्रभाव से मुक्त, जीवन में रहते इन सर्व भिन्न-भिन्न बन्धनों से मुक्त एक भी सूक्ष्म बन्धन नहीं हो। ऐसे जीवन मुक्त बने हो? वा अन्त में बनेंगे? अब बनेंगे या अन्त में बनेंगे? जो समझते हैं अन्त में बनने के बजाए अभी बनना है, वा बने हैं या बनना ही है, वह हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) दोनों में मिक्स हाथ उठा रहे हैं, चतुर हैं। भले चतुराई करो। लेकिन बापदादा अभी से स्पष्ट सुना रहे हैं, अटेन्शन प्लीज़। हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से लेकिन बनाना जरूर है। जानते हो ना कि विधियाँ क्या हैं! इतने तो चतुर हो ना! तो बनना तो आपको पड़ेगा ही। चाहे चाहो चाहे नहीं चाहो, बनना तो पड़ेगा ही। फिर क्या करेंगे? (अभी से बनेंगे) आपके मुख में गुलाबजामुन। सबके मुख में गुलाबजामुन आ गया ना। लेकिन यह गुलाबजामुन है - अभी बन्धनमुक्त बनने का। ऐसे नहीं गुलाबजामुन खा जाओ।

हाल की शोभा बहुत अच्छी है। एकदम माला लगती है। यहाँ से आकर देखो तो ऐसे माला लगती है। यह कुर्सियों वालों की माला तैयार हो गई है। अच्छा है। कारणे-अकारणें जैसे अभी कुर्सी ली है ना ऐसे ही जब बापदादा फाइनल समय प्रमाण सीटी बजायेंगे कि जीवनमुक्ति की कुर्सी पर बैठ जाओ तो

भी बैठेंगे या अभी कुर्सी पर बैठे हैं? ऐसे नहीं कि धरनी पर बैठे हुए कुर्सी नहीं लेंगे, पहले आप। धरनी पर बैठना – यह है तपस्या की निशानी। तन्दरूस्ती की निशानी है। हेल्थ भी है, तपस्या द्वारा खजानों की वेल्थ भी है तो जहाँ हेल्थ है, वेल्थ है वहाँ हैपी तो है ही। तो अच्छा है - हेल्दी हो, वेल्दी हो।

तो बापदादा आज देख रहे थे कि बच्चों की तीन प्रकार की स्टेजेस हैं। एक हैं - पुरुषार्थी, उसमें पुरुषार्थी भी हैं और तीव्र पुरुषार्थी भी हैं। दूसरे हैं - जो पुरुषार्थ की प्रालब्ध जीवनमुक्त अवस्था की स्टेज में अनुभव कर रहे हैं। लेकिन लास्ट की सम्पूर्ण स्टेज है - **देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव।** तो तीन स्टेज देखी। पुरुषार्थ की स्टेज में ज्यादा देखे। प्रालब्ध जीवनमुक्त की, प्रालब्ध यह नहीं कि सेन्टर के निमित्त बनने की वा स्पीकर अच्छे बनने की वा ड्रामा अनुसार अलग-अलग विशेष सेवा के निमित्त बनने की..... यह प्रालब्ध नहीं है, यह तो लिफ्ट है और आगे बढ़ने की, सर्व द्वारा दुआयें लेने की लेकिन प्रालब्ध है जीवनमुक्त की। कोई बन्धन नहीं हो। आप लोग एक चित्र दिखाते हो ना! साधारण अज्ञानी आत्मा को कितनी रस्सियों से बंधा हुआ दिखाते हो। वह है अज्ञानी आत्मा के लिए लोहे की जंजीर। मोटे-मोटे बंधन हैं। लेकिन ज्ञानी तू आत्मा बच्चों के बहुत महीन और आकर्षण करने वाले धागे हैं। लोहे की जंजीर अभी नहीं है, जो दिखाई दे देवे। बहुत महीन भी है, रॉयल भी है। पर्सनाल्टी फील करने वाले भी हैं, लेकिन वह धागे देखने में नहीं आते, अपनी अच्छाई महसूस होती है। अच्छाई है नहीं लेकिन महसूस ऐसे होती है कि हम बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा देख रहे थे - यह जीवन-बन्ध के धागे मैजारिटी में हैं। चाहे एक हो, चाहे आधा हो लेकिन जीवनमुक्त बहुत-बहुत थोड़े देखे। तो बापदादा देख रहे थे कि हिसाब के अनुसार यह सेकण्ड स्टेज है जीवनमुक्त, लास्ट स्टेज तो है - देह से न्यारे विदेही पन की। उस स्टेज और जो स्टेज सुनाई उसके लिए और बहुत-बहुत-बहुत अटेन्शन चाहिए। सभी बच्चे पूछते हैं ee आयेगा क्या होगा? क्या करें? क्या करें, क्या नहीं करें?

बापदादा कहते हैं ee के चक्कर को छोड़ो। अभी से विदेही स्थिति का

बहुत अनुभव चाहिए। जो भी परिस्थितियां आ रही हैं और आने वाली हैं उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए। इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा। क्या होगा, इस क्वेश्चन को छोड़ दो। विदेही अभ्यास वाले बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती। चाहे प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद आनर होगा जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद आनर का सबूत रहेगा। बापदादा समय प्रति समय इशारे देते भी हैं और देते रहेंगे। आप सोचते भी हो, प्लैन बनाते भी हो, बनाओ। भले सोचो लेकिन क्या होगा!... उस आश्चर्यवत होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोचो लेकिन सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। और विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं। अभी लास्ट समय को सोचते हो लेकिन लास्ट स्थिति को सोचो।

चारों ओर की सेवाओं के समाचार बापदादा सुनते रहते हैं और दिल से सभी अथक सेवाधारियों को मुबारक भी देते हैं, सेवा बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से कर रहे हैं और आगे भी करते रहो लेकिन सेवा और स्थिति का बैलेन्स थोड़ा सा कभी इस तरफ झुक जाता है, कभी उस तरफ इसलिए सेवा खूब करो, बापदादा सेवा के लिए मना नहीं करते और जोर-शोर से करो लेकिन **सेवा और स्थिति का सदा बैलेन्स रखते चलो।** स्थिति बनाने में थोड़ी मेहनत लगती है और सेवा तो सहज हो जाती है। इसलिए सेवा का बल थोड़ा स्थिति से ऊंचा हो जाता है। बैलेन्स रखो और बापदादा की, सर्व सेवा करने वाले आत्माओं की, संबंध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की ब्लैसिंग लेते चलो। यह दुआओं का खाता बहुत जमा करो। अभी की दुआओं का खाता आप आत्माओं में इतना सम्पन्न हो जाए जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहेंगी। अनेक जन्म में दुआयें देनी हैं लेकिन जमा एक जन्म में करनी हैं।

इसलिए क्या करेंगे? **स्थिति को सदा आगे रख सेवा में आगे बढ़ते चलो।** क्या होगा, यह नहीं सोचो। ब्राह्मण आत्माओं के लिए अच्छा है, अच्छा ही होना है। लेकिन बैलेन्स वालों के लिए सदा अच्छा है। बैलेन्स कम तो कभी अच्छा, कभी थोड़ा अच्छा। सुना क्या करना है? क्वेश्चन मार्क सोचने के हिसाब से आश्चर्यवत होके सोचने को फिनिश करो, यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा....। वह स्थिति को नीचे ऊपर करता है। समझा।

नये-नये भी बहुत आये हैं, जो इस कल्प में पहले बारी मधुबन में आये हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। बापदादा नये-नये बच्चों को देख खुश होते हैं और बड़े खुशी से बापदादा वेलकम बच्चे, वेलकम बच्चे कर रहे हैं। अच्छा है जो फाइनल समाप्ति के पहले पहुंच गये हो। फिर भी मिलने के समय पर पहुंचे हो। इसलिए पीछे आने वाले अभी भी चांस है, आगे बढ़ने का। तो आप लोग गोल्डन चांस ले लो। अच्छा।

गुजरात से समर्पण वाली कुमारियों का ग्रुप आया है (अहमदाबाद मेले में २५ कुमारियों का समर्पण समारोह १२ नवम्बर को मनाया गया था, वे सभी बापदादा के सम्मुख बैठी थी) समर्पण तो हुए बहुत अच्छा हुआ। सेवा भी हुई, मनाया भी और सेवा का भाग्य भी बनाया। अभी और भी कोई समर्पण समारोह मनाना है वा मना लिया बस फिनिश हुआ? तो बापदादा यही कहेंगे कि यह पूरा ग्रुप बंधनमुक्त का समर्पण समारोह मनावे। है ताकत? अगर है तो हाथ की ताली बजाओ। एक दो को देखकर नहीं उठाना। अहमदाबाद को तो वरदान है, सेवा का फल भी है और सेवा का बल भी है। इसलिए ऐसा समर्पण समारोह मनाना। फिर बापदादा आफरीन देंगे। ठीक है ना! पहले मैं। इसमें दूसरों को नहीं देखना। पहले बड़े-बड़े करें फिर हम करेंगे। नहीं। पहले मैं। ठीक है। अच्छा - आपस में इस पर रूहरिहान करना और एक दो को वायदा याद कराते आगे बढ़ते रहना। बहुत अच्छा।

(एज्युकेशन विंग की ट्रेनिंग में लगभग १०० टीचर्स आये हैं) बहुत अच्छी ट्रेनिंग हुई, अच्छी लगी? अभी सेवा में आगे बढ़ेंगे, यह तो बहुत अच्छा।

परन्तु जो आज बापदादा ने कहा अपने आपको भी ट्रेन्ड करना। पहले स्व की ट्रेनिंग साथ में सर्व के प्रति ट्रेनिंग। तो डबल कार्य करते हुए आगे बढ़ते जाना। उड़ते जाना। उड़ने वाले हो ना? अच्छा। यह मधुबन की ट्रेनिंग को अविनाशी रखना। जैसे सेवा में चांस लेने का संकल्प रहता है, चांस लें, ऐसे ही स्व स्थिति में आगे बढ़ने का भी चांस लेते रहना। अच्छा है ना! बापदादा देखेंगे कौन नम्बर वन अर्थात् बैलेन्स में विन प्राप्त करने वाले हैं। बहुत अच्छा।

(पंजाब वालों ने पहले ग्रुप में सेवा की है) अच्छा बड़ा ग्रुप है। अच्छा चांस मिला है। पंजाब को बापदादा विशेष एक बात की मुबारक देते हैं। जानते हो कौन सी? पंजाब ने कलराठी जमीन को फलदायक बनाने में अच्छी उन्नति की है। प्रोग्रेस अच्छी है इसलिए मुबारक हो। और भी पंजाब शेर गाया हुआ है। आपकी दादी (चन्द्रमणी दादी) को भी पंजाब का शेर कहते थे। तो सभी शेर हो ना! तो शेर किसका शिकार करेंगे? बकरी का? नम्बरवन शेर वह है जो शेर का शिकार करे। अभी पंजाब की धरनी तो अच्छी बन गई है, अभी ऐसे विशेष वारिस बनाओ। यह है शेर का शिकार। कोई मण्डलेश्वर की विशेष सेवा करके दूसरी सीजन में लेकर आओ। देखेंगे अगली सीजन में पंजाब से कितने वारिस आते हैं। अच्छा - सेवा की खुशबू तो अच्छी है। सब सन्तुष्ट रहते भी हैं और सन्तुष्ट करते भी हैं। मुबारक हो।

DD>(डबल विदेशी भी बहुत आये हैं) विदेश का ग्रुप उठो। विदेश में भी एक विशेषता बापदादा को बहुत अच्छी लगती है। कौन सी? सभी को उमंग-उत्साह बहुत है कि विदेश के कोने-कोने में बाप का स्थान बनायें और बनाया भी है। इस वर्ष कितने नये स्थान बनाये हैं? (n७-n७४) अच्छा उमंग है कि सन्देश चारों ओर मिल जाए। यह लक्ष्य बहुत अच्छा है। जहाँ जाते हैं वहाँ कोई न कोई को निमित्त बनाने की सेवा का लक्ष्य अच्छा रखते हैं। यह विशेषता है। हर एक जितना हो सकता है उतना अपने आपको सेवा के निमित्त बनाने की आफर भी करते हैं और प्रैक्टिकल में भी करते हैं। यही सोचते हैं कि घर-घर में बाबा का घर हो, यह उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। इसलिए इस उमंग-उत्साह के लिए

बापदादा और एडवांस में आगे बढ़ने की मुबारक दे रहे हैं। बापदादा विदेशी अर्थात् विश्व कल्याण करने के निमित्त बनने वाले बच्चों को यही कहते हैं कि अब सेवा और विदेही अवस्था में नम्बरवन विदेशी बच्चों को बनना ही है। बनना है? कब? ६६ में या ७ हजार में बनना है? कब नहीं, अब। अव्यक्त बाप की पालना का प्रत्यक्ष सबूत देना है। जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बनें, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का बाप को रेसपान्ड देना - विदेही बनने का। सेवा और स्थिति के बैलेन्स का। ठीक है, मंजूर है? करना ही है। बापदादा यह नहीं सोचते – देखेंगे, सोचेंगे। नहीं। करना ही है। अपनी भाषा में बोलो - करना ही है। जो भी सभी टी.वी. में भी देख रहे हैं वह सभी भी ऐसे बोल रहे हैं ना? बापदादा देख रहे हैं। चाहे भारत में देख रहे हैं, चाहे फारेन में देख रहे हैं लेकिन सभी को उमंग आ रहा है हम करेंगे, हम करेंगे। हमें करना ही है। एडवांस में मुबारक हो। अच्छा।

(विदेश के बहुत से भाई बहिनें पहली बार आये हैं, रिट्रीट में आये हुए गेस्ट भी बैठे हैं)

बहुत अच्छा - सब नम्बरवन लेने वाले हैं। बहुत अच्छा, मेहमान बनकर आये और बाप के बच्चे अधिकारी बन गये। अधिकारी हो गये ना? अधिकारी हैं? बहुत अच्छा, अभी आगे बढ़ते रहना।

(हॉस्पिटल के ट्रस्टियों से) - सभी डबल ट्रस्टी हो। एक प्रवृत्ति में रहते ट्रस्टी और दूसरा हॉस्पिटल में रहते ट्रस्टी। हॉस्पिटल के भी ट्रस्टी तो जीवन में भी ट्रस्टी। अच्छा है। हॉस्पिटल आत्माओं की भी सेवा कर रही है और शरीर की भी सेवा कर रही है। तो डबल सेवा हो रही है इसलिए जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हो उन्हों को भी डबल दुआयें मिलती रहती हैं। बहुत अच्छे प्लैन बनाये हैं ना। सेवा का चांस लेना यह है चांसलर बनना। वह चांसलर नहीं, रूहानी युनिवर्सिटी के चांसलर। अच्छा है।

(आस्ट्रेलिया वाले ओलम्पिक गेम के समय बड़ा प्रोग्राम करने का प्लैन बना रहे हैं, बापदादा को प्लैन दिखाया) जहाँ उमंग-उत्साह है और

सबकी एकमत है। तो जहाँ एकमत है और उमंग-उत्साह है तो सफलता है ही है। अच्छा है भले करो। फारेन में नाम बाला करो। बहुत अच्छा।

जो भी सभी भारत से आये हैं, तो भारत वालों को तो विशेष नशा है कि बापदादा अवतरित भी भारत में होते हैं और साथ-साथ अगर मिलने आते हैं तो भी भारत में ही आते हैं। तो डबल नशा है ना! भारत ने ही विदेश में सन्देश दिया, तो भारत ने विदेश में भी अपने परिवार को ढूंढ एक परिवार बना दिया। इसलिए भारतवासी बच्चों का सदा महत्व है और भारत का महत्व बढ़ना है तो भारतवासियों का महत्व तो है ही। इसीलिए जो भी नये पुराने बच्चे आये हैं वह बहुत प्यार से पहुंचे हैं, बापदादा सभी बच्चों का स्नेह और चारों ओर सेवा के सहयोग को देख खुश हैं और बच्चे भी सदा खुश हैं। खुश रहते हो ना? कभी खुशी कम नहीं करना। यह स्पेशल बाप का खजाना है। इसलिए खुशी कभी नहीं छोड़ना। सदा खुश। अच्छा।

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान, सर्व श्रेष्ठ खजानों के मालिक, सदा सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखने वाले ज्ञानी तू आत्मा, सर्व शक्ति सम्पन्न आत्मायें, सदा बंधनमुक्त जीवनमुक्त आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

१२-१२-९८ ओम् शान्ति ''अव्यक्त बापदादा'' मधुबन

''मेरे-मेरे का देह-अभिमान छोड़ ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो''

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को देख रहे हैं। ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मा मुख वंशावली। हर ब्राह्मण आत्मा के भाग्य को देख बाप-दादा भी हर्षित होते हैं। हर ब्राह्मण आत्मा को जन्मते ही स्वयं ब्रह्मा बाप द्वारा मस्तक में स्मृति का तिलक लगता है। स्वयं भगवान तिलकधारी बनाते हैं। साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को पवित्रता के महामन्त्र द्वारा लाइट का ताज धारण कराते हैं और साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को विश्व कल्याणकारी आत्मा बनाए जिम्मेवारी का ताज धारण कराते हैं। डबल ताज है और भगवन स्वयं अपने दिल तख्तनशीन बनाते हैं। तो जन्मते ही तिलक, ताज और तख्तधारी बन जाते हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में कोई आत्मा का नहीं हो सकता। तो इतने श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति रहती है कि हम ब्राह्मण जन्मते ही ऐसे भाग्यवान बनते हैं? आप ब्राह्मणों की निशानी दुनिया वालों ने कृष्ण रूप में दिखा दी है। लेकिन वह विश्व का राजकुमार है इसलिए राज्य की निशानी तिलक, ताज, तख्त देते हैं। फिर भी उसको छोटेपन में तिलक ताज, तख्त नहीं मिलता लेकिन आप ब्राह्मणों को तिलक, ताज और तख्त तीनों ही प्राप्त होता है। परमात्म बाप द्वारा यह तीनों प्राप्तियाँ होना यह सिर्फ ब्राह्मणों के भाग्य में है। तो बापदादा देख रहे थे कि मेरे बच्चों का कितना बड़ा भाग्य का सितारा हर एक के मस्तक पर चमक रहा है। ऐसा भाग्य का सितारा आपको अपने में दिखाई देता है? सदा चमकता हुआ दिखाई देता है या कभी बहुत अच्छा चमकता है और कभी सितारे की चमक कम हो जाती है? यह भाग्य का सितारा विचित्र सितारा है। तो बापदादा आप सभी बच्चों को जब भी देखते हैं, मिलते हैं तो हर एक बच्चे के मस्तक में सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं। सितारा चमकते-चमकते चमक कम

क्यों होती है? उसके कारण को आप सब अच्छी तरह से जानते हो!

बापदादा को बच्चों का चार्ट देखकर मुस्कराहट भी आती, जब भी किसी से पूछो कि क्या बनना है? लक्ष्य क्या है? तो मैजॉरिटी का एक ही जवाब होता है कि नम्बरवन बनना है। सूर्यवंशी बनना है। चन्द्रवंशी राजा राम-सीता भी बनने नहीं चाहते। लेकिन जब लक्ष्य सूर्यवंशी नम्बरवन का है, तो जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण सदा सूर्यवंश का दिखाई देना आवश्यक है। बच्चों का लक्ष्य सूर्य-वंश का है अर्थात् सदा विजयी का है, नम्बरवन सूर्यवंशी की निशानी है सदा विजयी। सूर्य की कलायें कम और ज्यादा नहीं होती। उदय होता है और अस्त होता है लेकिन चन्द्रवंशी मुआफ़िक कलायें कम नहीं होती। तो **सूर्यवंश की निशानी है सदा एकरस और सदा विजयी।** चन्द्रवंश को क्षत्रिय कहा जाता है, क्षत्रिय जीवन में कभी हार होती, कभी जीत होती। कभी सफलतामूर्त और कभी मेहनत की मूर्त। युद्ध करना अर्थात् मेहनत करना। चन्द्रवंश की कलायें एकरस नहीं होती, इसलिए लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ। जैसे लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, हर एक बच्चा यही कहता है कि बाप समान बनना है। तो बाप सदा सहज विजय स्वरूप है। अगर एकरस अवस्था नहीं है तो क्या नम्ब-रवन बनेंगे? वा नम्बरवार में आयेंगे? एक है नम्बरवन और दूसरा है नम्बर-वार। तो अपने से पूछो हम नम्बरवन हैं वा नम्बरवार की लिस्ट में हैं? नम्बरवन अर्थात् फालो ब्रह्मा बाप।

बापदादा सहज साधन बताते हैं कि फालो करने में मेहनत कम लगती है। ब्रह्मा के पांव अर्थात् कदम, हर कार्य के कदम रूपी पांव के निशान हैं। तो पांव पर पांव रखकर चलना सहज होता है। नया रास्ता नहीं ढूंढना है, पांव पर पांव अर्थात् कदम पर कदम रखना है। जो भी कार्य करते हो चाहे मन्सा संकल्प करते हो, चाहे बोल बोलते हो, चाहे कर्म में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, हर कर्म करने के पहले यह सोचो कि जो मैं ब्राह्मण आत्मा कर्म कर रही हूँ / कर रहा हूँ, क्या यह ब्रह्मा बाप समान है? ब्रह्मा बाप का संकल्प क्या रहा? मेरा संकल्प भी उसी प्रमाण है? हर बोल ब्रह्मा समान है? अगर नहीं है तो नहीं करना है। न

सोचना है, न बोलना है, न करना है। ऐसे नहीं ब्रह्मा बाप का कदम एक और बच्चों का कदम दूसरा, तो जो लक्ष्य है, मंजिल है बाप समान बनने का, वह कैसे होगा? अगर ब्रह्मा के हर कदम समान कदम पर कदम फालो करते चलेंगे तो एक तो सदा अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करेंगे और सदा सम्पूर्णता की मंजिल समीप अनुभव करेंगे।

ब्रह्मा बाप समान अर्थात् सम्पूर्णता के मंजिल पर पहुंचना। तो ब्रह्मा बाप वतन में आप सब बच्चों के सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ते बनने का आह्वान कर रहे हैं। ब्रह्मा बाप के आह्वान का गीत वा मधुर आह्वान का आवाज सुनाई नहीं देता? ''**आओ बच्चे, मीठे बच्चे, जल्दी-जल्दी आओ**'' यह गीत वा बोल सुनाई नहीं देता? ब्रह्मा बाप का आवाज सुनो, कैच करो। ब्रह्मा बाप यही कहते कि बच्चे 99 वर्ष का सोचते बहुत हैं, क्या होगा! यह होगा, वह होगा... यह होगा वा नहीं होगा...! यह होगा! - इस सोच में ज्यादा रहते हैं। यह तो नहीं होगा! कभी सोचते होगा, कभी सोचते नहीं होगा। यह होगा, होगा का गीत गाते रहते हैं। लेकिन अपने फरिश्ते पन के, सम्पन्न सम्पूर्ण स्थिति में तीव्रगति से आगे बढ़ने का श्रेष्ठ संकल्प कम करते हैं। होगा, क्या होगा!... यह गा गा के गीत ज्यादा गाते हैं। बाप कहते हैं कुछ भी होगा लेकिन आपका लक्ष्य क्या है? जो होगा वह देखने और सुनने का लक्ष्य है वा ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनने का है? उसकी तैयारी कर ली है? प्रकृति अपना कुछ भी रंग रूप दिखाये, आप फरिश्ता बन, बाप समान अव्यक्त रूपधारी बन प्रकृति के हर दृश्य को देखने के लिए तैयार हो? प्रकृति की हलचल के प्रभाव से मुक्त फरिश्ते बने हो? अपनी स्थिति की तैयारी में लगे हुए हो वा क्या होगा, क्या होगा - इसी सोचने में लगे हो? क्या कोई भी परिस्थिति सामने आये तो आप प्रकृतिपति अपने प्रकृतिपति की सीट पर सेट होंगे वा अपसेट होंगे? यह क्या हो गया? यह हो गया, यह हो गया... इसी नज़ारों के समाचारों में बिजी होंगे वा सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो किसी भी प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करेंगे?

तो ब्रह्मा बाप बच्चों से पूछ रहे हैं कि मेरे समान फरिश्ते सदाकाल के लिए बने हो? क्योंकि आप बच्चों को व्यक्त में रहते अव्यक्त बनना है। आप कहेंगे - बाप तो अव्यक्त हो गया, हमें भी ऐसे अव्यक्त बना देवे ना। ब्रह्मा बाप कहते हैं पहले अपने आपसे पूछो कि जो विश्व कल्याण की जिम्मेवारी का ताज बाप ने पहनाया है, वह सम्पन्न कर लिया है? विश्व कल्याणकारी, विश्व का कल्याण सम्पन्न हुआ है? ब्रह्मा बाप तो अव्यक्त इसलिए बनें कि बच्चों को विश्व कल्याण का कार्य देकर, बंधन से भी मुक्त हो सेवा की रफ्तार तीव्र कराने के निमित्त बनना था, जिसका प्रत्यक्ष स्वरूप चारों ओर देख रहे हो। चाहे देश में, चाहे विदेश में अव्यक्त ब्रह्मा द्वारा तीव्रगति हुई है और होनी भी है। सेवा में तीव्र गति का निमित्त आधार ब्रह्मा बाप को बनना था। लेकिन राज्य अधिकारी एक ब्रह्मा बाप को नहीं बनना है, साथ में बच्चों को भी राज्य अधिकार लेना है। इसलिए साकार में निमित्त आप साकार रूपधारी बच्चों को बनाया है। लेकिन अन्त में आप सब बच्चों को व्यक्त में अव्यक्त फरिश्ता बन विश्व कल्याण के सेवा की रफ्तार तीव्र कर समाप्ति और सम्पन्न होना है और करना है।

ब्रह्मा बाप कहते हैं कि क्या 99 में समाप्ति करें? प्रकृति को एक ताली बजायेंगे और प्रकृति तो तैयार खड़ी है। क्या फरिश्ते समान डबल लाइट बन गये हो? कम से कम 108 ऐसे सदा विजयी बने हैं, जो किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म अर्थात् सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में पास हों? व्यर्थ वा निगेटिव - यही बोझ सदाकाल के लिए डबल लाइट फरिश्ता बनने नहीं देता। तो ब्रह्मा बाप पूछते हैं - इस बोझ से हल्के फरिश्ते बने हैं? अन्डरलाइन है - सदा। कम से कम 108 तो सदा फरिश्ता जीवन का अनुभव करें तब कहेंगे ब्रह्मा बाप समान बनना। तो बाप पूछते हैं - ताली बजायें? या 2000 में ताली बजायें, 2001 में ताली बजायें, कब बजायें? क्या सोचते हो ताली बजेगी तो बन जायेंगे, ऐसे? क्या सोचते हो - ताली बजेगी उस समय बनेंगे? क्या होगा? बजायें ताली? बोलो तैयार हो? पेपर लेवें? ऐसे थोड़ेही मान जायेंगे, पेपर लेंगे? टीचर्स बताओ - पेपर लें? सब छोड़ना पड़ेगा। मधुबन

वालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, ज्ञान सरोवर वालों को ज्ञान सरोवर, सेन्टर वालों को सेन्टर, विदेश वालों को विदेश, सब छोड़ना पड़ेगा। तो एवररेडी हैं? अगर एवररेडी हो तो हाथ की ताली बजाओ। एवररेडी? पेपर लें? कल एनाउन्समेंट करें? वहाँ जाकर भी नहीं छोड़ना है, वहाँ जाकर थोड़ा ठीक करके आऊं, नहीं। जहाँ हूँ, वहाँ हूँ। ऐसे एवररेडी। अपना दफतर भी नहीं, खटिया भी नहीं, कमरा भी नहीं, अलमारी भी नहीं। ऐसे नहीं कहना थोड़ा सा काम है ना, दो दिन करके आयें। नहीं। आर्डर इज आर्डर। सोचकर हाँ कहो। नहीं तो कल आर्डर निकलेगा, कहाँ जाना है, कहाँ नहीं जाना है। निकालें आर्डर, तैयार हैं? इतना हिम्मत से हाँ नहीं कह रहे हैं। सोच रहे हैं थोड़ा सा एक दिन मिल जाये तो अच्छा है। मेरे बिना यह नहीं हो जाए, यह नहीं हो जाए, यह वेस्ट संकल्प भी नहीं करना। ब्रह्मा बाप ट्रांसफर हुआ तो क्या सोचा कि मेरे बिना क्या होगा? चलेगा, नहीं चलेगा। चलो एक डायरेक्शन तो दे दूं, डायरेक्शन दिया? अपनी सम्पन्न स्थिति द्वारा डायरेक्शन दिया, मुख से नहीं। ऐसे तैयार हो? आर्डर मिला और छोड़ो तो छूटा। हलचल करें? ऐसा करना है - यह बता देते हैं। आर्डर होगा, पूछकर नहीं, तारीख नहीं फिक्स करेंगे। अचानक आर्डर देंगे आ जाओ, बस। इसको कहा जाता है डबल लाइट फरिश्ता। आर्डर हुआ और चला। जैसे मृत्यु का आर्डर होता है फिर क्या सोचते हैं, सेन्टर देखो, आलमारी देखो, जिज्ञासु देखो, एरिया देखो.....! आजकल तो मेरे-मेरे में एरिया का झमेला ज्यादा हो गया है, मेरी एरिया! विश्व कल्याणकारी की क्या हद की एरिया होती है? यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह भी देह का अभिमान है। देह का भान फिर भी हल्की चीज़ है, लेकिन देह का अभिमान यह बहुत सूक्ष्म है। मेरा-मेरा इसको ही देह का अभिमान कहा जाता है। जहाँ मेरा होगा ना वहाँ अभिमान जरूर होगा। चाहे अपनी विशेषता प्रति हो, मेरी विशेषता है, मेरा गुण है, मेरी सेवा है, **यह सब मेरापन - यह प्रभू पसाद है, मेरा नहीं।** प्रसाद को मेरा मानना, यह देह-अभिमान है। **यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है।** इसीलिए जो वर्णन करते हो फरिश्ता अर्थात् न देह-अभिमान, न देह-भान, न भिन्न-भिन्न मेरेपन के

रिश्ते हो, फरिश्ता अर्थात् यह हद का रिश्ता खत्म। तो अब क्या तैयारी करेंगे? ब्रह्मा बाप का आवाज अटेन्शन से सुनो, आह्वान कर रहे हैं। बाप कहते हैं समाप्ति का नगाड़ा बजाना तो बहुत सहज है, जब चाहें तब बजा सकते हैं लेकिन कम से कम सतयुग आदि के ९ लाख तो एवररेडी हो ना! चाहे नम्बरवार हों, नम्बरवन तो थोड़े होंगे। कम से कम १०८ नम्बरवन, १६ हजार नम्बर टू, ९ लाख नम्बर थ्री। लेकिन इतने तो तैयार हो जाएं। राजधानी तो तैयार होनी चाहिए।

अभी रिजल्ट में बापदादा ने देखा कि **वर्तमान समय माया का स्वरूप निगेटिव और व्यर्थ संकल्प का मैजारिटी में है।** विश्व कल्याणकारी की स्टेज है - सदा बेहद की वृत्ति हो, दृष्टि हो और बेहद की स्थिति हो। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा वह दूसरे के निगेटिव को भी पॉजेटिव में चेंज नहीं कर सकता। इसलिए हर एक को अपनी सूक्ष्म चेकिंग करनी है कि वृत्ति, दृष्टि सर्व के प्रति सदा बेहद और कल्याणकारी है? ज़रा भी कल्याण की भावना के सिवाए हद की भावना, हद के संकल्प, बोल सूक्ष्म में भी समाये हुए तो नहीं हैं? जो सूक्ष्म में समाया हुआ होता है, उसकी निशानी है कि समय आने पर वा समस्या आने पर वह सूक्ष्म स्थूल में आता है। सदा ठीक रहेगा लेकिन समय पर वह इमर्ज हो जायेगा। फिर सोचते हैं यह है ही ऐसा। यह बात ही ऐसी है। यह व्यक्ति ही ऐसा है। व्यक्ति ऐसा है लेकिन मेरी स्थिति शुभ भावना, बेहद की भावना वाली है या नहीं है? अपनी गलती को चेक करो। समझा।

बातों को नहीं देखो, अपने को देखो। बस ९९ में यह अपने अन्दर धुन लगाओ जो ब्रह्मा बाप का कदम वह ब्रह्मा बाप समान मेरा हर कदम हो। ब्रह्मा बाप से सभी को प्यार है ना। तो प्यारे को ही फालो किया जाता है। बाप समान बनना ही है। ठीक है ना! ९९ में सब तैयार हो जायेंगे? एक वर्ष है। यह हो गया, यह हो गया... यह नहीं सोचना। यह तो होना ही है। पहले से ही पता

है यह होना है लेकिन बाप समान फरिश्ता बनना ही है। समझा। करना है ना? कर सकेंगे? एक वर्ष में तैयार हो जायेंगे कि आधे वर्ष में तैयार हो जायेंगे? आपके सम्पन्न बनने के लिए ब्रह्मा बाप भी आह्वान कर रहा है और प्रकृति भी इन्तजार कर रही है। ६ मास में एवररेडी बनो, चलो ६ मास नहीं एक वर्ष में तो बनो। हलचल में नहीं आना, अचल। लक्ष्य नहीं छोड़ना, बाप समान बनना ही है, कुछ भी हो जाए। चाहे कई ब्राह्मण हिलावें, ब्राह्मण रूकावट बनकर सामने आयें फिर भी हमें समान बनना ही है। पसन्द है यह राय? (बापदादा ने सभी से हाथ उठवाया और सबका वीडियो, फोटो निकलवाया) यह फोटो सभी को भेजेंगे। यहाँ की मूवी में कोई मिस भी हो सकता है। वतन की मूवी में तो कोई मिस नहीं हो सकता है।

अच्छा - बाप कहते हैं एक सेकण्ड में सभी अभी-अभी विदेही बन सकते हो? तो अभी एक सेकण्ड में विदेही स्थिति में स्थित हो जाओ। (ड्रिल) अच्छा - अभी देह में आ जाओ।

अभी फिर विदेही बन जाओ। ऐसे सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह अभ्यास करते रहो। अच्छा।

सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को सदा ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखने वाले फालो फादर आज्ञाकारी बच्चों को, सदा ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्थिति में स्थित रहने वाले समीप आत्माओं को, सदा प्रकृतिपति बन प्रकृति के हर दृश्य को साक्षी हो देखने वाले अचल-अडोल आत्माओं को, सदा बेहद की वृत्ति और दृष्टि में रहने वाले भाग्यवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते। बाहर जो भी सुन रहे हैं चाहे देश में, चाहे विदेश में उन बच्चों को भी विशेष यादप्यार।

दादियों से :- निमित्त बनने से दुआयें मिलती हैं। आप लोगों की तो दवाई भी दुआयें हैं। सभी जो भी निमित्त दादियाँ हैं वा जो भी निमित्त कार्य में मददगार बनते हैं उन्हों को विशेष दुआओं की लिफ्ट है। यज्ञ हिस्ट्री में जो जो आत्मा जिस कार्य के आदि से अब तक निमित्त बनी है, उनको उस निमित्त बने हुए कार्य की

विशेष दुआयें मिलती हैं। निमित्त बनने का समझो एक भाग्य मिलता है। एक तो निमित्त बनने वाले पर सभी की नज़र होने के कारण उसका स्व पर भी अटेन्शन रहता है। उनका पुरुषार्थ अपने प्रति भी सहज हो जाता है। जैसे स्टेज पर बैठते हैं तो स्टेज पर बैठने से स्वत: अटेन्शन होता है, तो निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर हैं। तो स्टेज पर होने के कारण स्व का पुरुषार्थ सहज हो जाता है। सबके सहयोग की दुआयें भी मिलती हैं। अगर निमित्त बनी हुई आत्मा यथार्थ पार्ट बजाती है तो औरों के सहयोग की भी मदद मिलती है। अच्छा है। (ड्रिल बहुत अच्छी लग रही थी) यह रोज़ हर एक को करनी चाहिए। ऐसे नहीं हम बिजी हैं। बीच में समय प्रति समय एक सेकण्ड चाहे कोई बैठा भी हो, बात भी कर रहा हो, लेकिन एक सेकण्ड उनको भी ड्रिल करा सकते हैं और स्वयं भी अभ्यास कर सकते हैं। कोई मुश्किल नहीं है। दो चार सेकण्ड भी निकालना चाहिए इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो क्या होता है, सारा दिन बुद्धि चलती रहती है ना, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और बीच-बीच में अभ्यास होगा तो जब चाहें उसी समय हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है। ऐसे नहीं बात पूरी हो जाए और विदेही बनने का पुरुषार्थ ही करते रहें। तो सूर्यवंशी तो नहीं हुए ना! इसलिए जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है। फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ न कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। अभ्यासी होंगे ना। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा, तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़े। युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार सूर्यवंशी बनने नहीं देंगे। लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी, अगर विदेही बनने का सेकण्ड में अभ्यास नहीं है तो। और जिस बात में कमजोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी। इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत

जरूरी है। कोई भी रूप की माया आये, समझ तो है ही। एक सेकण्ड में विदेही बन जायेंगे तो माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे कोई मरा हुआ व्यक्ति हो, उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ना। विदेही माना देह से न्यारा हो गया तो देह के साथ ही स्वभाव, संस्कार, कमजोरियां सब देह के साथ हैं, और देह से न्यारा हो गया, तो सबसे न्यारा हो गया। इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, इसमें कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए। मन को कन्ट्रोल कर सकें, बुद्धि को एकाग्र कर सकें। नहीं तो आदत होगी तो परेशान होते रहेंगे। पहले एकाग्र करें, तब ही विदेही बनें। अच्छा। आप लोगों का तो अभ्यास १४ वर्ष किया हुआ है ना! (बाबा ने संस्कार डाल दिया है) फाउण्डेशन पक्का है। आप लोगों की तो १४ वर्ष में नेचर बन गई। सेवा में कितने भी बिजी रहो लेकिन कोई बहाना नहीं चलेगा कि हमको समय नहीं था क्योंकि बापदादा को अभी जल्दी-जल्दी १०८ और १६ हजार तो तैयार करने हैं। नहीं तो काम कैसे चलेगा। साथी तो चाहिए ना। तो १०८ फिर १६ हजार, फिर ९ लाख। अभी अगर आपको कहें कि १०८ ऐसे नाम बताओ जो वेस्ट और निगेटिव से मुक्त हों, तो आप लोग माला बना सकती हो? सिर्फ १०८ कह रहे हैं। ९९ तक तो १६ हजार चाहिए। ९ लाख तो बन जायेंगे, उसकी कोई बड़ी बात नहीं है। पहले तो १०८ तैयार हो जाएं। (सभा से) आप सोचते हो हम १०८ में आयेंगे? अभी जो कुछ हो उसे निकाल लेना, और दादी को कहना कि हम एवररेडी हैं। हाँ अपना-अपना नाम देवें, आफर करो - हम १०८ में हैं फिर वेरीफाय करेंगे। सबसे अच्छा तो अपना नाम आपेही देवें।

एक बारी सबको चेंज करना जरूर है। अभी इतला कर रहे हैं तो एवररेडी हो जाना फिर आर्डर करेंगे। मधुबन वालों को भी चेंज करेंगे। मधुबन वाले सेन्टरों में जायें, सेन्टर वाले मधुबन में आयें। अपनी अलमारियां खाली कर देना। कोई को ताला लगाने नहीं देंगे। अच्छा - यह भी मज़ा है ना। यह भी मज़े का खेल है। अच्छा - अभी क्या करना है।

(काठमाण्डू, देहली, अहमदाबाद, कलकत्ते में बहुत अच्छी सेवायें हुई हैं,

काठमाण्डू वालों ने आज विशेष याद भेजी है)

जहाँ भी सेवा की है, वह एक दो से अच्छी है। आरम्भ दिल्ली ने किया, तो दिल्ली में प्रगति मैदान में पहुंचना, यह भी एक अच्छी सेवा की रिजल्ट है और दिल्ली राजधानी में अभी ऐसे स्थान पर फ्री जमीन लेना - यह सेवा की सफलता है। जो भी आये, जितने भी आये लेकिन दिल्ली में नाम बाला होना अर्थात् चारों ओर आवाज फैलना, इसीलिए अभी प्रगति मैदान में झण्डा लहराया, अभी और आगे बढ़ना है। अभी आध्यात्मिक झण्डा, आध्यात्मिकता का नाम बाला करने वाला झण्डा, दिल्ली में करना ही है। और आगे बढ़ना है क्योंकि दिल्ली का आवाज टी.वी. द्वारा या अखबारों द्वारा फैलता है। और साथ-साथ जो भी यज्ञ के कार्य होते हैं वह यज्ञ के कार्य में विशेष आत्मायें जो निमित्त बनती हैं, उनके ऊपर भी बड़े प्रोग्रामस का, नाम का प्रभाव पड़ता है। इसलिए देहली के ऊपर तो बापदादा की नज़र है। आखिर में आध्यात्मिकता का झण्डा, स्थापना में सेवा का झण्डा देहली में लहराया। ऐसे प्रत्यक्षता का झण्डा, आध्यात्मिकता ही श्रेष्ठ है और आध्यात्मिक आत्मायें यही हैं, यह आवाज फैलना ही है।

काठमाण्डू में भी वहाँ के महाराजा का प्यार है जनता में। इसलिए महा-राजा का आना, यह सभी देशवासियों के ऊपर सहज प्रभाव पड़ गया। और देखा गया है कि नेपाल की धरनी में वहाँ की निमित्त बनी हुई आत्मायें अच्छी पावरफुल हैं। इसलिए नेपाल में सेवा होना सहज है। बच्चों ने मेहनत की है और अच्छे-अच्छे प्रभावित हुए हैं, समीप आये हैं। एक होता है प्रभावित होना, दूसरा होता है समीप सहयोगी बनना। तो नेपाल में समीप सहयोगी आत्मायें भी हैं, यह रिजल्ट अच्छी है।

और गुजरात ने बहुत अच्छी मेहनत की है। सहयोगी बनाने का जो लक्ष्य रखा उसमें सफलता अच्छी मिली। इसलिए जो सहयोगी बनें तो सहयोगियों को बाप वा ड्रामा द्वारा कुछ न कुछ पुण्य का फल मिलता है। इसलिए वह सहयोग आगे चलकर समीप आते जायेंगे और उन्हों द्वारा सेवा फैलती जायेगी। यह कार्य तो सबसे बड़ा भी किया, बढ़िया भी किया। लक्ष्य अच्छा रखा और हर

एक ने अपना जो भी कार्य लिया वह बिना खर्चा सोचने के, बिना हद की बातें सोचने के जो दिल से, तन से, आपसी प्यार से किया इसमें सफलता है। गुजरात को भी सफलता हुई है और आगे भी होती रहेगी।

कलकत्ता में भी हिम्मत बहुत अच्छी रखी। हैं सब छोटे-छोटे लेकिन हिम्मत बड़ी रखी। और हिम्मत का फल यज्ञ से विशेष मदद मिली। उमंग-उत्साह में आकर काम कर ही लिया। और अच्छा नाम भी हुआ। और योग शिविर में भी अच्छे आये, मेले में भी अच्छे आये। और सब बातों को न देख समय पर उमंग-उत्साह से काम चल ही गया। अच्छा चला। इसलिए छोटे और बड़ा कार्य किया तो उन्हों को विशेष मुबारक हो। अभी जो भी प्रोग्रामस होंगे, वह बहुत अच्छे होंगे क्योंकि समय को वरदान मिला हुआ है। अभी जहाँ भी करेंगे, रिजल्ट अच्छे ते अच्छी होगी। अच्छा।

लखनऊ, बैंगलोर, हैदराबाद - तीन जगह बड़े प्रोग्राम होने हैं। तीनों अच्छे हैं। बापदादा तो पहले से ही कहते अच्छा होगा। (मद्रास और बाम्बे में भी बड़े प्रोग्राम होने हैं) सभी को होवनहार मुबारक हो। अच्छा। ओम् शान्ति।

३१-१२-९८ ओम् शान्ति ''अव्यक्त बापदादा'' मधुबन

इस नये वर्ष में हिम्मत के आधार पर स्वयं को मेहनत मुक्त सदा विजयी अनुभव करो

आज नव युग रचता बापदादा अपने अति स्नेही, सदा सहयोगी और अति समीप बच्चों को नव युग, नव जीवन और नव वर्ष की मुबारक देने आये हैं। चारों ओर के बच्चे अति स्नेह से बापदादा को दिल में सम्मुख रख मुबारक ले रहे हैं। बापदादा बच्चों के नव वर्ष के उमंग-उत्साह को देख हर्षित हो रहे हैं। मैजारिटी बच्चे चाहे दूर बैठे हैं, चाहे समीप बैठे हैं सभी के मन में यही उमंग-उत्साह है कि इस वर्ष में नवीनता करके ही दिखायेंगे। चाहे स्व के परिवर्तन में, चाहे सेवा की सफलता में, चाहे हर आत्मा को शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने में उमंग भी अच्छा है, उत्साह भी बहुत अच्छा है। साथ-साथ हिम्मत भी यथा शक्ति है। बापदादा ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को एक संकल्प के पीछे पदमगुणा मदद अवश्य देते हैं। इसलिए हिम्मत से सदा आगे बढ़ते चलो। कभी भी स्व प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति हिम्मत को कम नहीं करना क्योंकि यह नव युग है ही हिम्मत रखने से उड़ने का युग, वरदानी युग, पुरुषोत्तम युग, डायरेक्ट विधाता द्वारा सर्व शक्तियां वर्से में सहज प्राप्त होने का युग, इसलिए इस युग के महत्व को सदा स्मृति में रखो। कोई भी कार्य आरम्भ करते हो चाहे स्व पुरुषार्थ, चाहे विश्व सेवा, सदा हिम्मत और बापदादा की मदद द्वारा निश्चय है ही कि स्व पुरुषार्थ में वा सेवा में सफलता हुई पड़ी है। होना ही है। असम्भव, सम्भव होना ही है क्योंकि यह युग सफलता का युग है। असम्भव, सम्भव होने का युग है। इसलिए होगा या नहीं होगा, कैसे होगा, इसका क्वेश्चन इस युग में आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए है ही नहीं। ब्राह्मणों की जन्म पत्री में है सफलता उसका जन्म सिद्ध अधिकार है। अधिकारी आत्माओं को यह सोचने की आवश्यकता नहीं है, वर्सा मिलना ही है।

तो **नये वर्ष में यह विशेष स्मृति इमर्ज करो कि सब तरफ से सफलता मुझ श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा का अधिकार है ही।** इस निश्चय से, रूहानी नशे से उड़ते चलो। (अभिमानी नशा नहीं, रूहानी नशा) निश्चय बुद्धि सदा हर कार्य में विजयी है ही है। ऐसे निश्चय बुद्धि ब्राह्मण आत्मा के मस्तक पर विजय के तकदीर की लकीर सदा है ही है। विजय का तिलक सदा ही मस्तक पर चमक रहा है। इसलिए **इस वर्ष को सदा विजयी वर्ष अनुभव करते चलो।** ऐसा निश्चय और नशा है? डबल विदेशियों को है? डबल विदेशी होशियार हैं। (सबने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। तिलक नज़र आ रहा है। और भारतवासी तो हैं ही भाग्यवान, क्यों? भारत की धरनी ही भाग्यवान है। इसलिए चाहे विदेशी, चाहे भारतवासी दोनों ही भाग्य विधाता के बच्चे हैं इसलिए हर ब्राह्मण बच्चा विजयी है। सिर्फ हिम्मत को इमर्ज करो। हिम्मत समाई हुई है क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो। ऐसे हो ना? (सभी हाथ हिला रहे हैं) हाथ तो बहुत अच्छा हिलाते हैं। अभी मन से भी सदा हिम्मत का हाथ हिलाते रहना। बापदादा को खुशी है, नाज़ है कि मेरा एक-एक बच्चा अनेक बार का विजयी है। एक बार नहीं, अनेक बार की विजयी आत्मायें हो। तो कभी यह नहीं सोचना, पता नहीं क्या होगा? होगा शब्द नहीं लाना। विजय है और सदा रहेगी। सब पक्के हैं? बहुत अच्छा। अभी फिर वहाँ जाकर ऐसा कमजोर समाचार नहीं लिखना कि दादियां, बाबा माया आ गई, ऐसे नहीं लिखना। मायाजीत हैं। हम नहीं होंगे तो और कौन होगा, यह रूहानी नशा इमर्ज करो। और-और कार्य में मन और बुद्धि बिजी हो जाती है ना तो नशा मर्ज हो जाता है। लेकिन बीच-बीच में चेक करो कि कर्म करते हुए भी यह विजयीपन का रूहानी नशा है? निश्चय होगा तो नशा जरूर होगा। निश्चय की निशानी नशा है और नशा है तो अवश्य निश्चय है। दोनों का सम्बन्ध है। इसलिए अभी ६६ में अपना नशा सदा इमर्ज रखना, तो अभुल हो जायेंगे। न भूल होगी, न मेहनत होगी। बापदादा ने पहले भी कहा है कि जब बापदादा बच्चों को मेहनत करते हुए देखते हैं, युद्ध करते हुए देखते हैं तो बच्चों की मेहनत करना बाप को अच्छा नहीं लगता है इसलिए इस नव वर्ष को

कैसे मनायेंगे? मुक्ति वर्ष मनाया। निगेटिव, वेस्ट को समाप्त किया तो यह वर्ष ऑटोमेटिक मेहनत मुक्त वर्ष हो जायेगा। सब मौज में रहने वाले, मेहनत करने वाले नहीं। मौज अच्छी लगती है या मेहनत अच्छी लगती है? मौज अच्छी लगती है ना? तो **यह वर्ष मन में, संकल्प में भी मेहनत मुक्त हो।**

बापदादा के पास बच्चों के पत्र वा चिटकियां बहुत अच्छे-अच्छे हिम्मत की आई हैं कि हम अब से ८०८५ की माला में अवश्य आयेंगे। बहुतों के अच्छे-अच्छे उमंग के पत्र भी आये हैं और रूहरिहान में भी बहुतों ने बापदादा को अपने निश्चय और हिम्मत का अच्छा समाचार दिया है। बापदादा ऐसे बच्चों को कहते हैं - बाप ने आप सबके बीती को बिन्दू लगा दिया। इसलिए बीती को सोचो नहीं, अब जो हिम्मत रखी है, हिम्मत और मदद से आगे बढ़ते चलो। नव वर्ष के नये उमंग भी बहुत अच्छे-अच्छे लिखे हैं चाहे विदेश के बच्चों ने, चाहे देश के बच्चों ने, बापदादा ऐसे बच्चों को यही वरदान देते हैं - **इसी हिम्मत में, निश्चय में, नशे में अमर भव।** अमर रहेंगे ना! डबल विदेशी अमर रहेंगे? भारतवासी भी रहेंगे ना? भारत को तो नम्बर लेना ही चाहिए।

नये वर्ष में क्या मनाते हैं? एक तो गिफ्ट देते और दूसरा ग्रीटिंग्स देते हैं। मिठाई खूब खाते खिलाते हैं। नाचते गाते भी बहुत हैं। तो आप सिर्फ ०७ के बाद एक दिन नया वर्ष नहीं मनाना लेकिन ब्राह्मण बच्चों के लिए इस नव युग में हर घड़ी नई है, हर श्वांस नया है, हर संकल्प नया है, इसलिए सदा पूरा वर्ष, एक दिन नहीं, एक सप्ताह नहीं, एक मास नहीं, चार मास नहीं, आठ मास नहीं, ०७ ही मास सदा एक दो को दिलखुश मिठाई बांटते रहना। बांटेंगे ना! दिलखुश मिठाई बांटने आती है? सभी होशियार हैं। तो दिलखुश मिठाई बांटना। कोई आपकी दिल खुश मिठाई अपने स्वभाव के कारण, संस्कार के कारण, समस्या के कारण अगर नहीं भी स्वीकार करे तो आप दिलशिकस्त नहीं होना। आपने बांटी, आपका आज्ञाकारी बनने का चार्ट बापदादा के पास जमा हो गया। यह नहीं देखना कि मैंने तो दिलखुश मिठाई खिलाई लेकिन यह तो नाराज हो गया, कोई हर्जा नहीं, वह राज़ को नहीं जानता है ना तो नाराज हो गया। आप तो राज़

को जानते हो ना! तो यह राज़ भी जान लो कि यह हिसाब-किताब वा समस्या के वश है। आप आज्ञाकारी बनो। ठीक है ना! आज्ञाकारी बनना है ना! यहाँ तो हाँ बहुत अच्छा करते हैं, अगर आप यहाँ देखो ना, हाथ भी बहुत अच्छा हिलाते हो, खुश कर देते हो। कांध भी हिलाते हैं, हाथ भी हिलाते हैं। लेकिन बापदादा तो फिर भी हर बच्चे के ऊपर सदा ही खुश रहते हैं। जब मेरा बच्चा कह दिया, तो जो भी हो, जैसे भी हो, बाप तो देख खुश होता ही है। बाप ने जो वायदा किया है - कैसे भी लायक बनाकर साथ ले ही जाना है। साथ में चलना है ना? साथ चलने के लिए तैयार हैं? सभी तैयार हैं? एवररेडी हैं? अच्छा, एवररेडी भी हैं, बहुत अच्छा। एवरहैपी भी हैं? और जब माया आ जायेगी तो? फिर थोड़ा-थोड़ा मन में चिल्लायेंगे? बाबा माया आ गई, आ गई। चिल्लाना नहीं, अपने को उड़ा देना। माया नीचे रह जाये आप ऊपर उड़ जाओ तो माया देखती रहेगी। अच्छा तो खुशी में नाचते भी रहना और दिलखुश मिठाई बांटते भी रहना। साथ में जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये उसको कोई न कोई गिफ्ट देना, कोई हाथ खाली नहीं जाये, कौन सी गिफ्ट देंगे? आपके पास गिफ्ट तो बहुत है। गिफ्ट का स्टॉक है? तो देने में कन्जूस नहीं बनना, देते जाना। फ्राकदिल बनना, किसी को शक्ति का सहयोग दो, शक्ति का वायब्रेशन दो, किसको कोई गुण की गिफ्ट दो। मुख से नहीं लेकिन अपने चेहरे और चलन से दो। यदि कोई गुण वा शक्ति इमर्ज नहीं भी हो, तो कम से कम छोटी सी सौगात भी देना, वह कौन सी? शुभ भावना और शुभ कामना की। शुभ कामना करो कि यह मेरा सिकीलधा भाई या बहन, सिकीलधा सोचेंगे तो अशुभ भावना से शुभ भावना बन जायेगी। इस भाई बहन का भी उड़ती कला का पार्ट हो जाए, इसके लिए सहयोग वा शुभ भावना है। कई बच्चे कहते हैं कि हम देते हैं वह लेते नहीं हैं। अच्छा शुभ भावना नहीं लेते हैं, कुछ तो देते हैं ना। चाहे अशुभ बोल आपको देते हैं, अशुभ वायब्रेशन देते हैं, अशुभ चलन चलते हैं तो आप हो कौन? आपका आक्यूपेशन क्या है? विश्व परिवर्तक हो? आपका धंधा क्या है? विश्व परिवर्तक हैं ना! तो विश्व को परिवर्तन कर सकते हो और उसने अगर आपको उल्टा बोल दिया, उल्टा चलन

दिखाई तो उसका परिवर्तन नहीं कर सकते हो? पॉजिटिव रूप में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? निगेटिव को निगेटिव ही धारण करेंगे कि निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर आप हर एक को शुभ भावना, शुभ कामना की गिफ्ट देंगे। शुभ भावना का स्टॉक सदा जमा रखो। आप दे दो। परिवर्तन कर लो। तो आपका टाइटिल जो विश्व परिवर्तक है वह प्रैक्टिकल में यूज़ होता जायेगा। और यह पक्का समझ लो कि जो सदा हर एक को परिवर्तन कर अपना विश्व परिवर्तक का कार्य साकार में लाता है वही साकार रूप में ७८ जन्म की गैरन्टी से राज्य अधिकारी बनेगा। तख्त पर भले एक बारी बैठेगा लेकिन हर जन्म में राज्य परिवार में, राज्य अधिकारी आत्माओं के समीप सम्बन्ध में होगा। तो विश्व परिवर्तक ही विश्व राज्य अधिकारी बनता है। इसलिए सदा यह अपना आक्यूपेशन याद रखो - मेरा कर्तव्य ही है परिवर्तन करना। दाता के बच्चे हो तो दाता बन देते चलो, तब ही भविष्य में हाथ से किसको देंगे नहीं लेकिन सदा आपके राज्य में हर आत्मा भरपूर रहेगी, यह इस समय के दाता बनने का प्रालब्ध है। इसलिए हिसाब नहीं करना, इसने यह किया, इसने इतना बार किया, मास्टर दाता बन गिफ्ट देते जाओ। और ग्रीटिंग्स क्या देंगे? देखो किसी को भी, किसी से प्राप्ति होती है ना तो उसके मुख से, मन से यही शब्द निकलता है कि आपको मुबारक हो, एक दो को खुशी बांटते हो तो कहते हैं मुबारक हो। उत्सव मनाते हो तो कहते हैं मुबारक हो। ऐसे जो भी आपके सामने आवे तो मुख से ऐसे शब्द बोलो, संकल्प में ऐसे श्रेष्ठ संकल्प हो तो जो भी आपसे मिलेगा वह हर समय दिल से मुबारक वा दुआयें अवश्य देगा। तो सदा ऐसे बोल बोलो, ऐसा सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ जो दिल से, मुख से मुबारक निकले वा दुआयें निकलें। ऐसा शब्द नहीं निकालो जो मुबारक लायक नहीं हो। एक एक बोल जैसे रत्न हो। साधारण बोल नहीं हो। बापदादा ने अब तक रिजल्ट में देखा है, कल तो बदल जायेगा लेकिन अब तक देखा है कि बोल में जो सयंम और स्नेह होना चाहिए वह स्नेह भी कम हो जाता है और सयंम भी कम हो जाता है। इसलिए ऐसा बोल बोलो जो रत्न हो। आप स्वयं जब हीरे तुल्य हो तो हर बोल भी रत्न समान हो।

ऐसा मूल्यवान हो। साधारण नहीं हो। न साधारण हो, न व्यर्थ हो। और कभी-कभी बापदादा देखते हैं, रिजल्ट सुनाये, क्योंकि ८७ बजे के बाद सब समाप्त करना है ना! तो बापदादा ने यह भी देखा है कि कोई-कोई बच्चे छोटी सी बात का विस्तार बहुत करते हैं, इसमें क्या होता है, जो ज्यादा बोलता है ना तो जैसे वृक्ष का विस्तार होता है उसमें बीज छिप जाता है, वह ऐसे समझते हैं कि हम समझाने के लिए विस्तार कर रहे हैं, लेकिन विस्तार में जो बात आप समझाने चाहते हैं ना उसका सार छिप जाता है और बोल, वाणी की भी एनर्जी होती है। जो वेस्ट बोल होते हैं तो वाणी की एनर्जी कम हो जाती है। ज्यादा बोलने वाले के दिमाग की एनर्जी भी कम हो जाती है। **शार्ट और स्वीट** यह दोनों शब्द याद रखो। और कोई सुनाता है ना तो उसको तो कह देते हैं कि मेरे को इतना सुनने का टाइम नहीं है। लेकिन जब खुद सुनाते हैं तो टाइम भूल जाता है। इसलिए अपने खजानों का स्टॉक जमा करो। संकल्प का खजाना जमा करो, बोल का खजाना जमा करो, शक्तियों का खजाना जमा करो, समय का खजाना जमा करो, गुणों का खजाना जमा करो। रोज़ रात को अपने इन खजानों के बचत का पोतामेल चेक करो। कितने संकल्प वेस्ट के बजाए बेस्ट के खाते में जमा किया? कितना समय बेस्ट के खाते में जमा किया? गुण और शक्तियों से श्रेष्ठ कार्य किया? गुण को कार्य में लगाया? शक्ति को कार्य में लगाया? यह है जमा करना। तो सभी संकल्प, समय, गुण, शक्ति इसका पोतामेल रोज़ रात्रि को चेक करो फिर टोटल करो कितना बचत का खाता हुआ? यही बचत स्वयं को भी सहयोग देती रहेगी और औरों को भी देगी। तो समझा - क्या करना है? सब पूछते हैं ना क्या करना है? तो अब यह करना है। ग्रीटिंग्स भी लेना है, गिफ्ट भी देनी है, जमा भी करना है और मेहनत को छोड़ना है। **जब बचत के ऊपर अटेन्शन देंगे तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मेहनत मुक्त वर्ष धूमधाम से मनायें। वेस्ट और निगेटिव मुक्त वर्ष मनायें।** बापदादा मुक्ति वर्ष की रिजल्ट अभी नहीं पूछ रहे हैं, बापदादा को याद है। रिजल्ट लेंगे कि कितनों ने मुक्ति वर्ष मनाया या मास मनाया? ६ मास मनाया, आधा मनाया, पूरा मनाया - यह सब

[illegible] तारीख को हिसाब लेंगे?

डबल विदेशियों ने तो अच्छा मना लिया है ना, भारत वालों ने भी मनाया तो है, रिजल्ट [illegible] तारीख को लेंगे। जिसने सारा वर्ष मनाया, उसको क्या देंगे? दादियां बतावें जिन्होंने पूरा वर्ष मुक्ति वर्ष मनाया है, उनको क्या देंगे? मुबारक और दुआयें तो हैं ही और यादगार क्या देंगे? इनाम तैयार रखना। देखेंगे कितने इनाम लेते हैं? तो नया वर्ष, नया उमंग, नया उत्साह और नई हिम्मत सब नया ही नया। जो इस घड़ी स्टेज है वह दूसरे घड़ी उससे श्रेष्ठ स्टेज होनी चाहिए। ठीक है ना?

अच्छा - आज [illegible] बजे तक बैठना है। इसीलिए सब यहाँ वहाँ से भागकर नया वर्ष मनाने के लिए पहुंचे हैं। अच्छा है - जो भी नये पुराने आये हैं हर एक को दिल से दुआओं भरी मुबारक दे रहे हैं। भले पधारे, भले आये। शान्तिवन का श्रृंगार भले पधारे। देखो यह हाल कितना सज गया है। तो सजाने वाले कौन? आप ही हैं ना!

अच्छा - आज बापदादा हर ग्रुप से जहाँ बैठे हो वहाँ ही खड़ा कर मिलन मनायेंगे। चाहे डबल विदेशी हो चाहे भारत के हर ज़ोन के हो, एक-एक ज़ोन से बापदादा मिलन मनायेंगे लेकिन स्टेज पर नहीं आना। वहाँ ही खड़े हो करके मिलन मनाना। यह भी तो नई बात है ना। नया वर्ष मनाने आये हैं, यह भी नई बात है। अच्छा।

डबल विदेशी - यूथ ग्रुप से (सभी ने गीत गाया)

उमंग-उत्साह का गीत बहुत अच्छा गाया। यूथ को बहुत कार्य करना है। ऐसा यूथ ग्रुप तैयार हो जो सब निमन्त्रण देकर आपको अपनी स्टेज पर बुलावे। बहुत अच्छा है। ट्रेनिंग देने वाले भी अच्छे हैं। तो जो बापदादा ने इस वर्ष का कार्य दिया है, उसमें यूथ ग्रुप नम्बरवन लेंगे ना? सिखाने वालों ने भी अच्छी मेहनत की है।

वैल्युज़ कोर्स में आये हुए भाई-बहिनों से:- ऐसे होशियार हो जाओ जो बापदादा और सारी विश्व आपको थैंक्स देती रहे। सभी के जीवन में वैल्युज

इमर्ज करके दिखाओ। जहाँ ऐसे कोई बहुत कड़े स्वभाव के हों ना, वहाँ इस ग्रुप में से कोई ऐसे तैयार हो जाएं जो वहाँ के वातावरण को चेंज कर दें। जैसे पंजाब में आतंकवाद बहुत था ना तो पंजाब वालों ने योग के वायब्रेशन से, स्नेह से सेवा की और फ़र्क आ गया, तो यह वैल्यु वाले भी ऐसा कोई प्रत्यक्ष सेवा करके दिखावें। जहाँ एकदम वैल्यु गिरी हुई हो ऐसे को वैल्यु के वायब्रेशन से परिवर्तन करके दिखाना। मुबारक हो।

आस्ट्रेलिया, फिजी, न्युजीलैण्ड:- आस्ट्रेलिया वालों ने हिम्मत करके जो रिट्रीट हाउस लिया है उसकी मुबारक हो। और उसमें ऐसे कोई निकालो जो माइक बन आपके बदले में वह अनुभव सुनावे, तो आस्ट्रेलिया पहले भी सदा आगे रहा है। अब रिट्रीट हाउस से ऐसे माइक तैयार कर बापदादा के सामने लाना है।

यूरोप, यू.के., दुबई, मौरीशियस:- यूरोप को तो वरदान मिला हुआ है कि यूरोप अनेक आत्माओं को जगाने के निमित्त बना भी है और बनेगा भी क्योंकि यूरोप के साथ यू.के. भी है तो बहुत अच्छा है। यूरोप वाले आप सबको याद होगा शुरू में बापदादा यूरोपवासी यादव कहके यूरोप को याद करते थे और यूरोप को ब्रह्मा बाप ने बहुत बारी याद किया। तो अभी भी जो भी यू.के. वा यूरोप में हैं उन्हों को ऐसे साइन्स वाला माइक निकालना है जो आपके तरफ से माइक बन साइन्स वाला साइलेन्स को सिद्ध करके दिखावे। साइलेन्स वाले साइलेन्स को सिद्ध करते हैं यह बड़ी बात नहीं है लेकिन साइन्स वाले साइलेन्स की शक्ति को सिद्ध करें - अभी ऐसी कोई कमाल दिखाओ। सुना - यूरोप और यू.के. वालों ने। ऐसा निकालना। बहुत अच्छा है। कमाल करनी है। होनी ही है। अच्छा।

अमेरिका:- अमेरिका क्या करेगा? अमेरिका वालों को यू.एन. में ऐसा माइक तैयार करना है। यू. एन. का मेम्बर हो और ऐसा माइक बनें जो कहे कि सचमुच जो हम नहीं कर सकते वह यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कर सकते हैं। कर रहे हैं और करके दिखायेंगे। ऐसा कोई निकालो। रिट्रीट हाउस ले रहे हैं

तो उसमें क्या करेंगे? ऐसे यू.एन. का कोई मेम्बर तैयार करो जो स्टेज पर कहे कि यही हैं, यही हैं जो कार्य कर सकते हैं। हिम्मत है ना! करना ही है? और हुआ भी पड़ा है सिर्फ निमित्त बनना है, बस। बाकी कमाल करेंगे, इतना वर्ष यू.एन. का कनेक्शन रहा है, कुछ तो कमाल करेंगे ना! तो ऐसी कमाल करके दिखाना। अच्छा। रिट्रीट हाउस के लिए मुबारक हो।

एशिया ग्रुप:- अच्छा यह क्या करेंगे? एशिया में ऐसे बहुत रत्न हैं जो ब्राह्मण परिवार के हैं लेकिन अभी तक छिपे हुए हैं। एशिया के कई भाग नई दुनिया में मिल जायेंगे, इसलिए आपकी धरनी एशिया की भाग्यवान है, तो उसमें से ऐसे विशेष रत्न निकालो, बापदादा चाहते हैं कि अभी आप जो ब्राह्मण आत्मायें हैं वह माइट बनें तथा माइक और बनें। आप माइट बन लाइट दो और वह लोग माइक बन भाषण करें, परिचय दें, अनुभव सुनावें, तो ऐसे एशिया में हैं जिन्हों को ढूढों और निमित्त बनाओ। तो आप लोग माइट बन जायेंगे और वह माइक बनेंगे। ठीक है? एशिया वालों को करना है ना? बहुत अच्छा, फिर इनाम देंगे कि पहला बड़े से बड़ा माइक किसने निकाला? एशिया निकालेगी, नम्बरवन जायेगी? हर एक सोचे नम्बरवन जाना है। बापदादा देखेंगे कौन बड़े से बड़ा माइक तैयार करता है। छोटे-छोटे तो कनेक्शन में हैं, लेकिन स्टेज पर आवें। माइक वह जो स्टेज पर बेधड़क बन भाषण करें, ऐसे माइक तैयार करो। ठीक है? तो कौन सा नम्बर लेना है? पहला नम्बर लेना। छोटे बच्चे भी हिम्मत वाले हैं, बहुत अच्छा।

अफ्रीका, साउथ अफ्रीका:- अफ्रीका में बहुत अच्छे-अच्छे रत्न हैं। सेवा करने में होशियार हैं ना। तो अभी क्या करेंगे? अफ्रीका में सबसे ज्यादा गोल्ड है ना! तो बापदादा के पास ऐसे गोल्डन स्टेज वाले रत्न ले आओ। जैसे स्थूल गोल्ड मशहूर है ऐसे अफ्रीका के रत्न हीरे भी वहाँ हैं, गोल्ड भी हैं, तो ऐसे रत्न सामने लाओ। कब लायेंगे, तारीख बताओ। अच्छा मार्च में ले आयेंगे? हाँ अफ्रीका वाले कमाल करके दिखाओ। कमाल करेंगे? बहुत अच्छा। रत्न बहुत अच्छे-अच्छे हैं। अभी मार्च तक देखेंगे फिर इनाम देंगे, ठीक है, पसन्द है?

रशिया:- रशिया वाले क्या कमाल करेंगे? जैसे रशिया में अभी स्वतन्त्रता हुई है ना। कम्युनिस्ट का राज्य नहीं है, स्वतन्त्र हैं तो ऐसे स्वतन्त्रता का झण्डा लहराओ जो रशिया में यह आवाज हो जाए कि सच्ची स्वतन्त्रता यहाँ से ही मिल सकती है। यह आवाज चारों ओर फैल जाए, धर्म के हिसाब से नहीं लेकिन सच्ची स्वतन्त्रता के हिसाब से। यह आवाज लहरायेंगे? रशिया वाले सभी को बहुत प्यारे लगते हैं। क्यों प्यारे लगते हैं? क्योंकि बाप भी भोलानाथ है ना, तो रशिया वाले भी भोले बहुत अच्छे हैं। भोलेभाले हैं लेकिन हैं तीखे, अन्दर होशियार हैं लेकिन सूरत से बिल्कुल भोले, प्यारे मीठे लगते हैं इसलिए सबका रशिया वालों से विशेष प्यार है, बहुत अच्छा। अभी स्वतन्त्रता का आवाज फैलाना। अच्छा।

इजराइल:- अभी नया-नया खुला है ना तो लाडले हो। जो छोटे होते हैं ना वह लाडले होते हैं और जो लाडले होते हैं वह सदा माँ बाप के समीप रहते हैं। उन्हों के ऊपर सदा माँ बाप की नजर रहती है इसलिए कमाल करके ही दिखानी है। प्लैन अच्छे बनाते हैं और सफलता मिलती ही है। थोड़े हैं लेकिन अच्छे हैं, हिम्मत अच्छी है। तो दूसरे वर्ष कमाल करके ग्रुप ले आना। ठीक है। अच्छा।

चिल्ड्रेन ग्रुप को सम्भालने वाले टीचर्स से:- अच्छा तैयार किया है। अच्छा दिल से उमंग-उत्साह से कार्य किया है। इसलिए जो कार्य किया है उसकी सफलता मिलनी ही है। ग्रुप अच्छा है।

ज्युरिस्ट मीटिंग में आये हुए भाई बहिनों से:- ज्युरिस्ट क्या करेंगे? (ला और लव का बैलेन्स रखेंगे, भारत को स्वर्ग बनायेंगे) वैसे भी ज्युरिस्ट बोलने में होशियार होते हैं। अच्छा बोला, हिम्मत के बोल बोले और ज्युरिस्ट का काम ही है - कमजोर केस को हिम्मत वाला बनाना। तो अच्छा हिम्मत दिखाई और सदा जो भी मर्यादायें हैं, लाज़ हैं उस पर चलने और चलाने का वायुमण्डल बनाते चलो। बाकी क्वालिटी अच्छी है। एक-एक बहुत कार्य कर सकते हैं, क्यों? आपके पास जो क्लायन्ट बनकर आते हैं वह उस समय आपको भगवान का रूप समझते हैं। आपमें फेथ होता है, ऐसे क्लायन्ट को आप

लोग बाप का बना सकते हो। तो वकील भी बढ़ते जायेंगे, जज भी बढ़ेंगे। अभी कोई ऐसा जज तैयार करो जो नजदीक वाला हो। और जज अपने अनुभव के आधार से बोले कि अगर भारत का कल्याण होना है, सत्य सिद्ध होना है तो यही है, यही है, यही है। ऐसा ग्रुप तैयार करो। ऐसा कोई बड़ा जज तैयार करो जो निर्भय होकर स्टेज पर बोले, सिद्ध करके बतावे कि यह सत्य क्यों है। ऐसी हिम्मत है ना? आपके बोलने से ही हिम्मत लग रही है। तो ऐसा करना। जिसको जो कहा है, वह इस वर्ष में लास्ट सीजन तक, मार्च की इन्ड तक तैयार करके लावे। पसन्द है? फारेन वालों को भी काम दिया है, यूथ को भी काम दिया है, जजेस को भी काम दिया है। अभी देखेंगे कौन करके आता है। तो आपका पहला नम्बर होगा ना? लेकिन ऐसा तैयार करके आओ जो पब्लिक में कहें, यहाँ कान्फ्रेन्स में कहना और बात है, वह तो यह धरनी ऐसी है, पब्लिक स्टेज पर कहे - ऐसा तैयार करना। (मधुबन की लता बहन, वकील से) यह वकील भी होशियार है, अच्छा काम कर रही है। शक्ति आगे आवे ठीक है। मुबारक हो, मुबारक हो। बहुत अच्छा।

टीचर्स बहिनों से:- ग्रुप तो बहुत बड़ा है। (७-८ सौ टीचर्स हैं) टीचर्स क्या करेंगी? इस वर्ष में टीचर्स इनाम लेना। किस बात में? स्वयं और सेन्टर निवासी और साथ में सर्व स्टूडेन्ट पूरे वर्ष में निर्विघ्न रहे, कोई भी विघ्न न स्वयं में आवे, न साथियों में आवे, न स्टूडेन्ट में आवे, ऐसी हिम्मत है तो हाथ उठाओ। पार्टी लेकर आये हो तो नाम तो नोट हैं। सौगातें तैयार रखना। इनाम तैयार रखना। देखेंगे कितने इनाम लेने के पात्र बनते हैं। तीन सर्टीफिकेट लेंगे। तीन सर्टीफिकेट - एक अपना स्वयं का सर्टीफिकेट, दूसरा साथियों का सर्टीफिकेट और तीसरा स्टूडेन्ट का हाँ या ना। बातों में नहीं निकालेंगे सिर्फ हाँ निर्विघ्न रहे, या नहीं रहे। कचहरी नहीं करेंगे, बातें नहीं निकालेंगे। तो तीन सर्टीफिकेट लेने वाले को इनाम मिलेगा। हाथ तो सभी ने उठाया, जिसने नहीं उठाया समझते हैं कोशिश करेंगे, पता नहीं होवे नहीं होवे, वह हाथ उठाओ। ऐसा कोई है? शर्म तो नहीं करते हो? अगर हिम्मत नहीं भी हो तो हिम्मत रखना, हिम्मत की मदद

जरूर मिलेगी। समझा। समझा। समझा? सब टीचर्स ने सुना? अच्छा है - टीचर्स को देखकर बापदादा खुश होते है - टीचर्स सेवा के साथी हैं इसलिए बापदादा को टीचर्स को देखकर खुशी होती है। बापदादा रिगार्ड भी रखते हैं क्योंकि बच्चे भी हैं, साथी भी हैं इसलिए विशेष मदद भी है। ठीक है ना।

मधुबन निवासी-आबू निवासी:- अच्छा ग्रुप है। देखो मधुबन वाले अगर सेवा में आगे नहीं होते तो इतनी आत्माओं को बाप से मिलन का भाग्य कैसे मिलता। इसलिए मधुबन वालों को सबसे बड़े ते बड़ी देन सबके दुआओं की मिलती है। दुआयें मिलती हैं? दुआयें महसूस करते हो? सिखलाते भी हो और निमित्त भी बनते हो। तो मधुबन वालों को बापदादा ब्राह्मणों के सेवा की छत्रछाया कहते हैं। मधुबन निवासियों के सेवा की छत्रछाया में अनेक आत्माओं का फ़ायदा हो जाता है। पुरुषार्थ में आगे बढ़ते रहते हैं। तो सभी का पुण्य मधुबन वालों को शेयर में मिलता रहता है। मधुबन वाले शेयर होल्डर हैं। बिना मेहनत के भी मिलता रहता है। सबके दिल की दुआयें बहुत अमूल्य चीज़ है। दिल से जिसको जितनी दुआयें मिलती हैं, वह दिल की दुआयें जमा होती हैं तो सहज पुरुषार्थ हो जाता है। सेवा का पुण्य अच्छा मिला है। यह सेवा का पुण्य सदा बढ़ाते रहना। कम नहीं करना, सदा बढ़ाते रहना। जैसे बाप जी हाजिर कहते हैं वैसे मधुबन निवासी बाप के समीप हैं, तो मधुबन निवासियों को सदा जी हाजिर और जी हजूर दोनों ही याद है और रहेगा।

दोनों याद है ना – हजूर भी याद है और जी हाजिर भी याद है। कोई भी बुलावे, तो हाँ हाजिर, हाँ हाजिर। ऐसे है? हाजिर हैं ना। ना ना तो नहीं करते हैं ना, हाँ-हाँ वाले हैं। हाँ जी, हाँ जी करके हजूर के आगे समीप आ गये हैं। और सबके लाडले बन गये हैं। किस श्रेष्ठ नज़र से मधुबन वालों को देखते हैं? बहुत लाडले हो गये हैं ना। जहाँ भी जायेंगे, मधुबन वाले आये हैं, मधुबन वाले आये हैं - यह सेवा का फल है। तो क्या याद है? जी हजूर और जी हाजिर। पक्का है ना? कभी भी ना ना नहीं। हाँ जी, हाँ जी...। बहुत अच्छा। बापदादा को मधुबन निवासियों से सदा प्यार है। सदा प्यारे हैं। अच्छा।

भारतवासी भाई बहिनों से अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

राजस्थान:-(सेवा की बहुत अच्छी ड्युटी सम्भाली है) राजस्थान ने सेवा का चांस अच्छा लिया भी और किया भी, इसलिए सेवा की मुबारक हो। ग्रुप बहुत अच्छा है, अभी एक दो को सहयोग देकर आगे बढ़ते चलो। ठीक है ना। अच्छा।

महाराष्ट्र ज़ोन:- महाराष्ट्र नाम ही है महा, तो महाराष्ट्र क्या महान कार्य करके दिखायेंगे? बापदादा ने आगे भी कहा है कि क्वान्टिटी तो बहुत अच्छी है, अभी महाराष्ट्र को ऐसी क्वालिटी तैयार करनी है, जो आवाज फैलाने में सहयोगी बन जाये। अभी महाराष्ट्र से कोई ऐसी विशेष आत्मा तैयार करो जो सारे महाराष्ट्र में उसके आवाज का प्रभाव हो और महाराष्ट्र में मेहनत वाले हैं, अच्छी हिम्मत वाले हैं। इसलिए सहज ऐसे सेवा करने से निकल आयेंगे। इस वर्ष सभी को, हर ज़ोन को ऐसा तैयार करके मार्च तक लाना है। मंजूर है तो हाथ हिलाओ। मार्च में माइक की सेरीमनी मनायेंगे। यह लण्डन का माइक, यह अमेरिका का माइक... यह भारत का, यह हर ज़ोन का, यह महाराष्ट्र का, यह आंध्रा का, सब ज़ोन का हो, फिर देखना क्या कमाल हो जाती है।

बाम्बे:- बाम्बे को ब्रह्मा बाबा नरदेसावर कहते हैं। इसका अर्थ है सदा सम्पन्न रहने वाला। तो बाम्बे वालों को क्या तैयार करना है? कोई ऐसे सेवा के निमित्त बनाओ जो अनेक छोटे-छोटे सेन्टर को भी बड़ा बना दें। बाम्बे में तो करते ही हो लेकिन ऐसा कोई नरदेसावर निकालो जो औरों का भी सहयोगी बनें, तब कहेंगे बाम्बे नरदेसावर है। ऐसे कोई व्यक्ति तैयार करो जो आवाज फैलाये कि सच्चा धन अगर है तो ब्रह्माकुमारियों के पास है। सच्चा धन क्या होता है, उसके उपर चैलेंज करके दिखावे कि सच्चा धन, अविनाशी धन किसको कहा जाता है। सहयोगी भी बनें और चैलेन्ज करके दिखावे तो सबकी आंखे खुल जाये कि अविनाशी धन कौन सा है। ऐसा मार्च तक निकालेंगे? अगर हाँ है तो हाथ उठाओ। हिम्मत नहीं हो तो ना कहो। हिम्मत रखो तो क्या नहीं हो सकता है। किसको भी टचिंग होती है तो सेकेण्ड ही लगता है। यह तो तीन मास

हैं तो देखेंगे नम्बरवन प्राइज़ कौन लेता है। बहुत बढ़िया प्राइज़ मिल रही है। इस बारी स्थूल प्राइज देंगे जो यादगार रहेगा। अच्छा।

आन्ध्र प्रदेश:- सब फंक्शन में बिजी हैं। थोड़े आये हैं, थोड़े भी बहुत कमाल कर सकते हैं। तो आन्ध्र प्रदेश भी कमाल कर सकता है क्योंकि आन्ध्र प्रदेश में भी गवर्मेन्ट एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट बहुत सहज कनेक्शन में आ सकते हैं। आन्ध्र प्रदेश अगर एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट में विशेष सेवा करें तो सफलता बहुत सहज मिल सकती है। आन्ध्र प्रदेश के जो मुख्य लोग हैं वह सहज सम्बन्ध-सम्पर्क में आ सकते हैं, यह आन्ध्र प्रदेश को वरदान है, इसलिए हिम्मत रखो तो सफलता सहज होगी। अच्छा।

दिल्ली और आगरा :- दिल्ली वालों का कार्य आदि से आरम्भ हुआ है। सेवा की आदि दिल्ली से हुई है, इसलिए बापदादा दिल्ली का नाम सदा वर्णन करते रहते हैं। दिल्ली वालों ने इनवेन्शन तो समय प्रति समय की है लेकिन अभी और भी नई नई इन्वेन्शन कर कोई नई सर्विस की रूपरेखा बनाने के निमित्त बनना है। दिल्ली का आवाज विश्व तक पहुँचता है। इसलिए दिल्ली का विशेष सेवा का नाम चारों ओर बाला हो जाता है। अभी कोई नया प्लान दिल्ली को प्रैक्टिकल में करके दिखाना है। माइक तो दिल्ली में बहुत हैं, सहयोगी हैं, समय पर सहयोग देते हैं लेकिन आवाज बुलन्द करना उसमें अभी उन सहयोगी आत्माओं को समीप लाना है। समय पर कार्य के निमित्त बनते हैं लेकिन आवाज बुलन्द करने के लिए सदा तैयार रहें, वो अभी कोई नई इन्वेन्शन कर उन्हों को सहयोगी से सदा सहयोगी बनाना है। दिल्ली में ऐसी हिम्मत है ना।

जगदीश भाई से :- आदि से सेवा बहुत की है। आदि से सेवा के निमित्त बने हो और इन्वेन्शन भी अच्छी-अच्छी की है। अभी देखो वर्गीकरण की रिजल्ट कितनी अच्छी है। इसलिए अभी फिर कोई नई इन्वेन्शन करनी है। सबका आपसे प्यार है। मुरली में नाम आता है ना तो सभी का अटेन्शन जाता है। अभी शरीर को जबरदस्ती नहीं चलाओ, अभी आराम से चलाओ। अभी यह नहीं सोचो यह करना ही है। नहीं। औरों को आपसमान बनाओ। मेले की शुरूआत

भी दिल्ली से ही शुरू हुई है, कान्फ्रेन्स भी हुई अभी नई इन्वेन्शन भी दिल्ली से शुरू हो। अच्छा।

यू.पी.:- लखनऊ में बहुत अच्छा मेला चल रहा है। जैसे अभी सारे यू.पी. के सम्बन्ध से कार्य किया है, वैसे अभी यू.पी. में गवर्मेन्ट की सेवा अच्छी हो सकती है। अगर सभी मिलकर यू.पी. में गवर्मेन्ट की सेवा करें तो वहाँ का आवाज चारों ओर फैल सकता है। ऐसी क्वालिटी यू.पी. में है जो सेवा में सहयोगी बन सकते हैं। अभी सभी बिजी हैं, अच्छा किया है। बापदादा खुश है और मुबारक दे रहे हैं। अनेक आत्माओं तक आवाज फैला है, ऐसे समय प्रति समय संगठन द्वारा आगे बढ़ते जायें, धरनी अच्छी है, सहज है, इसलिए आगे बढ़ाते चलो। अच्छा।

ईस्टर्न:- अच्छा ग्रुप आया है। सेवा की मुबारक तो बापदादा ने दे ही दी है। अभी आवाज निकालने में सर्व के सहयोग से बापदादा खुश है। ब्रह्मा बाप की प्रत्यक्षता का स्थान है। इसलिए जैसे ब्रह्मा बाप का आदि स्थान है ऐसे अभी सभी को नाम बाला करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी सर्व के सहयोग से नाम हुआ है, मेहनत अच्छी की है, सहयोग भी अच्छा दिया है, अभी ऐसे ही सहयोगी बन और आदि स्थान को मशहूर करते जाएं। कलकत्ता में बहुत अच्छे-अच्छे इन्डस्ट्रियल निकल सकते हैं। ऐसी सेवा करके कोई ऐसे निमित्त बनाओ जो अनेकों की सेवा में निमित्त बनें। अच्छा है, अभी हिम्मत अच्छी है, उमंग भी अच्छा है, रिजल्ट भी अच्छी है। आगे बढ़ते चलो, बढ़ते-बढ़ते मंजिल पर पहुंच ही जायेंगे। अच्छा।

पंजाब:- अच्छा है, पंजाब वालों ने भी जगह-जगह पर अच्छा नाम बाला किया है। पंजाब अभी सेवा में अच्छा आगे बढ़ रहा है। इसलिए पंजाब वालों को वा हरियाणा, हिमाचल वालों को सभी को सेवा में आगे बढ़ने की मुबारक हो। जो भी प्रोग्राम किये हैं, अच्छे सहयोग से और सफलता पूर्वक किये हैं, तो जैसे अभी सेवा में फास्ट जा रहे हैं ऐसे आगे भी फास्ट रहेंगे और सफलता को प्राप्त करना ही है। अच्छी रिजल्ट है, पंजाब वालों को मुबारक।

इन्दौर-भोपाल:- चाहे इन्दौर है, चाहे भोपाल है लेकिन हर एक अपने अनुसार सेवा में आगे तो बढ़ ही रहे हैं। बापदादा ने देखा है सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है और वृद्धि भी होती रहती है। अभी जैसे वृद्धि करते रहते हैं, वैसे ही चाहे भोपाल में, चाहे इन्दौर में, दोनों जगह ऐसा पावरफुल ग्रुप बनाओ जो सदा सेवा में और स्वउन्नति में एक्जैम्पुल बनें। दोनों तरफ ऐसा ग्रुप बनाओ जो एक्जैम्पुल बन और तरफ भी अपना अनुभव सुना सके। तो मध्यप्रदेश अनुभव सुनाने का ग्रुप तैयार करे। सेवा में तो हैं ही अच्छे और आगे भी करेंगे परन्तु ऐसा कोई ग्रुप का एक्जैम्पल बनाओ जो ब्राह्मणों की सेवा हो, जहाँ कुछ भी हो तो ऐसे ग्रुप का एक्जैम्पल सामने आवे। दोनों ही मध्य प्रदेश है ना। तो दोनों को ऐसी कोई तैयारी करनी चाहिए। सेवा के प्लैन तो अच्छे बनाते ही हैं। अभी ऐसा ग्रुप बन सकता है? तो मार्च में दोनों तरफ का ऐसा ग्रुप बाप के सामने लाना है। ठीक है? वैसे तो सभी तरफ ग्रुप बनाना है, लेकिन पहले आप लोग बनाओ। सभी ज़ोन में बनाना है, निमित्त पहला नम्बर आप बनो। सेवा में तो होशियार हैं ही। प्लैन भी अच्छे-अच्छे बनाते हैं। अच्छा।

गुजरात:- गुजरात ने सेवा का विहंग मार्ग तो दिखाया, बहुत अच्छा किया। अभी गुजरात को नवीनता क्या करनी है? सेवा तो कर ली, अच्छा किया। गुजरात में जगह-जगह पर वारिस क्वालिटी हैं, अभी गुजरात को वारिस क्वालिटी का ग्रुप तैयार करके लाना है। बापदादा को उम्मीद है कि गुजरात से वारिस क्वालिटी निकल सकती है। और है भी लेकिन उन्हों को संगठित रूप में बड़ों के सामने लाओ। ऐसे है ना? वारिस हैं? तो अभी ऐसा ग्रुप लाना। गुजरात एक वारिस क्वालिटी में एक्जैम्पल बनें। वारिस की भाषा तो समझते हैं ना - जो तन से, मन से, सहयोग से सबसे नम्बरवन हो और हर कार्य में हर समय एवररेडी हो - इसको कहा जाता है वारिस। जिस समय बुलावा आवे उस समय हाजिर हो जाये - इसको कहा जाता है वारिस क्वालिटी। हर समय जी हजूर हाजिर। हाजिर हो जाए, हर कार्य में नम्बर आगे आवे - इसको कहा जाता है वारिस। तो गुजरात से ऐसे वारिस निकालने हैं। अच्छा।

कर्नाटक:- अच्छा ग्रुप है। कर्नाटक वाले जितना ही भावना स्वरूप हैं उतना ही हर कार्य में सहयोगी भी बहुत अच्छे हैं। चाहे कोई भी कार्य हो लेकिन संख्या सहयोगी बन जाती है। इसलिए कनार्टक की धरनी सेवाधारी बहुत अच्छी है। कर्नाटक के वी.आई.पीज भी बहुत अच्छे भाववान होने के कारण सहयोग अच्छा देते हैं इसलिए कर्नाटक वालों को भी चारों ओर के वी.आई.पीज का ग्रुप तैयार करना चाहिए और ऐसे वी.आई.पीज हैं जो माइक भी बन सकते हैं परन्तु संगठित रूप में उन्हों को पालना चाहिए इसलिए कनार्टक वाले जो निमित्त हैं उन्हों को संगठित रूप में ऐसे वी.आई.पीज का ग्रुप तैयार करना चाहिए जो कहाँ भी सेवा के निमित्त बन सकते हैं। वी.आई.पी. की सेवा कर रहे हैं लेकिन मैदान पर लाना चाहिए वह संगठित रूप में कर सकते हो। तो अभी संगठित रूप में करना। अच्छा।

तामिलनाडु-केरला:- तामिलनाडु की विशेषता है जो निमित्त है (रोज़ी बहन) उसकी हिम्मत बहुत अच्छी है। और निमित्त वाले की हिम्मत होने के कारण चारों ओर स्टूडेन्ट में भी हिम्मत अच्छी है इसलिए हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही। बापदादा तामिलनाडु के सेवाधारियों को बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। आगे भी सेवा की नई-नई इन्वेन्शन करते रहना और आगे बढ़ते बढ़ाते रहना।

(१-१-९९ के शुभ प्रभात पर बापदादा ने सभी बच्चों को १२ बजे के बाद मुबारक दी)

चारों ओर के अति स्नेही समीप ब्राह्मण आत्माओं को नव युग के रचता का मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। यह घड़ी है विदाई और बधाई की। संगम है। पुराने वर्ष को विदाई, पुराने वर्ष के साथ-साथ पुरानी बातें, पुरानी समस्यायें, पुराने संस्कार सबको विदाई और नये उमंग-उत्साह सम्पन्न वर्ष को मुबारक के साथ बधाई भी है, इस वर्ष को सदा मेहनत मुक्त वर्ष मनाना है। इस वर्ष को सदा स्व और सर्व को निर्विघ्न भव के वरदान से मनाना है। इस वर्ष को सदा विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इस निश्चय और नशे को सदा हर कर्म करते भी इमर्ज रखने का वर्ष मनाना। इस वर्ष में हर एक को बापदादा और

दादियों द्वारा नम्बरवन जाने का इनाम वा गिफ्ट लेनी है, इसके लिए सभी विदेशी वा भारतवासियों को नम्बरवन का निश्चय रख आगे बढ़ना और बढ़ाना है। तो बहुत-बहुत यादप्यार सहित सब प्रकार की मन्सा से, वाचा से, सब रूप से बापदादा पदमापदम गुणा मुबारक दे रहे हैं। अभी एक सेकण्ड सभी पावरफुल संकल्प से, दृढ़ता से पुराने वस्तुओं को, पुराने वर्ष को, पुरानी बातों को सदा के लिए विदाई दो। एक सेकण्ड सभी - दृढ़ता सफलता है, इस दृढ़ संकल्प में स्थित हो जाओ